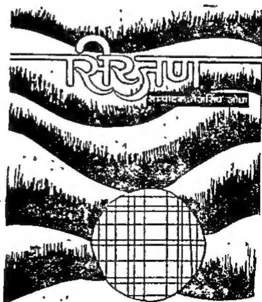
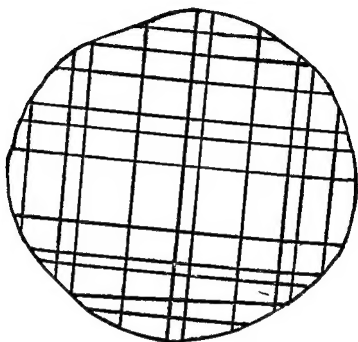
शिक्षक दिवस
1981





शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए
चिन्मय प्रकाशन
चौड़ा रास्ता, जयपुर 302003

शिक्षक दिवस के अवसर पर
शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए

प्रकाशक : चिन्मय प्रकाशन, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
मुद्रक : जयपुर मान प्रिन्टर्स, चौड़ा रास्ता, जयपुर-302003
आवरण : पारस मंसाली
सन् : 1981
मूल्य : 9-60

SIRJAN (Rajasthani Vividha) Edited by : Tej Singh Jodha
Price : 9 60

आमुख

राजस्थान के शिक्षक साहित्यकारों की साहित्यिक रचनाओं को पुस्तकाकार प्रकाशित करके आज के दिन पाठकों के हाथों में सौंपते हुए मुझे अत्यन्त खुशी है।

खुशी इस बात की भी है मुझे, कि हमारा अध्यापक-वर्ग, स्वाध्याय और चिंतन की राहों पर है, तथा साहित्य के सृजन एवं संवर्धन में साधक की भाँति तत्परता से लगा है। यही नहीं साहित्य की गतिशील धारा के साथ नित नये सृजन के प्रतिमान भी स्थापित कर रहा है वह—वस्तु, शिल्प एवं अभिव्यक्ति के स्तरों पर।

जिस तरह से अतीत में शिक्षक-साहित्यकारों ने साहित्य की श्रीवृद्धि में योगदान किया था, चाहे काव्य-शास्त्र के सिद्धान्तों की रचना का कर्म हो या साहित्यालोचन के मानदण्ड निर्धारण की जरूरत, उस काल के आचार्यों व शिक्षकों ने उक्त विषयों में अपने गहन वैज्ञानिक चिन्तन की छाप अंकित की थी तथा काव्य, नाट्य, निबन्ध, गल्प आदि विधाओं में कालजयी कृतियां दी थीं, वैसे ही संतोष के साथ महज इतना तो स्वीकार किया जा सकता है कि राज्य के हमारे ये शिक्षक-साहित्यकार एक संकल्प के साथ साहित्य सृजन से संपृक्त हैं। रही बात शाश्वत मूल्य के साहित्य की—तो इसका मूल्यांकन करने वाले हम कौन हैं, आने वाली पीढ़ियों को देखना है वह सब।

शिक्षा विभाग ने सन् 1967 में 'शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना' प्रचारित करके शिक्षकों से साहित्य साधना में तत्पर रहने का जो आग्रह किया था, वह विगत 15 वर्षों से अनवरत-अबाध चल रहा है। विभाग की इस योजना की न सिर्फ स्तरीय पत्र-पत्रिकाओं में प्रशंसा हुई है अपितु अन्य

राज्यों ने भी सराहना की है तथा उन्होंने अपने यहां भी ऐसे प्रयास प्रारम्भ किये हैं।

इस वर्ष के पांच प्रकाशन हैं :—

(1) अंधेरों का हिसाब (कविता) संपा : सर्वेश्वर दयाल सक्सेना,
(2) अपने से परे (कहानी) संपा : मन्नू भंडारी,
(3) वंदेमातरम् (निबंध) संपा : विवेकीराय,
(4) एक दुनिया बच्चों की (बाल साहित्य) : संपा : पुष्पा भारती,
(5) सिरजण (राजस्थानी) संपा : तेज सिंघ जोधा

प्रस्तुत संकलन के रचनाकारों को मेरी बधाई तथा यशस्वी संपादक श्री तेज सिंघ जोधा के प्रति मेरा आभार, कि उन्होंने अतिरिक्त श्रम करके शिक्षकों की ढेर सारी रचनाओं को देखा-परखा तथा उसमें से श्रेष्ठ व संभावनायुक्त को संकलन में स्थान दिया। साथ ही प्रकाशकों का भी मैं आभारी हूँ जिन्होंने तत्परता से ये पुस्तकें यथासमय प्रकाशित करके हमें सहयोग दिया।

शिक्षक दिवस, 1981

—अशोक कुमार पाण्डे
निदेशक,
प्राथ. एवं माध्य. शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

बतळावण

इण बार सिक्षा विभाग री सालीणी राजस्थांनी पोथी रै सपादन रौ मौसर म्हनै मिळियौ, अर इण मिस आप सगळा राजस्थांनी रा अध्यापक लिखारां नै भेकठ बतळावा रौ मौकौ। यूं आप में सूं केई लिखारा नै म्हे पैला सूं ई जाणूं। राजस्थांनी पत्र-पत्रिकावा रौ संपादन करतां आप में सूं केई लिखारां री रचनावां रै आमी-सामी होवा री जोग-संजोग म्हनै पैला ई केई वार मिळियौ।

म्हे इण बात नै मानूं, अर म्है ई काई राजस्थांनी साहित रै कांम में लागोड़ा भेकूभेक आदमी इण बात नै आछी तरिया मांनै, के आप अध्यापक लिखारा, राजस्थांनी नै केई भात सूं फळिया। जे गिणती रै हिसाब सूं ई देखो, तौ आपनै टाळियां पछै राजस्थांनी मे की न काई बचै, लिखारा ई कठै, फगत आंगळियां आधै गिणा जितराक ई नांव रैय जावै। अर साहितिक मानता रै नपीणै ई आप किणी सूं घाट कोनी उतरो। केन्द्रीय साहित अकादमी सूं लगा'र राजस्थान साहित अकादमी तांई रा सगळा पुरस्कारा मे सदा आपरी उछळपांती रैवै। करतां नी करतां आज री घड़ी आप लोगां में पांच-सातेक नाव तौ पकायत ई अैड़ा, जिकां री साहितिक रैठ-पैठ अर मानतां में किणी भात रौ रौळी-दावी कोनी। जे राजस्थानी साहितकारां री पैली पांत रा नाव गिणावणा होवै, तौ वां मे अन्नाराम सुदामा, नरसिंघ राजपुरोहित, कल्याणसिंघ राजावत अर सांवर दइया इत्याद रा नाव तौ पैल चोट ई लिया जाय सकै, जिका के आप लोगां मे सूं है।

इण सगळी बात रौ अरथ औ, के आज री बिळियां आप अध्यापक-लिखारा राजस्थांनी री सावठी पूंजी हो, अर राजस्थानी आप सूं घणी आस-

उम्मीद राखै। इण सांच री मरम ग्रेकूग्रेक जणो ग्राप ग्रापरै जीव में जतन सूं लाडां-कोडां संभाळ'र राखो।

ग्राई साल शिक्षा विभाग ग्राप लोगां री रचनावां री पोथी-रूप काढ़ै। उण पोथी-रूप नैं ग्राप ई देखता-परता होस्यो। कितरी ग्राछी तो छपाई ग्रर कितरो नांमी सिणगार सानोसान पोथी रो! ग्रेकर तो देख्यां ई जीव धापै। वारै सूं बुलायोड़ा संपादक फेर न्यारा। ग्राप खुद ई मानस्यो के विभाग तो खुद कानी सूं किणीं बात री घाटो राखै ग्राय कोनी, रचनावांस तो लावै कठा सूं, वै तो ग्राप ई भेजसो, जैड़ी होसी।

लारला तीन-च्यार बरसां री पोथ्यां ग्राप देखी व्हैला। ग्रेक खास ढाळै री ग्रेकरसता वां मे लागै। कीं लेखक इण बात नैं जाणगा के ग्राई साल वांरी कथावां ई छपसी, कीं कवितावां री ग्रंदाज कर लीधो, कीं लिखारां नैं रेखा-चितरांम री सळ लाधगो, बचियोड़ी विधावां री बांट-चूंट ई सगळा ग्राप ग्रापरै मनाग्याना करली। ग्रब संपादक कनै करवा नै रै ई कांई गो? वो तो परवस ई व्हैगो। ग्रापरै नचायो ई नाचसी। क्यूं के न्यारी न्यारी विधावां रै पेटै ग्रेक खास किसम री मोनोपोली ग्रर बांट-चूंट तो पैलाई व्हैगी, सो वां वां विधावां में तो ग्रापरी भेजियोड़ी रचनावा ई छपसी, भलांई उगणीस भेजो ग्रर भलांई इक्कीस। ग्रर जद छपणी इण भांत पैला सूं ई तै व्हैगो, तो इक्कीस भेजवा री लाचारी ई कुणसी?

ग्रां पोथियां री ग्रेकरसता कीकर तूटै, ग्रर ग्रै पोथियां रीत री रायतो व्हैय'र ई नीं रैय जावै, इणरो जतन विभाग नैं ई करणो पड़सी, ग्रर ग्रापनैं ई। क्यूं के खतरी तो ग्रोळूं-दोळूं है, ग्रर उणरो लखाव म्हनैं साफ-साफ होवै। ग्रापां सगळां मे ई स्थितिसीलता कीं बेगी ग्रावै, ग्रर ग्रापां जड़ होवतां जेज कोनी करां।

विभाग नैं तो म्हैं यो सुभाव देस्यूं के वो संपादक नैं ग्रेन वगत माथै नीं चेताय'र काफी दिनां पैली सूं ई साथै लेय लेवै, लिखारां नैं ई उणरै नांव री पती पैलां सूं ई पटक देवै, ग्रर पछै संपादक जिण भांत इण कांम नैं करवो चावै, उण में संपादक री पूरी सहयोग राखै। दूजी भासावां मे तो व्हो नीं व्हो, राजस्थांनी जैडी भासा में तो इण भांत काम सूंप्यां ई ज्यादा ग्ररथाऊ नतीजा ग्राय सकै। इण सूं विभाग री परेशानी तो जरूर वधसी,

पण पूरी प्रक्रिया में साथै होयां संपादक नै ई कांम करवा री आणंद आसी, लेखकां री मनोबळ ई वधसी, अर इण सिक्षक दिवस योजना री पोथी रो रूप ई सालोसाल सवायो व्हैतो जासी।

लिखारां सूं, खासकर वां लिखारां सूं जिका अध्यापक है, अर राजस्थानी रा मानीता साहितकार बाजै, आ अरदास करस्यूं, कै वै किणीं वहम या लापरवाही री वजह सूं इण योजना री पोथियां में छपणो फगत अेक औपचारिक सो कांम नीं मानै, अर आपरो नवै सूं नवौ अर वढ़िया सूं वढ़िया सिरजण आई साल आ पोथियां नै सूंपै। जदई आं पोथियां री साख वदसी, अर आप जैड़ा मानीता लिखारा रै विभाग में होवण रो फायदो विभाग नै, अर विभाग रा दूजा नवा लिखारां नै मिळसी।

इण वार जिकी रचनावां म्हारै कनै संपादन सारू आई, वां में सूं जरूर कीं रचनावां चरचा-जैड़ी लागै, अर म्हैं अवस कर वाई रचनावां री चरचा अठै करस्यूं।

सरूपोत में कथावां नै लो। सवाई सिंघ सेखावत री 'कूंपळ' इण पोथी री आछी कथा है। उण नै कथावां रै पेटै इण वार री उपलब्धि कैय सकां। जोध-जवांन व्हैती करसै री बेटी नै जद व्यांवती गाय री सार-संभाळ करणी पड़ जावै, तो गाय रै व्यांवण री वा पूरी घटणा अेक भविस रो संकेत देवती थकी जांणै उणी रै मावौमाव घटै। उण कंवारी कन्या री मनगत मांयै आवता भांत-भांत रा रंग, अर वठी व्यांवण मत्तै आयोड़ी गाय री पीड़ रा भांवळियां भरता दरसाव, कथा में अेकमेकसा होयोड़ा लखावै। कथा-विकास रै साथै-साथै पाठक उण लड़की नै लुगाई वणतां देखै, अर कथा निवड़तां-निवड़तां जच्चा होवण री सपनौ उण लड़की री कूख में कुळमुळावण लागै। अर उण लड़की रो मन व्है, जाणै अवार ई जाय'र मानै पूछै— "मावड़ी थूं म्हनै कद परणासी ?" अर इण भांत औचक ई वा कथा उण लड़की रै मां वणवा सूं जुड़ियै थकै परणीजवा रै कोड अर लाज में लुक'र निवड़ जावै—अेक ठावो असर छोडती थकी।

दूजी भली कथावां में सांवर दइया री 'सजा' अर मुरलीधर सरमा 'विमल' री 'मायड़ मन' री नांव आवै। 'सजा' री कथा अध्यापकां रै जीवण

नै ले'र चालै । प्रमोसन होयां जद किणी अध्यापक नै नगर छोड'र गांवड़िया-गावां मे जावणो पड़ जावै, तो कीकर वो प्रमोसन उणरै वास्तै सजा होय जावै, इणरो बखाण आ कथा करै । इणरै अलावा अध्यापक रै जीवण में कितरी निरासा, कितरो फालतूपणो अर कितरी कम उम्मीदां रैगी, आं सब रो दबियो-दबियो जिकर ई इण आखी कथा में सांचरियोड़ो लागै । 'मायड़-मन' कथा इण मैंधै-मैंधै सांच नैं दरसावै, के मायड़ रो मन तो सेवट मायड रो ई मन व्है । कितरोई क्यूं नीं व्हो,उणरै हाथां बेटै रो नुकसाण तो हरगिज ई कोनी होवै । इण कथा मे वडो बेटो मांनै कूट'र घर बारै काढ़ देवै । सरूपोत में तो दूजा घर वाळां रै साथै-साथै मां रै मन में ई रीस होवै, के बेटै नै सजा मिलणी चाहिजै, पण सेवट बेटै रै खिलाफ अदालत अर पुलिस री कारवाई करती वा तैक जावै । बाकी सगळी वातां नैं तो कथाकार आछी तरियां विगताय दी, पण जे मा रै मन में आयोड़ै इण औचक बदलाव नैं ई कीं खटकैदार तरीकै सूं लातो, तो कथा री खबसूरती बध जावती । औ बदलाव कथा में हुकनाक अर अकारण सो अयोड़ो लागै, जद के औ ई कथा रो मरम हो ।

नरसिंघ राजपुरोहित क्यूं के राजस्थानी रा पुराणा अर टाळवा कथाकार है, सो वैं आपरी 'बोळाऊ' कथा नै निभाय तो परी ळीधी, पण इण कथा नै वांरी टाळवी कथा नी कैय सका ।

कथावां रै पछै निबंध अर रेखा-चितरामा री जिकर करस्यूं । त्रिलोक गोयल री 'लॉग के कैबेला' आपनै हास्य अर व्यंग री आछो निबंध लागसी । मास्टर रामसरूप जी मे हैडमास्टर होयां पछै कांई कांई बीती, इणरो मजैदार जिकर आप पढ़स्यो । पांवड़ै-पांवड़ै 'लॉग के कैबेला रो डर' । सावचेती री कागलो कदै हैडमास्टर जी में बड़'र बोलै, तो कदै हैडमास्टरणी जी में । दूजा निबंधां में अमोलकचन्द जांगिड री 'डर' निबंध ई आपनै पसंद आसी, खासकर भासा रै तालकै । रेखा-चितरामा रै सीगै रामनिवास सोनी री 'पोकर गरू री वातां' अर दिलीपसिंघ चौहांण री 'डूंगरींग जी बांका' पाठकां नैं मन लगायो राखवा री खासो सामान देसी ।

अब कवितावां री चरचा लो । म्हारै कनै पूगी सामग्री में गद्य-विधावां करता कवितावां ई बेसी ही । इण सूं अंदाज व्हियो के अध्यापक-लिखारा में ई कविता लिखवा री चरसो घणो । ठेट दूहा सूं लगा'र गीत, गजल अर

जिणनै नवी कविता कवै, उण तकात री, सब भांतरी रचनावां म्हारै सांमी आई। कीं कवी घयस ई ध्यान खींचै। भगवतीलाल व्यास, स्यामसुंदर भारती, रघुनन्दन त्रिवेदी, भागीरथ सिंघ भाग्य, सिव मृदुल, कल्याणसिंघ राजावत अर रामेस्वर दयाल श्रीमाळी रा नांव अैड़ा कवियां में लेवां जैड़ा। इणवार म्हैं रेडियो रूपक रै आंटे ई अेक कविता नाटक दियो—कल्याण सिंघ राजावत री 'नुगरो होग्यो नेह'; अवस ई औ नाटक आपनै दाय आसी।

दूजी कीं विधावां नै इणवार, रचनावां आछी नी लागवा म्हैं टाळ दी। अेक उपन्यास ई आयो हो, रामनिवास सरमा रो 'माभळ', अर हो ई आछो, पण पेजां री सांकड़ेलो जांण वरणनै छोड देवणो पड़ियो। इण थाल री ध्यान ई म्हैं राख्यो के बेसी सूं बेसी लिखारां इण में रवै। इण वास्तै जिका लिखारां री अेक सूं बेसी विधावां में रचनावां आई, वांनै ई रचनावां आछी होता थकां ई घणकराक अेकई विधा रै सीगै लिया।

आ तो म्ही पोथी पेटै रचनावां री चरचा। अब म्हैं कीं दूजी बातां री चरचा ई आपरै सांमी करस्यूं।

सबसूं पैला तो भासा री चरचा।

आप-म्हे राजस्थांनी रा लिखारा तो व्हैग्या। राजस्थांनी में बकायदा लिखणो सरू कर ई दियो। अब म्हैं आपनै कैऊं के आपां भासा सीखणी सरू करदां। बोल चाल री राजस्थांनी सूं आपां रो थाको घणा दिन कोनी थिकसी। जे लेखक होवण री लांबी हर राखस्यां, तो आपांनै भासा सीखवा रा दूजा मारग ई सोधणा पड़सी। मांन लीधो के आपांनै स्कूलां अर कॉलेजां में कायदै सूं राजस्थांनी सीखवा रो मौको कोनी मिळियो, पण औ ओळावो कितराक दिन लेस्यां, अर लेखक होयां लेवण ई कुण देसी? अैड़ो ओळावो लेता भूंडा तो लागस्यां? लेखक होवण री तो आपां विचारी हां, औ तो आपांरो गोदम है के भासा नै कठै-कठै सूं वपरावां अर सीखां, दूजां नै इण सूं कांई तल्लो-मल्लो?

को मारग म्हनै सूझै, आपनै ई सूझता होसी।

आं वरसां में राजस्थांनी रो जूनो साहित खासो छपियो, लोक साहित ई निरो मुंडागै आयो, ओळ-दोळूं केई लिखारा ई राजस्थांनी लिखै, अर

वांरी पोथ्यां ई सालोसाल छपै, ग्रेकर सी तो ग्रापां घ्यांन देवां तो राजस्थांनी में छपियोड़ी पोथ्यां रो ई घाटो कोनी । वांनै ई बांच लेस्या, तो घणी की निस्तार व्है जासी । ग्रापां री भासा में उरळाई ग्रर समझदारी ग्रासी ।

ग्राप तो ग्रध्यापक हो, खुदई इण बात नै ग्राछी तरियां जांणो के भासा तो सीखियां सूं ग्रावै, ग्रर उणनै थोड़ी-घणी कमावणी ई पड़ै । जिण भांत करसो खेत कमावै, उणी भांत लिखारो भासा कमावै । भासा ई लिखारै री सै सूं मोटी पूंजी व्है, ग्रर ग्राप जांणो के ग्रोछी पूंजी धणीनै मार न्हाखै, ग्रोछी पूंजी सूं कुणसा वौपार व्है ?

इण वास्तै म्हे तो ग्रापनै इतरो ई कहसूं ग्रर बार-बार कहसूं के ग्रेक वळा तो ध्यारूं मेर सूं भासा नै जुटाग्रो, भांत-भांत सूं सीखो, भेळी करो ग्रर कमावो । भासा सीखियां ग्रर कमायां बिना कठैई ठोई नीं है, ग्रापां लेखक होवण रो बिरथाई बोझ घीसांला । यूं बरस गाळवा में की सार कोनी ।

भासा रै पछै ग्रेक दूजी वात ।

जे ग्रापां राजस्थानी रा लेखक हां, के राजस्थांनी रा लेखक होवण रो मन मे विचार राखां, तो इण बात नै नीकां-नीकां समझ ला, के राजस्थांन रै तालकै जिण किणीं भासा में जितरो की जाणवा नै मिळै, वो सब ग्रापां रै कांम रो है । राजस्थांन रो मिनख, राजस्थांन रो समाज, राजस्थांन रो इतिहास, राजस्थांन री भूगोल, राजस्थांन री संस्क्रती ग्रर राजस्थान रो जीवण, ग्रेक ई चीज ग्रापा री ग्रांख सूं छूटी नीं चाहिजै । जितरा-जितरा ग्रापां ग्रा सगळी चीजां सूं जुडस्यां, उतरो-उतरो ई ग्रापां री लिखाई में गाढ ग्रासी जासी, ग्रर ग्रागां ग्रावण ग्राळै वरसां ग्राछी तरियां पागरस्यां ।

भासा निरेवळी चीज नी व्है, किणीं खास कौम, समाज, इतिहास, भूगोल, ग्रर संस्क्रती में उणरी जड़ां व्है, ग्रर यां सबसूं खाद-पांणी लियां ई वा पनपै । ग्रापां स्कूलां-कॉलेजां मे जितरो राजस्थांन बांच लियो, उतरो ई पूरमपूर नीं है, नो पढ़िया-गढ़िया जितरो दीसै, उण सूं ई ग्रापां रो कांम चालै ।

अेक सावतै राजस्थान नै जाणबा-चीन्हबा, अर उणसूं जुड़बा री गाढ़ी मेघळ आपां नै करणी पड़सी। वो राजस्थान हाथ-थमूं होयां ई आपां री कलम में पांण आसी।

म्हूं जाणूं कै जैड़ा छोटा-छोटा गांवड़ियां में आप बिराजो, वठै पोथियां अर पत्रिकावां री मरणी पूग नीं है। पण तो ई आपनै थां तांई पूगणौ पड़सी। कींकर पूगसो, आ तो आप जाणो, बाकी पूगियां बिनां सराव नीं है, जे लेखक हो, तो भलांई किणीं नै पूछ लीजो।

राजस्थानी री पोथ्यां अर पत्रिकावां तो आपनै सासतो बांचणी चाहिजै ई, दूजी भासावां रै साहित में ई आज री वेळा कैड़ो काई लिखीजै, इणरी जाणकारी ई आपनै बरोबर रैवणी चाहिजै। नींतर पढ़ाई रै दिनां स्कूलां-कॉलेजां री पढ़ेती पोथ्यां में जिको साहित पढ़ियो होसी, वोई आपरी पूठ में कांम करसी अर आप उणी री बंधोकड़ी में बंधियोड़ा रैस्यो। अर पढ़ेती-पोथ्यां में तो आप खुद ई जाणो, आपरी ऊमर ढळियां पछै ई साहित पूगै।

पछेतां ई पछेतां री बातां फेर कहस्यूं।

इण बगत राजस्थानी भासा रा जितरा कांम है, वै राजस्थानी में सिरजण रा ई कांम है। यां नै इणीं भांत समझणा चाहिजै। इण बगत राजस्थानी री जितरी भांत भांत री बेगार आपां करस्यां, उतरो ई आपां रो राजस्थानी सूं जुड़ाव बधसी, आपां राजस्थानी सूं अेकजीव होस्यां, अर आपां मे सिरजण री बेसी सूं बेसी खिमता आसी। इण बगत राजस्थानी रै प्रचार-प्रसार अर उणरी संवैधानिक मानता धुराधुर रा सगळा कांम, सिरजण रा ई कांम है। आं सगळा मोरचा माथै संभियां ई आपां सूं सिरजण पार पड़सी। आछी तरियां जाणलो कै इण बगत राजस्थानी मे सिरजणाऊ लिखाई रो काम, अकेलो कांम नीं है, वो आं सब कामां सूं जुड़ियो थको है।

आप जठै कठै ई हो, राजस्थानी रै वास्तै अेक सावती सावचेती अर संकळप अंगेजलो।

आप जठै देखो, उणरै ओळू-दोळू लोक साहित रो तो घाटो कोनी, उणनै ई भेळो करो, लोककथावां, लोकगीत, लोक विरासत, ओखाणां, अर दूजो ई कितरो कांई ? इणसूं आपरी भासा नै संस्कार मिळसी अर संवेदना नै धार । इण मारग निकळस्यो तो मतो मतै ई जांच पड़िया जासी के अँन आपरै आसै-पासै ई जोड़-जुड़ाव अर जाणवा नै कितरो कांई पड़ियो ?

अब राजस्थांनी में लिखणो सरु कर ई दियो, तो होळै होळै राजस्थांनी लेखक होवण रा सगळा जोखम अर जरूरतां समझसो ।

अर अंत पंत म्हैं म्हारी बात निवेड़तां आई कामना करस्यूं के सिक्षा विभाग री इण सालीणी पोथी योजना मे राजस्थांनी नैं अेक सूं बेसी पोथियां री पांती मिळै, जिण सूं के ज्यादा सूं ज्यादा अध्यापक-लिखारां नैं राजस्थांनी में लिखवा अर छपवा रो मोको हाथै आवै । अर आ कामना ई म्हारी रैसी के इण योजना री पोथियां निदराईजै नीं, आपरी धार बरोबर बणायोड़ी राखै, अर राजस्थानी साहित री दुनियां में ई आं री अेक ठावकी सिद्धांण कायम होवै । सब अध्यापक-लिखारां नैं तो चाहिजै ई के आं सूं लाडा-कोडा जुड़ै ।

तेजसिंघ जोधा

जलते दीप भवन,
जालोरी गेट,
जोधपुर

विगत

☐

कूंपळ

□ सवाई सिंघ सेखावत

"म्हे बाई सुण जीयां ईं खुर श्राय जावै, यूं म्हनै बोल दीजै"—बापू कह्यौ, श्रर श्रापरी गुड़गुड़ी लेय'र पोळी कानी टुरग्यौ।

दाखां श्रेकर पोळी सूं निकळता बापू री पीठ तकी, पछै उडती-सी निजरां गाय कानी झांक'र धम्म देती सी पीढ़ै मार्थ बैठगी। घणी देर सूं ऊभां-ऊभां वीं री टांगा दूखण लागी ही।

गाय बुरी तरां छटपटावै। कदै बैठै। कदै ऊठै। वी नै चैन नीं पड़ै। वा बरावर ठांण में चक्कर काटै। डगमग कांपती टागां सूं लड़खड़ा'र बैठण री जुगत करै, पण तद ई दरद री तीखौ हिलोरौ वीं नै बुरी भांत तड़फड़ाय जावै। श्रर वा फेरूं ठांण में चक्कर लगाबा लाग जावै। गाय श्रेक ठौड़ टिक नीं पावै ही। पीड़ स्यात बेसी ई होवण लागगी ही।

दाखां फेरूं श्रेकर गाय कानी देख्यौ। गाय ठांण में पसर'र बैठी ही। गौर सूं देख्यां ईयां लागै जांणै वीं रै हूंकणी लाग री व्है। ऊपर-नीचै होवतौ पेट। हळवै-हळवै धूजतो सारो डील। आंख्यां झांकती तीखी पीड़।

चाणचक गाय श्रागलै पगां जोर देय'र ऊठण री जुगत करी। पण लारला पग संभळ कोनी सक्या। वीरी डील धूज'र धड़ाम सूं भींत में जाय'र बाज्यौ—'डांऽऽ' दाखा बैगी सी लपक'र गाय रै नैड़ै गई। ठा नी गाय रै साचौसांच ई लागी ही। बांयौ पसवाड़ौ तेज रगड़क सूं छुलगो। लाल खून रिमझै हो। रगड़क सूं छुल्या पसवाड़ा नैं देखतां पाण दाखा गुमसुम-सी ऊभी रैगी। मन कियां-किया ई होवण लागौ, तौ वा पाछी श्राय'र पीढ़ै मार्थ बैठगी।

पोळी सूं बारै दोय आदमी बतळावै हा। वांरी बतळावण बापू री गुड़गुड़ी रै स्हारै डूबै-उतरावै ही। पोळी कानी कान लगा'र दाखां घणी जुगत करी के दूजो आदमी कुण है, अर बात किणरै बावत है। पण साफ की नी पल्लै पड़ियो। "हुवै कोई""म्हनै कांई"—वा हार'र मन में कह्यो। गाय अब ताईं ठाण में चक्कर लगावै ही। वीनै पल-घड़ी री ई चैन नी। सारो ठांण गाय रा खुरां सूं खूंदीज'र ओपरो-ओपरो लागै हो।

"मां व्हेती तो वी नै क्यूं बैठणो पड़तो। मां मतैई सैं की संभाळ लेती।"—दाखां आपरै मन मे विचार करै—"मां व्हेती तो वा खुलै खाळां कैय देती के देख मावड़ी और क्यूं ई कराय सकै, पण आपणा सूं ओ तरसाव नीं देख्यो जावै। निजरां फेर गाय कानी गई। गाय सूनी-सूनी अर निढ़ाल-सी बैठी ही। वा घणी उदास निजर आवै ही। डील री रूंआळी छितरी-छितरी, अर रंग काळो-स्याह पड़गो हो।

"देख थूं आज घास री टाळ कर दै। गाय आज ढीली-ढीली लागै है। स्यात आज ई ब्यावै"—मां नै घास तांई जाती देख'र बापू कह्यो हो। पण वा किण री मानै। फेरूं ई नी ठैरी। दाखां रै मन मा तांईं रीस री अेक हिलकोरो उठ्यो—"जे आज नी जाती, तो कांई बिगड़ जातो।"

गाय ठांण रै बीचूं बीच ऊभी होय'र लारलै पगां झुकी। थोड़ी-सो पोठो करियो। पण पोठो तळै पड़ै इण सूं पैला ई वा तड़फ'र दूजी कानै चलीगी। वी री लारली टागां गोबर सूं संडगी ही। खिणेक ढब'र गाय ठांण नै सूंघ्यो, पछै अेक चक्कर लगा'र फटाक देती री बैठगी। मूंडो धरती माथै टेक'र वा जोर-जोर सूं सांसां छोडै। आंख्यां दरद सूं फाटी पड़ै। लारलै हिस्सै में अेक धोळो-धोळो फूंकलो-सो चिळक्यो। दाखा जोर सूं बापू नै हेलो पाड़ बाळो ही के गाय झप देती री ऊभी होय'र भींत कानी चलीगी। गाय री तळमछ अर निमळी हालत देख'र वीरी आंख्यां में आंसू आयगा। ठा नी क्यूं वीं नै ईयां लागै जाणै ओ सैं क्यूं गाय रै नी होय'र वीं रै आपरै होवतो व्है।

धग धग धुजती देही अर इतरी पीड। अेक जीव रै जलम सूं मायड़ इतरी दुखी होवै। च्च च्च च्च च्च दुनिया सांच ई कैवे के बाझड़ी कांई जाणै जापै री पीड़। वीं रै चेतै स्याल आयो, लुगायां रै ई जद टावर होवतो व्हैला वै ई इतरो ई दुख पावती होसी। अर हां पारां जकै दिन कैवै ही के इण खातर ई ब्याव होवै।

वीं री आंख्यां अतीत डोलग्यो। पर री तो बात है। सूंदरपरा रा धन जी चौधरी आया हा। वी रै ई ब्याव रो जिकर हो। वा उसारै री भीत री

श्रोट होय'र सैं क्यूं सुणैं ही। बापू चौधरी री बात मान ली ही। वींयां हुंकारो तो मां ई भर दियो, पण वा कह्यो, श्रोर सैं क्यूं तो ठीक है, पण म्हैं·छोरो म्हारी श्रांख्यां सूं देखबो चाऊं। म्हारी चांद सी बेटी तांई छैल गबरू जवांन होवणो चाहिजै। दाखा लाजा मरती भाग'र कोठै में बड़गी। गुलाबी सरम श्रोढ्यां वा ठा नीं कत्ता देर काच में श्रापरो मूंडौ देखती री।

'डाऽ ऽ'—दाखा रै श्रेक भटको सो लाग्यो। धरती माथै पडी गाय पगा रा फटकारा मारती 'डां-डा' करै ही। "बापू"—जोर सूं हेलो मार्‌यो। गाय बुरी श्रार छटपटावै ही। बापू लपक'र भीतर श्रायो। हाथ री गुड़गुडी श्रेकानी गेर वो गाय रो पेट सहळावा लागो। गाय इब ई पग पीट-पीट'र जोर-जोर सूं 'डां-डा' करै ही। गाय री हालत देख'र दाखां री श्रांख्यां श्रांसू श्रायगा।

चाणचका वीं नै ख्याल श्रायो श्रो""ह""तो ब्याव रै पछै वीं री श्रापरी श्रा ई हालत होसी। वा श्रेकरसी जोर सूं कांपगी। यूं लाग्यौ जांणैं श्रबार ई रोवण लाग जासी। 'नीं""नी""बापू यूं म्हारो तो ब्याव मत करजै।"" हे भगवांन म्हूं तो मर ई जाऊंली।'

गाय धरती माथै पसरी पड़ी ही। लाबी जीभ बारै निकळया ही। नकतोड़ै भाग चिलकै हा। श्रांख्यां फाटी-फाटी सी लागै। सारो डील थर-थर कापै हो। खुर बारै श्रायगा हा। बाप हाथां सूं पकड़'र खींचण री जुगत करै हो। गाय श्रेकर जोर सूं राभी। ऊठण री कोसिस करी, पण थोड़ी सो ऊठ'र हेठै जाय पड़ी। दाखां हाथां सूं श्रापरी श्रांख्यां मींचली। "हे भगवान म्है तो मर जाऊंली, पण ब्याव नीं कराऊं।"

बापू उतावळो होय'र खुर खींचै हो। गाय री डील मुरदै री भांत श्रवस सो पड्‌यो हो। श्रांख्यां री काली टिकड़ी बारै निकळ वाळी सी लागै ही। लारलो हिस्सो जोर सूं हालै हो। गाय श्रेकर फेरूं राभी—'डांऽऽ'। श्रागलै ई पल खून श्रर जेर सूं लिथड़ियो श्रेक लोथड़ो धरती माथै श्राय पड़ियो। दाखा धिरणा भाव सूं पच्च देती री थूक'र दूजै कानी चलीगी।

गाय खड़ी होय'र तेजी सूं हूंकारा भरती खून श्रर जेर सूं संडी वीं लोथ नैं चाटबा लागगी। बापू घणी देर वी री सफाई सी करतो रह्यो। फेर हाथां रै माटी रगडतो कैंवण लाग्यो—"वाई देखै कांई है, जा पाणी ल्याव। टोगड़्या नैं तेल देणो है।" वीं रै मूंडै श्रेक संतोख भरी मुळक ही।

दिन चढ़तां-चढतां टोगड्‌यो खड़ो होवण री कोसिस करवा लाग्यो। श्रा न्यारी बात के वो जद-कद जा भी पड़ै। पण फेरूं ऊठै। छाळा भरै।

भवख ऊजळी रंग। सोणा ऊजळा खिरगोस रा बचिया जिसौ। छोटा-छोटा बुगलै री पांख-सा कानड़ा। प्यारौ मूंडौ। काळो टिकड़ी सी नैंनी-नैंनी आंख्या। वो घणौ फूठरो लागै। गाय हरख-हरख'र वीं रौ डील चाटै। हुंकारा भरै। मुळकती आंख्यां अर पुळकतै मन दाखां मेथी बाजरौ रांधै।

दाखां री आंख्यां फेरूं अेक नवौ निराळो चितराम ऊग्यौ। वीं रै सासरै रौ आंगणौ। नीमड़ी री छीयां। पीढ़ै माथै बैठ'र वा अेक सोवणै टाबर रा लाड-कोड करै।

दाखां मुळक'र गाय कानी देख्यौ। गाय इब ई टोड़ ग्या नैं चाटै ही। अर टोगड़्यौ आपरी थूथणी नैं गाय रा थणां में रगड़ै हो।

दाखां रै रूं'ग-रूं'ग अेक मीठी मुळक रंगरेळ करै चाणचकी वीं रै मन में आई के वा मां नैं जाय'र पूछै, के मावड़ी थूं म्हारौ ब्याव कद करसी?



मायड़-मन

□ मुरलीधर सरमा 'विमल'

भाग सूं आपां नै वकील तौ नामी मिल्यौ है। आज अदीतवार नै ई उणरै अठै कांई भीड़ ही! आपांरौ केस तौ हैई कांई, बीरै हाथ पड़्या खूनी तकात बरी व्है जावै।

म्हूं नै तौ आ बताओ कै आपांरौ सुलटारौ कद तांई करवा देसी? आज दस दिन तौ व्है ग्या, ओम भाई रै अठै कित्ताक दिन टिक्या रैसा?

हमैं घणी ढील ना समझो! दोयेक दिनां मे ई निवेड़ौ हो जासी। ....आज थारै बयानां री बात चाली जणा कै बण ढूकौ—"आन्टी जी नै कोर्ट में जावणौ पड़्यौ, जणा म्हूं साव निकांम! उवांरा बयान तौ म्हूं अस्पताळ में ई करवाय देसूं। रैई सती रै बयानां री, बै म्हूं गांधी नगर जा नै करवा लेसूं।"........वकील माटो है तौ हुंसियार! आपां तौ कदैई सपनै मे ई सोची को ही नीं! बण कह्यौ—"म्हूं थानै थांरै मोभी पूत सूं थांरै गुजारै लायक महीनौ ओर बंधवा देसूं।"........ओ मैन्टीनैन्स री दावौ मोहं त्यार कर रैयौ है। वकील ओ कांम भी कर देवै, तौ आपांरा हाथ किसा कांटां में जावै! रमेसियौ तौ सदा लियौ ई लियौ है, आपां माथै भूल सूं कदैई नुं'वौ टक्कौई खरच्यौ हुवै तौ बताओ!

आं रान्डी-रोवणां मे कांई पड़्यौ है! म्हूं तौ बस आ जाणूं कै आपां बेगासाक घरां जा पड़ां तौ ठीक रैवै।

औ कांम तौ काले पीरूं तांई व्हीयौ समझो। रमेसियै माथै कोर्ट री ओर सूं मार-पीट री रोक साम्यां पछै आजे-आज सूं घर मे जावौ भलांई, कुण ना देवै है।"""वकील तौ उण माथै खार खायां बैठ्यौ है"........"भाईयां

मे राड़ री रीत तो चालती आई है, पण यो कुजीव मांदी मायड़ माथै वेलाग हाथ कीकर उठाया !"

रक्षा जी को सोचती-विचारती खीचड़ी रो आखरी चमचो मूंडै में मेलता कटोरदान नै बैड माथै ई अेकै कानी मेल देवै। नवीनजी कटोरदान नै थापरै भोळै मे मेलता कं वै—लो हमैं चालूं देखाण साढ़ी आठ व्हैगी। वा जमदूतणी हणैं आ नै हाका कर सी—टेम व्हैगी है, टुरो परा, जनानो वार्ड है सा।

नवीन जी इलमारी में सूं यूनी-अॅन्जाइम री गोळी काढर देवता थकां फेरूं कं वण लागै—थोड़ीक् ताळ नै वो पीळो कॅपसूल लेवणो ना भूल जाया, काले री ई नागा व्हैगी ही।"""नींद नीं आवै तो कम्पोज ले लिया।

बहीर होवण सूं पैला वै अेकर फेरूं पूछै—सिभया नै डाक्टर साब आया होसी, कांई कह्यो ?

खास की को कह्यो नीं ! छुट्टी रो पूछ्यो जणा कह्यो; उतावळ ना करो पांसळयां री सोजी की कम हुयां छुट्टी मतैई दे देसां।

नवीन जी रै टुर बहीर हुया पछै, रक्षा जी तकियां रै सारै लेट सा जावै। बेटै रमेस बावत विचारता-बिचारता मन ई मन कंवण ढूकै—आज जैड़ो जमानो स्यात् ई कदैई आयो हुसी। पीसै रै कारणै मिनखां मे अॅड़ी हिड़काब बापर्‌यी है कै वस नाता रिस्ता तो सैग धुप्पोडा सा दीसै है। पईसो ई तो मा है, पईसो ई वैन है, पईसो ई धणी है अर पईसो ई लुगाई है।

पईसै रै कारणै वेटो मां रा हाडका खळकाय न्हाख्या। लून पाणी व्है ग्यो ! पेट नै पेट रै लाता मारता लाज को आई नी। देख्यो मजो, मां घर रै घर में को घुस सकै नी पुलिस घुसासी जणा धुससी ! बाप बेटै सूं कचेड़ी री मारफत खरचो वसूलसी। पण उपाय कांई। आछी रम्मत घाली रै रमेस, कटै मूंडी दिखावण जोगी को राखी नी ! कठीनै ढकूं अर कठीनै उघाड़ूं ! गळती थारी कोनी लाडी, म्हूं जामण होय र थनै नीं जाण सकी। डाक्टर साब तो उणीज टेम कह्यो बतावै है—"पुलिस मे रिपोर्ट किये देता हूं कम से कम पन्द्रह दिनों की जेल तो हो ही जायेगी।"

गधैं जैड़ी मार खायां पछैई म्हा मे अक्कल को आई नी ! राम जाणै कीकर म्हारै मूंडै मे सूं निकळ ग्यो जाण दो डाक्टर साब मां-बेटे रै मामलै में पुलिस पंचायती करसी मूंडी लागसी।

तू थारी सी करण में जेज को लगाई नी ! उणीज दिन ससी अर मुकेस जरूरी सामान लेवण नै गया जणा कं य 'दियो-जो कीं लेजावणो हुवै

जिको वस अवार ही लै जावै, आइन्दा पग धर्‌यौ तो म्हा सूं वेसी भूंडो ओर कोई नीं हुवैलो।

सामी बैंड आळी नैं दवाई लेवता देख रक्षा जी नैं ई कैप्सूल लेवण रौ घ्यांन आय जावै। वारैं मन में आवै कै कोई वानैं ई कैप्सूल देय देवैं, अर वांनैं हिलणो-हुळणो नी पड़ै! पण देवैं कुण? वै आपरी पांसळ्या री पीड़ भेलता होळै-होळै ऊठ'र दवाई ले लेवैं। वार्ड रैं वैंडा कानी घूमती वारी निजर पारखती रै खाली बैंड माथै आय नै ढब जावै—सांण नैं महीनैं सूं ऊपर रैवणो पड्‌यो। म्हनैं तो घणो सारो ही वीरो। म्हारैं अपेन्डिक्स री अपरेसन हुयो जणा, म्हनैंई महीनो सवा महीनो अस्पताळ में ईज काढणो पड्‌यो हो।

बी वखत म्हा कनैं हर टेम कोई न कोई बण्यो रैवतो। बडोड़ा भाई जी, भाभी, सुधा, कुम्मी आद तार मिलतां पांण फटोफट चल्या आया। अब कै ई जग हंसाई आळै काड रा समचार देवतांई भूंडा लागता। मुकेस वस अजीत नैं तार दियो। अजीत को आयो नीं! आयो च्यार ओळया रो कागद "जीजी म्हूं आय नैं काई करूंला। रमेस नैं इयांन ई घणो पिछतावो हो रैयौ है। उण रैं कागद सूं म्हनैं लागै बौ डफोळ कठैई आतम-हत्या नीं कर लेवैं। तू उण नैं छिमा कर दी जे!"

अबै लाडी म्हूं थारी फाक्या में आवण आळी नईं हूं। थे मामो भाणजा गैली केई ओर नैं बणाया!

माफी मागण आळा डोळ बीजा ई हुया करैं है। आज बी बात नैं दिन दस व्है ग्या, रमेसियो अेकर ई आयनैं मूंडो दिखायो हुवै तो!

मुकेस तो लाई सोची ही कै तार मिलतां समचै मामोसा दौड्‌या आसी। वैं रमेस भाई जी नैं की समझासी। रमेस माथै वीरो पूरो अधिकार है। रमेस बी कनैं रैय नैं बी. एस. सी. करी अर बीरी मरजी मुजब रमेस रौ ब्याव ई वीरैं भायलैं तिवाड़ी री बेटी सूं हुयो। बौ आवतो तो रमा की तौ सरम करतो।

राम करैं उकील री मेंणत फळ जावै अर दोयेक दिनां में ई घरां जा पड़ां तो ठीक रैवै! ओम रै ई तो लाई रै तंगी है। पण बौ हरामी आनैं सैंज मे तो स्यात ई घर में बडण देसी! कोर्ट कानी सूं बी माथै रोक लाग्या पछै ई बौ आपरी सी कयरां बिना को रैसी नी! मजो तो जद आवै कै उण रै की अड़ंगो लगावताईं पुलिस उण नैं पकड़ ले जावै। म्हूं तो काले उकील

नी सगळी वातां चोखी तरियां बता देसूं। सातां रा देव वातां सूं कीं मान्या करै नी ! आप आप री करणी, अर पार उतरणी।

वीं वखत अेक नर्स आय नै बाडै री ट्यूब लाईटां बुझा देवै। बीच री गाटर मार्थ अेक लोटियौ बळतौ दीसै। सोवण री टेम हुई जाण नै रक्षाजी नैछाई सूं सोवण री गरज सारू अेक कम्पोज टिका लेवै। आध पूण घंटौ बीत्यां पछै ई वांनै नींद रो गड़-सोज नैड़ै-नैड़ास ई को दीसै नी ! वारै दिल में उण दिन रै काड री घटणा सैमूं डै होवण लागै।

वीं दिन दिनूं गै री साढ़ीक् सात बजी ही। मुकेस चाय- नास्तौ कर नै आपरै धंधै माथै जावण नै वहीर हुयौ ई हो। म्हूं चौक में बैठी चाय पीवै ही। रमा अर रमेस ई आपरै कमरै में टावरां सागै नास्तौ करै हा। सखी आपरै कमरै में अजू नै दूध पावै ही, वस जणा ई रमा रा सबद सुणीज्या— थारी दूव नै पिरसूं सूं पाणी को लाम्यौ है नी। औ काम म्हारै जिम्मै हो, जणा दूव में वैठताई काई जो सोरो होवतौ ! अबै सो जा'र ऊभण री जी ई को करै नीं, कांटा सा चुभै। आ वात सुणतांई रमेस सीधौ मुकेस रै कमरै आगै जाय नै कह्यौ—सै धंधा छोड'र पैला दूव में पाणी दें।

सखी जेठ नै कांई जवाव देवती ! इयां मणसारतै में बोलण री ना ई को ही नी ! वा बोली-थोली छोरी नै गोदी में थपेड़ती रैवें। उण रै फेरूं कह्या म्हनै कैवणौ पड़ै—अंजू रै सोया मतेई दे देसी, तूं क्यूं हाका करै है।

अंजू नै अबार सुवाणणी कोई जरूरी कोनी, जको टावर रात भर सोयौ वौ अबै सौ सी ई किया ?·········उठ अबार री अबार म्हारै सामी। ·········कामचोर कठैई री।

अरै तौ थारै इसी उतावळ काई है। नळ आयां पछै दस इग्यारा तांई आवतौ रैवै।

तूं बीच में ना बोल, तूंई ईंनै माथै चढा राखी है।·········बोल उठै हैक नी ?

छोरी नै रोवती देख'र बा उठती-उठती पाछी वैठ जावै। बौ फेरूं कैवण ढूकै—मम्मी देख इनै वस अेक दम उठा दियै नई जणा थारी खैर नई है।

वात सुण'र म्हनै ई ताव आय जावै—जा अबार को उठै नी छोरी रै सोया मतेई ऊठ जासी।

वस म्हारौ इत्तौ कैवणौ हुवै कै वो आव देखै न ताव म्हनै गधे ज्यू ठरकावण लागै। म्हारै मूंडै सूं वस इत्तोई निकळै-सायर वेटा धाप'र

कूट लें, कूटण में पाछ ना राखै आज मोकोई भलो है, थारा पापा ई दिल्ली सूं काल तांई आसी। बो म्हनै की नी कै'र ससी नैं कैवै-मम्मी री भलो चावै है तो अबेई ऊठ जा।

वा लाण छोरी नैं पटक'र बारै निकळ जावै। बीरैं जावतांई बो कैवै रमा, खिड़की दरवाजे बन्द कर दे और इस छोकरी को भी बाहर डाल दे।

रमा आपरै धणी री आग्या रो पालण बड़ै चाव सूं करै। म्हारी फेरूं जम'र ठुकाई हुवै ! म्है कद चेतै चूक होवूं अर कीकर अस्पताळ में आवूं, म्हनै की ठा नईं पड़ै।

बाद में ससी कह्यो—म्हूं तो वारै आय नैं पाड़ोस में सूं वानै फोन कर दूं। वांरै सागै चोक मे जावूं जणा थे ऊधा पड़्या दीसो। थांरै मूडै में सूं खून निकळतो देख'र बै ई घबराय जावै। बै थानै उठा'र बस गाडी में न्हांखताई हुवै अर अठै अस्पताळ में लिआवै। म्हूं ईं अंजू नै लिया बांरै सागैई अठै आय जावूं।

परवार में राड़ री मोटो कारण बणै सासू-बऊ री नीं बणणो। पण म्हूं तो सरू सूंई इण बात री ध्यान राख्यो। सात बरस पैला रम आई जद सूं ईं म्हूं तो बण नैं बेटी सूं बेसी मानण लाग ग्यी ही। सुधा अर कुम्मी गरमी री छुटट्या मे आवती जणा कह्या करती—रमा तूं है तकदीर री सिकन्दर, देख म्हे वैनां दोय दिना खातर आवा पण मम्मी म्हा सूं बेसी ध्यान थारी राखै। रमा ई हंसती-हंसती कह्या करती—जीजी थे अठै कोई हमेसां तो रैवो कोनी, मम्मी नैं तो बस म्हनै ई खुवावण पावण री आदत पड़ री है।

सरू-सरू में रमेस री मैडीकल स्टोर खूब चाल्यो, पण दोय साल बाद ई जांणै उणनैं कीकर घाटो लाग्यो अर उणनै बन्द कर देवणो पड़्यो। पाछो सरू करण मे पाच बरस लाग्या। उण टेम मुकेस रो धंधो खूब चालै हो। ट्रान्सपोर्ट कम्पनी मे काम तो करतोई हो साझै में अेक बस ई चालै ही। बो आपरै भाई री घणो ध्यान राखतो। बो रमेस नै कदेई मैसूस नीं होवण दियो कै बो ठालो है। उण टेम ई रमेस नैं हाउसिंग बोर्ड रो मकान अलाट हुयो। मुकेस बी बखत सूं च्यार सौ री किस्त हर महीनै आज तांई भरतो आय रैयो है। अेडवान्स रा दस हजार ई मुकेस रा पापा ई भर्‌या हा। रमेस रो तो बस कागदां में नाम ई है।

जद तांई मुकेस रो ब्याव नीं हुयो बो भाई-भोजाई री लाडेसर बण्यो रैयो। बै दोन्यूं म्हारो ई घणो ध्यान राखता। रमा बैठी नैं पाणी पावती,

म्हारी जबान समचै काम करती। अर मां लारला दिनां में म्हूं मगूणी तो या आंथूणी म्हू उतरादी तो वा दिखणादी।

मुकेस रैं ब्याव पछै म्हूं तो सगळी जिम्मेंदारी रमा माथै न्हांख नैं निरवाळी व्हैगी। बस म्हा सूं आईज गळती व्है ई। रमा री हीमत बधती गई। धीरै-धीरै वा ससी माथै हुकम चलावण लागी। मुकेस मस्त जीव वौ इयाकली वाता कानी कान को देवतो नी। कदैई ध्यान आ ई जावतो तो वो ससी नैं ई डाट पिलावतो — ससी औं के भाभी तो रसोई में है अर तूं अठै सेठाणी वणी रेडियो सुण रैई है। भाभी अवेरा-सवेरा करै है अर तूं बैठी पोथी वाचै है।

रमा माटी इया तो हाथ को हलावती नी, पण रमेस अर मुकेस सामी की न की करण री दिखावो अवस ई करती। म्हारो घर में चौवीस घंटा रो रैवणो। म्हासूं औ चाल वाज्या सैंन को हुया करतो नी! म्हा खातर तो दोन्यूं बवा सरीसी। म्हासूं कदैई-कदैई की कैईज जावतो।

रमा नै आपरी हायर सैकिन्डरी री ई घणो गुमांन! ससी अैम. अे. होवता सादी-सल्ला। रमा फैसन मे मरी जावै। लोग कैवै छोटोड़ी बऊ रो पगफेरो सुम को रैयो नी! ईं मे पगफेरै रो काई दोस। आखी माड़ी री ठा तो भेळा रैयां पड़ै वा अेकली ही जणा कांई भीता सूं भचेड़ा लेवती। ससी रै आवताई तो वा सै कोतक करण लाग गी।

सरू-सरू में काम रो बंटवारो हुयो। काम रै बंटवारै सूं संतोस नी हुयां पछै खाणौ-पीणौ जुदो-जुदो होवण लागो। म्हां दोन्यां नै मुकेस सागै कर दिया। दोय चूला हुयां पछै ई बरामदो, बेठक अर लान आद रो काम तो बारी-बारी सर करणो पड़तो। इतो की हुयां पछै ई बांनै संतोस को हुयो नी। संतोस हुवै कीकर वां दोन्यां री डाढ़ तो मकान माथै ही। मकान खातर म्हारा हाडका भांग न्हांल्या। दोय दांत अर दोय पासळया तोड़ दी।

जिको भाई, भाई विना जीमतो कोनी, भाई रै पैन्ट बणवाया पैलां पैन्ट को पैरतो नी, भाभी री जबान समचै फरमाइसा पूरी करतो, वो री लुगाई सागै अैडो व्योहार कियो अर घर नैं हड़पण खातर म्हा सिगळा नैं घर सूं वारै कर दिया।

रमेसिया अबै तूं याद राखे, मुकेस थनै बगसण आळो नईं है। भाई-भोजाई रो वो घणो लिहाज कर लियो। वो कालै ई कैवै हो—मम्मी अेकर तूं म्हारो हाथ उठावण दै, वींरा हाड-पांसळा अेक नी कर दूं तो। थारा तो

वो दोय दांत ई तोड़्या है म्हूं वण री बत्तीसी नईं तोड़ी तो असल बाप रो नईं ।

मुकेस तो लाई पैलां ई मकान ढूढै हो । वो नैं ई मकान सूं जावक मे ई मोह् कोनी, पण बेटा अबै थनै ओ मकान सोरै सास मिलण आळो नईं है।

मुकेस रा पापा उकील तो जोर रो कर्यो है, जबर पाइन्ट काढ़्यो है—दै सबूत कै थारो धंधोई ग्न्द हो जणा लायो कठै सूं किस्ता रा रिपिया । आगती-पासती रा लोग तो हणेई उण माथै थू-थू करै है। नकटा रे नाक कटी कै सवा हाथ और बढी ।

जा-बेजा रै जंजाळा में आखी रात बीत जावै । दिनूंगै री सात बजी सीक मुकेस चाय लिग्रावै । चाय पीया पछै ई विचार वारो लारो को छोड़ैनी । वारो चिन्तण और ऊंडो होतो जावै । वै ऊपर उठता सोचण लागै होई जकी तो होई पण अबै कोर्ट की नवकी काम कर सकसीक नी, का ग्रै भाई-भाई इयांई ताजिन्दगी पईसै सूं कुटीजता, सरीर सूं छीजता ग्रर भूंड सूं भरीजता रैसी ? कोट-कचेड़्या रो काम है आसाम्या नै लूंटणो । खरै ग्रर वैगै न्याव रा तो दरसण ई ग्रदोठ हुयोड़ा लागै है ।

इग्यारै वजी सीक नवीन जी खाणो लिग्रावै । रक्षा जी रै जीमती वेळा वै कोर्ट रै मसलै नै ले बैठै । वै सुणी-अणसुणी करता थोड़ो घणो जीम लेवै । वारह् बजता बजतां वकील ग्रर मुकेस ई ग्राय जावै । ग्रावतांई पूछै-काकीसा अबै किया है थांरी तबीअत ?

—ठीक है ।

—उण दिन थे रमेस नै इसो काई कैय दियो कै उणरो हाथ था माथै उठ ग्यो ? वड़ो बेसरम है, बेईमान कठैईरो ।—थेई किसीक बात करो हो उकील साब, कदेई बेटे रो हाथ भी उट्यो है मा माथै । उण टेम कोई भूत बड़ग्यो हुवैला उण मे ।

वात सुण'र वकील मुळकण लागै, फेरू कैवै म्हे वी भूत रै ई तो मिरच्या री घूणी देवण रो सरतन कर रैया हा ताकी वो ग्रोठो नी वावड़ै ।

—ग्रो रोग थारै वस रो कोनी । थारै कामां सू भूत भागै ग्रर पलीत पैदा हुवै । कोरटां रो काम है, लड़ती मिनवर्या नै वानरै ग्राळी ताकड़ी वता'र कोरो अंगूठो दिखाय देवणो ।

रक्षा जी री वात सुण'र सैग जणा ग्रेक दूसरै रो मूंडो जोवण लागै। वै थोड़ी ताळ मुकेस सामी देखता कैवण लागै-बेटा जीवण मे पईसो ई सो कीं नईं है । पईसै सूं ग्रागै है, इज्जत-ग्रावरू ग्रर सुख-स्यान्ती । ग्रांनै होम्या

पईसो आयो तो किण अरथ रो । हुई जको ने आई गई कर ! तूं अबै तांई पईसैं'रो गिनार नी करी तो अबै म्हारै मामलै नै लेर मन नै ओछो ना कर । ''''ओ मकान ई राड़ री जड़ है तो आगो बाळ ईं मकान नैं । दूजो मकान लेवण रो मतो तो थारो पैलाईज हो ।

मुकेस कीं कंवे इज सूं पैलां नवीन जी कंवण ढूकै मुकेस री मम्मी आज थांने अेकेदम ओ हो कांई ग्यो । वकील साव सो काम पक्को कर लियो आपां काल तांई आपणै घरां जा पूग सा । पण थांरा बयानां बिनां अै ई कांईं करसी ।''''थांरा इयांकला विचारां सूं आपणा कोर्ट कारवाई में लागोड़ा डोढ़-दो हजार ई डूब जासी अर घर में ईं को जा सकसा नी ।

धूड़िया लारै इसै घर रै । म्हे तो वो मकान में अबै पग ई को धरूं नी । थांनै मोह है घर रो, तो थे इयांई जावो भलाई । थानै अेकला नै तो वो राजी-राजी राख लेसी । बण री कांटो तो म्हूं हूं । म्हैं मुकेस कनै रैय लेसूं । जे औ ई ना दे देसी तो और कठैई ठिकांणो ढूंढ लेसूं ।

इत्ती कैवता-कैवतां बारो गळो भरीज जावै । मुकेस स्टूल माथै सूं उठ'र आपरी मां कनै बैंड माथै जा बैठै । मां रो हाथ आपरै हाथां मे लेवतो कैवै—मम्मी तूं बेराजी ना हो । म्हनै तो रीस इण बात री है कै वो थनै बिना मतलब कोजी तरियां कूटी क्यूं । म्हैं तो इण री बदळो लेवणो चावूं हूं ।

आ फालतू री फजीती है, बेटा । आ तो टाबर नै जलम देवताई बण री लातां खावणी सरू कर देवै । लातां खा-खा'र ई बण नै पाळै । अबै उण नैं जेळ हुया म्हूं किसी वडी बाज जासूं । वो म्हा खातर जीवतोई मर्यै समान है, अबै तूं ई म्हनै जीवती नै ई मरी समान बणावणी चावै जणा थे बाप-बेटा करो भलाई थांरै मन री ।

वकील ने बात बिगड़ती लागै । वो बात बणावण री गरज सूं कंवै-काकीसा थांरो केस सोलिड है । म्हूं थानै मकान माथै अधिकार करवा देसूं, खरची ई बंधवा देसूं, पण इया भावुकता मे वैया पार किया पड़सी । बेईमान ने बैईमानी रो दंड तो मिलणो ई चाई जै ।

—थे बात तो खरी कैय रैया हो, पण थे थांरो छाती माथै हाथ मेल'र आ तो बताओ कै आज ताईं थे कित्ताक बेईमाना नैं दंड दिरायो । दंड तो बापड़ा वै ईमानदार भोगै, जिका थांरी जेबां नीं भर सकै ।

रक्षा जी री इण बात रो पड़त्तर वकील नै सोध्यां नीं मिलै । वो कदैई मुकेस कानी जोवै तो कदैई नवीन जी कांनी । मुकेस मगन मन सूं आपरी मम्मी रै माथै पर हाथ फेरतो रैवै ।



वोळाऊ

□ नरसिंघ राजपुरोहित

वखत री वायरी अपरबळी।

खाडां री ठौड़ धोरा अर धोरां री ठौड़ खाडा परंपरा सूं व्हेता आया। जिका ठौड़-ठाया कोई वखत जगत चावा हा, वांरौ आज कोई नांव ई नीं जाणै, अर ज्यांरौ संसार में कोई नांव निसाण ई नीं हो, वै आज जगत रा सिरमौड़ बण्या बैठा। पण इणरै सागै आ बात ई साची के जिका मिनख इण संसार में कीं सरावण जोग काम कर ग्या वै अखियातां में अमर व्हेग्या। काळ रा कराळ हाथ वांरी नामवरी नै नीं मेट सक्या। वखत री वायरी वांरै जस री पगडांडियां नै नीं विखेर सकी।

राजस्थान में जाळौर जिलै री जसवंतपुरी गांव कोई जमाना में लोयाणागढ़ रै नाम सूं खंडां-परखंडां में चावौ रह्योड़ौ। मारवाड़ राज री आ दिखणादी कांकड़ अर आडावळ परवत री आयूंणी छेवाड़ौ। परवत री उण ढाळ गुजरात अर इण ढाळ मारवाड़। मारवाड़ अर गुजरात रा राजपंथ माथै लोयाणैगढ़ अेक ठावी ठौड़। आज ई मारवाड़ रा मिनख भजनां में गावै—डावी डांडी जावै द्वारकै, जीवणी लोयाणागढ़ रै राज भोजी !.........
कोई वखत लोयाणा री स्वतंत्र राजगादी रह्योड़ी। जिण माथै कई अनड़वीर तपिया। उण वखत वांरा धाका पड़ता। पण होळै-होळै लोयाणागढ़ रौ राज विखरण लाग्यौ अर छेवट मारवाड़ रा राज में लोयाणौ फगत अेक जागीर रौ गांव बण'र रैग्यौ।

कैवत है के डाकी मूआ अर डर भागा। सो लोयाणागढ़ रौ राज विखर तांई इण इलाका मे भीला री उत्पात वधग्यौ। इलाकौ इज इण भांत रौ। च्यारूंमेर डीगा-डीगा परवत। मायै जाडी भाड़ी आयोड़ी। धवळ

दिन रा कोई ताळी देय'र न्हाट जावै, तौ ई पतौ नी लागै । रीछ, वघेरा अर चीतरा अठै निसंक विचरै । भूरां री तौ डारां री डारां फिरै । इसै डरावणै इलाक में भील धागडा (गिरोह) बणाय' र लूट खसोट करण लाग्या । मारवाड सूं गुजरात जावण वाळौ राजपंथ अठी व्हैय'र वंवै । ऊंटां री कतारां अर विणजारां री वाळदां इण मारग इज चालै । भीलां यांनै लूटणौ सरू करी । धागडा रा धागडा तीर कवाण लियां मौकौ देख अरड़ाय' र पडता अर माल-मत्ता खोस'र भाक्खर भेळा व्है जाता च्यारूंमेर हाहाकार मचग्यौ । पण कोई दाद फरियाद नी । राज भीलां नै दबावण री खासी कोसिस करी, पण की ताळ नी लागी । लोयाणा रै च्यारूंमेर भीलां रौ उतपात वधतौ ई गयौ ।

छतां पण संसार रा कांम कद रुकिया ? जरूरत माफक विणज वै पार चालू रह्यौ अर मिनखां रौ आवा-जावौ ई वंद नी व्हियौ । पण इतरी वात जरूर व्हैगी के वखत जरूरत माफक इण मारग वटाऊड़ां आपरै सागै वोळाऊ (मारग-रक्षक) राखणा सरु किया । कीं इसा हिम्मतवर मिनख जिका लुटेरां सूं भिड़ण रौ होसलौ राखता, वै वटाऊड़ां सागै वोळाऊ रै रूप में आवण-जावण लाग्या ।

लोयाणा गढ सूं की आंतरै अेक गांवड़ी आयोड़ी—वडगांव । उठै ऊकजी पड़िहारियौ नांव रौ अेक रजपूत रै वै । साधारण घर-धणी आदमी । पण छाती रौ वजर अर हिम्मत रौ हेड़ाऊ । कांम पड़्यां अेकलौ सैंकड़ां सूं भिड़ण रौ हौसलौ राखै । अेक-दोवार काम पडयां कोई भाई-सैंण ऊकजी नै इण मारग साथै लेग्या अर सामनौ व्हिया उणां भीलां नै पग पाछा दिराय दिया । होळै-होळै भील ऊकजी री नाव ओळखण लाग्या अर ऊकजी पण इण मारग वोळाऊ र रूप में आवण-जावण लाग्यौ । ऊकजी अेकलौ अर भील मोकळा पण मरणियौ अेक ई भूंडौ व्है । इण कारण दोन्यूं पख आपसरी में मनोमन समझग्या । जिण वटाऊ रै सागै ऊकजी वोळाऊ व्है तौ, भील उणरी नाम नीं लेवता । उणरै लारै धूड़ ई वाळता । इणीज भांत बिना कारण ऊकजी पण भीलां नै नीं छेड़तौ ।

पण थोड़ाक दिनां पछै संजोग इसौ वण्यौ के भीलां सागै ऊकजी री भिडंत व्हैगी कारण मामूली । पण कई वार तिरणा सूं भारत वण जावै । बातड़ी यूं बणी के वड़गाव री अेक वाणियौ अर लोयाणै परण्योड़ौ । नुंवौ व्याव व्हियोड़ौ, सौ सासरै मांडौ चूरण नै आयौ । उण जमानै रा रिवाज माफक जवांई सासरै आवतौ जद मोकळा लाड-कोड व्हैता । जंवाई लुगाइयां

नै गीता रै बदळै नाळै'र भर टाबर-टींगरां नै पोतौ (मेवौ-मिसरी) बांटतौ। इण वास्तै सुभाविक बात ही के जिण घर नु'वौ जवाई सासरै आवतौ, उठै गाव रा मोकळा टाबर भेळा व्हे जाता। पण वाणिया रा इण जवाई नै भीड़ भाड़ की कम पसंद ही। खास कर भीला इत्याद रा काळा-कडोपा छोरां नै देख'र उण नै घणी घिन आवती।

उण वखत लोयाणा में भीलां री मोकळी आबादी। गाव रै वारै वारी न्यारी वस्ती। तेजौ नांव री अेक भील उणारौ मुखियौ। पुगतौ आदमी। जमानौ देख्योड़ौ, पुरांणौ पापी। तेजारी भीलड़ी मोटयार गाळै ई मरगी। नातो करावण खातर तेजा रै भाई गिनायतां मोकळा ऊंठै-घेटा मेळिया पण तेजौ मान्यौ कोनीं। वी रै ओळाद में फगत अेक वेटी, जिकी घर जवांई राख'र परणायोड़ी। वेटी अर जवाई तेजा रै भेळा ई रेवै। आठ दस वरस री अेक दोहितौ, जिणरौ तेजौ अणूं'तौ लाड राखै तेजा री जवांई भीलां रै धागड़ै भेळौ लूट-खसोट रौ धंधौ करै। भीला में उण वखत तेजा री आछौ मान-तान। न्यात-पांत मे उणरी नांखियौ लूण पड़ै। भीलांरा आतंक रै कारण सगळो खोखळौ तेजा सूं डरै। उणनै ओहडौ देवण री कोई हिम्मत नहीं राखै।

अेक दिन तेजा री लाडकौ दोहितौ वस्ती रा टावरा भेळो उण वांणिया रा जवांई कनै पोतौ लेवण गयौ जवांई उण नै अेक दो थप्पड़ां अर धक्का देय काढ़ दियौ। टाबर नै घणी रीस आई। तेजा भील री लाडको दोहितौ ठेरियौ। वौ मूंडौ लाल चुट्ट कियां कूकतौ थकौ आपरै नानै कनै पूगौ।

उणदिन ई भीला रौ धागडौ लूट खसोट कर'र घरा आयोडौ। तेजा री गुड़ाळ में दारू री मेहफल जमी थकी। प्यालां री डोडी मनवारां चालै। तेजा रौ जवाई मेहफल रौ मामौ बण्योड़ौ।

सै वीच वैठौ। तेजौ डाढी रै बुकानी दियां होकौ गुडगुड़ावतौ मांचारै माथै जमियौ। जितरै तौ छोरौ त्राहि त्राहि करतौ ठेट मेहफल में पूगौ।

कांई व्हियौ म्हारै डीकरै रै ? किणै कूटियौ थनै ? तेजौ हळफळतौ थकौ मांचै सूं उठतौ बोल्यौ।

छोरौ तेजा रै खोळा में पड'र जोर जोर सूं डाढण लाग्यौ। उण वी नै बुचकारियौ तौ वौ हूचकै भरीजग्यौ। नीठ छानौ राख्यौ। सगळी वात सुण'र तेजारै झाळी-झाळ लागगी।

वांणिया री म्रा हिम्मत के म्हारा दोहिता नै कूटै ? तेजो कड़कड़ियां भींचतो बोल्यौ—चीर'र खाजाऊं बापड़ा नै !

छोरा रै गाल माथै आंगळियां रा निसाण मंड्या देख'र उणरी बाप रीस में बावळो सो व्हेग्यो । कीं दारू रो नसो अर की पीठबळ रो मद । वो माथा पर सूं पोतियो नीचो पटकतो बोल्यौ—इण वांणिया रै जवांई रो माथो नीं वाढ नांखूं, जितरै पोतियो बांधणो तीन भागां तलाक ।

मेहफल मे सरणाटो छायग्यो । रंग में भंग पड़ग्यो ।

बात उडती उडती वांणिया रै घरां पूगी तो कूकारोळो मचग्यो'। कैवत है के गोयरै री मौत आवै जद भीलां रै झूंपे चढ़ै । सागण आई बात बणी । तिरणा सूं भारत व्हैग्यो । लोयाणा री काकड़ अर भीलां सूं दुसमणी । जाणै समंदर मे रैवणो अर मगरमच्छ सूं बैर । अर मगरमच्छ ई कोई साधारण नी । बाको फाड़'र मिनख नै आखो रो आखो गिट जावै, तो पत्तो ई नी लागै इसो । भीलां रै सुभाव अर तौर-तरीकां सूं सगळाई वाकब । अै भील आई कोई बात पकड़ै नी, अर पकड़ै तो छोडैनीं । आ कौम ई इण भांत री । वाणिया रै जवाई रो तो काळजो फड़का चढग्यो । उणनै मौत सुभट निजर आवण लागी । सेहज सेहज में किसीक गळती व्हैगी । अबे लोयाणा में रै वणो खतरा सूं खाली नी हो । बडगाव पूगां तो फेर बचाव व्है सकै । पण बड़गांव तो सो जोजन व्हैग्यो । उठातांई पूगणो किया ? भीलां हेरो पकड़ यौड़ो । वै मारग में हथीका त्यार । भाखर मे टुकड़ा कर'र नांख देवै तो पंछ गिरजड़ा ई धापै ।

उण बरस मारवाड़ में भयंकर दुकाळ । मेह री छांट ई नी पड़ी । आखै मारवाड मे कठैई फळी ई नी फाटी । पण मारवाड़ सूं लगतै गुजरात रै इलाकै बरावरी मे उण बरस जमानो चोखो । इण कारण गुजरात सूं अनाज री कतारा लद'र लोयाणा रै मारग मारवाड़ मे आवै । ऊकजी उण कतारां सागै बोळाऊ रै रूप में आयबो-जायबो करै ।

उणदिन अेक कतार सागै ऊकजी लोयाणै आयो । वांणिया रै जवाई उणनै बजार में अपूठो जावतो दीठो । उण लारै सूं हेलो कियो

ऊकजी काकोसा ! ऊकजी काकोसा !

ऊकजी पाछळ फोरी, जितरै वो हळफळतो थको नैड़ो जाय पूगो । मोकळा दिनां सूं लोयाणा मे रोडीज्योड़ो अर दुख सूं भरीज्योडो होवण सूं ऊकजी जिसा आपरै गाव रा भरोसावंद आदमी नै देखा'र वांणिया नै रोज आयग्यो । आंख्या जळजळी अर कंठ गळगळो व्हैग्यो । ऊकजी नै कीं बात

समझ में नी आई । वांनै वड़गांव छोड़्यां मोकळा दिन व्हैग्या हा । सोच्यौ लारै कोई कुठांणो तौ नी व्हैग्यौ ? वै उणनै लेय'र अेकांत में गया । पूछ्यौ– कांई बात है ? गांव में तौ सै आणंद मंगल है ?

—हां गांव में तौ सै राजी खुसी है । वौ आंख्यां पूंछतौ बोल्यौ-पण····

—पण कांई, बात व्है जिकी कैवै क्यूं नी ? कह्या बिना कांई ठा पड़ै ।

अर वाणियै आपरै दोरप री बात घरामूळ सूं मांड'र सुणाय दी । बात सुण'र ऊकजी ई विचार में पड़ग्यो । थोड़ी ताळ ठैर'र होळै होळै बोल्यौ—कांम तौ धाप'र ऊंधौ ई व्हियौ । म्हूं तेजा अर उणरा जवांई नै जाणूं । महा आंटीला आदमी । पण कुमत आवै जद किसी कैय'र आवै । इणमें थारौ ई कसूर कोनीं भाया ।

ऊकजी काकोसा म्हनै कियां ई कर'र वड़गांव वळतौ कर दौ । जीवूं जितरै थांरौ अेहसान नीं भूलूं । वांणियै ऊकजी रा पग पकड़ लिया ।

अरे रे ! यूं कांईं करै गैला ! ऊकजी उणरा हाथ पकड़तौ बोल्यौ ।

अै भील म्हारा टुकड़ा कर'र कागलां नै चुगाय देला । थे चावौ जिको ई म्हूं देवण नै त्यार । पण अेकर थे म्हनै वड़गाव रा झाड़का दिखाय दौ ।

ऊकजी नै करूणा आयगी । गांव रौ छोकरौ । हाथा सूं मोटौ कियौ बापड़ा रै हाथांरी मेंहदी ई भगसी कोनी पड़ी अर भीलां रै हाथ बिना मौत मारियौ जासी । कांईं ठा इणरा हाडका कठै बिखर सी········इणनै तौ बचावणौ ई पड़सी । ऊकजी मन में पक्की तेवड़ली ।

देवण-लेवण री उणरी बात याद कर'र ऊकजी ठीमर सुर में बोल्यौ— देवण-लेवण री थूं बात छोड दै भाया । थनै साथै लेय'र गयां के तौ माथौ देवणौ पड़ैला अर के माथौ लेवणौ पड़ैला । थूं माथै रौ मोल चुकाय सकतौ व्है तौ बोल !

वांणियौ चमगूंगौ वणग्यौ, कांई पड़ूत्तर देवतौ ।

—खैर थूं अवै दूजी चिंता छोड़—ऊकजी कह्यौ—सूंधारी धणियाणी जगदंब सहाय करसी । कालै दिनूंगै थारै चढ़ण खातर कोई सांतरौ परण त्यार राखजै । म्हूं थारै सागै घोड़ा माथै चालूंला ।

वाणिया नै तौ जाणै नुंवौ जमारौ मिळग्यौ । सगळी रात आंख्यां में काढ़ दी । दिनूंगै अेक घोड़ा माथै वौई ऊकजी रै सागै रवानै व्हियौ ।

वड़गांव री मारग तेजा भील रा झूंपा रै आगै कर वैवै । तेजा रै फळसा आगै पूगा तौ ऊकजी घोड़ा नै छिनैक ढाबियौ अर हाकौ कियौ

तेजो घरै है रे ?

हुंए रा ! गुडाळ में सूं आवाज आई—कुण व्हे ई ?

—ओ तो म्हूं ऊको पड़िहारियो । बड़गांव वाळा गंगिया नै पुणावण नै जाऊं । था वाळा जवांई नैं समझाय दीजैं के लारैं नी आवैं । मामूली बात खातर इतरी आंट नी बांधणी । अर जे इण उपरांत ई नीं मानैं तो कंय दीजै के धागडो लेय'र लारैं आवैं । असल कसूंबल पोतियो बंधाय'र भेजूंला ।

पाछो कीं पडूत्तर नी मिळ्यो । बांणिया सागैं ऊकजी रैं जावण री सुरपुर भीला री बस्ती में रात नैं ई व्हेगी ही । तेजा री जवांई हुमरड़ाई करण लाग्यो तो भीलां उणनैं वरजियो । पण वो मान्यो कोनी । बोल्यो—कोई सागैं नी चालो तो सगळाई पडो घेड में । जावतो वखत वो धकार नैं गयो है तो म्हनैं तो जावणो ई पड़ैला ।

तेजो बोल्यो—पांवणा मान जा । सगळाई ना देवैं तो अणताई मत कर । पछै ई पछतावो रैवैला ।

—पछतावो किण बात रो ? मरणो अेकणवार है । अर इसो ऊकजी कांई बाघ है ? जे असल भीलण रा चूंघिया है, तो ऊकजी अर बाणियैं दोन्या नैं मार'र पांणी पीवूंला ।

तेजा री छोरी रोवती थकी बोली—बावो ना देवैं वो काम मत करो । थांनैं सूंधा माता री सौगन है ।

थारो बाबो कायर है—वो रीस में तंबोळ व्हियोड़ो बोल्यो—अर अै सगळा भीलड हीजड़ा है । म्हनैं किणई वरजियो तो माथो वाढ दूं'ला ।

अर वो तलवार रो खापटो हाथ में लेय'र उघाड़ै माथै साव अेकलो रवांनै व्हैग्यो । सगळा उणरी रीस नै जाणता । इसा अडियल आदमी नैं कुण वरजै । सैं भाठां री मूरत व्है ज्यूं ऊभा । किणै ई चूंकारो ई नी कियो ।

वो पवन रैं वेग भाखर रैं ऊपरवाड़ै व्हैय'र बड़गांव रैं मारग जाय आडो फिर्‌यो । लोयाणा सूं की आंतरैं इण मारग अेक सांकड़ी घाटी आवैं । वो सागैंडो मौको देख'र अेक टणका गड़ा रैं ओलै छिप'र बैठग्यो । होळैं होळैं सूरज ऊपर चढ़ण लाग्यो । घाटी में जीवा जूण री चळवळ सरू व्ही । भील री आंख्यां अर कांन अरजुण री चिड़ी रैं ज्यूं मारग कांनी लाग्योड़ा । इतरैक तो अळगैं सूं घाटी में घोड़ां रा पौड़ सुणीज्या । वो सावचेत व्है'र बैठग्यो अर तलवार हाथ में काठी पकड़ली । होळैं होळैं दोन्यूं असवार तर-तर नैड़ा आवण लाग्या ।

घोडा टपटप करता आपरौळ में वैवैं हा अर असवार आप-आपरैं विचारा में मगन । ऊकजी रो घोडो गड़ै रैं अेन सनमुख आयो के मौको

ताक'र भील फुरती सूं वारै आयौ अर दोन्यूं हाथां में तलवार झाल'र लारै सूं वार कियौ। वार भरपूर वैठौ अर माथौ आधौ कटग्यौ। वौ दूजौ वार वांणिया पर करणौ चावतौ पण इणरै पैंलीज गरणाट करतौ ऊकजी रौ घोड़ौ पाछौ फिरयौ। बिजळी रै पळाका ज्यूं भक्ख करती भवानी म्यांन रै वारै निकळी अर अेक झाटका में ई भील रा दो ढोल व्हैग्या। आ सगळी रामत आंख फरुकै जितरी जेज मे व्हैगी। घोड़ै सूं डिगतां डिगतां ऊकजी घाटी रै पेलळ वड़गांव रा मारग माथै धूड़ रौ गेंतूळ उडतौ देख्यौ तौ उणरी आतमा नै संतोख व्हियौ।

भाखर मे आज ई उण ठौड़ थड़कलौ वण्योड़ो। ऊकजी भोमिया रै रूप में पूजीजै।



सजा

□ सांवर दइया

अठै आयां गिरधारी नै रसौ की अणखावणी-अणखावणो सो लागतो। लागतो कै वगत री रफतार साव धीमी है। सोमवार पछै सनीवार आवै जितै लखावै कै जांणै जुग बीतग्यो है।

भाख फाटतां ईं दिन सरू हुय जावै अर सिंझ्या कित्ती दोरी पड़ै, बोई जाणै। कमरै सूं स्कूल, स्कूल सूं पाछो कमरो। स्टोव सूं मगजमारी। काची-पाकी अर माटी-बांडी रोट्यां। आलू कान्दा री सदाबहार साग। जीम्यां पछै इनै-बिनै खुड़िया रगड़तां पीपळ रै गट्टै तांईं पूगणो। वठै 'चर-भर' री मजमो। सिंझ्या नै मोटर आवै जित्तै वठै ई उबास्यां खावणी। इणी बिच्चै अेक-दो कप चाय। फेर थाकमोड़ै मन सूं पाछो कमरै री भीतां में कैद हुवणो। दिनूगै री बच्योड़ी रोट्यां खावणी। फेर नींद नीं आवै जित्तै पसवाड़ा फोरणा। का सत्तार रै छोड्योड़ै बीड़ी रै धूंवै में अमूझतै जीव नै लियां पड्यो रैवणो।

प्रमोसन री कित्ती उडीक ही गिरधारी नै! जदतांईं लिस्ट आउट कोनी हुई ही, तदतांई वो केई-केई सुपना देखतो। वींनै आपरै रगत री रफतार कीं-कीं वध्योड़ी लखावती। वींनै ओ तकात लखायो के जे वो ठेसण जाय'र वेटिंग मसीन माथै ऊभर साल चक्करियै रै रुक्यां पछै दस पइसां आळो सिक्को न्हाख'र आपरो वजन लेवै, तो लारलै दिनां लियोड़ै वजन सूं अेकाध किलो वत्तो ई हुवैला! आं ईं विचारां विच्चै प्रमोसन लिस्ट आउट हुयगी। वींरी पोस्टिंग गाव री सेकण्डरी स्कूल मे हुई। स्कूल सूं रिलीव हुयां पछै गांव जावण आळी मोटर री अतौ-पतौ करण लाग्यो।

बस स्टैण्ड जाय'र 'पूछ-ताछ' आळी बारी में मूण्डो घाल'र बिण गाव री नांव बतायो अर मोटर री बगत पूछ्यो। बीरी बात सुण'र बो आदमी मूंछां में मुळक्यो। कन्नै बैठ्यै आदमी सूं नजर मिलायी। दोनां री आख्यां च्यार हुई अर वै मुळक'र जोर सूं हंस्या। फेर बो आदमी बोल्यो–ई गाव कानी 'रोडवेज' कोनी जावै। अेक प्राइवेट बसड़ी जाया करै''''।

—बा कठै सूं जावै''''?

—ध्यान कोनी! आ सुण'र गिरधारी नै लखायो जाणै किणी भाठो उठाय'र बीरै सामैं बगायो हुवै। साइकिल मायै बैठ'र पैडल मारती बगत बो सोचण लाग्यो कै अै सुगन आछ्या हुया। मोटर कठै सूं जावै, आई ठा कोनी! पैली तो मोटर जावै बा जागा सोधो, अर गांव पूग्यां पछै जे कठैई स्कूल सोधणी पड़ी तो?

घूमतां-घूमतां सिंझ्या तांई बींनै मोटर रवाना हुवणै री ठिकाणो अर बी स्कूल रै दो-तीन मास्टरां बाबत ई की जाणकारी मिलगी। अै बी रै ई सैर रा वासी हा। पूछताछ कर'र अेक जणै रै घर रो पतो लगायो। बठै ठा पड़ी कै बो सनीवार नै आवै, अर दीतवार नै पाछो जावै। गिरधारी सोच्यो कै रविवार नै बीरै साथै जावणो ई ठीक रैवैला।

सनीवार नै गिरधारी जद सत्तार रै घरै पूग्यो तो बीरा बडोड़ा भाई-सा ऊभा हा। वा कैयो–मास्टर जी, सत्तार तो ढाई-तीन बजी तांई पूग्या करै''''।

आ सुण र गिरधारी पाछो टुरग्यो। पाचेक बजी पूग्यो तो सत्तार घरां लाधग्यो। सत्तार सूं पुराणी सैंध पिछांण निकळगी। कमरै में बैठ्यां पछै बीनै लखायो कै किणी चीज री बास आ रैयी है। जांणै कठैई कन्नै ई मींडको मर्योड़ो हुवै। बास तरन्तर वधती लखायी। बी सूं रैयीज्यो कोनी। बिण होळै सीक पूछ्यो–थारै कमरै में आ बास क्या री आवै है? कठैई कोई ऊंदरियो-फूंदरियो तो मर्योड़ो नी है''''?

सत्तार री की-की गेळीजती आंख्यां मे भभको-सो उठ्यो। बो घड़ीक की सोच'र बी मायै मायलै तकिये हेठै सूं अेक धोळो पूर काढ'र पछैती मायै फेंक दियो। गिरधारी री नजर सूं बच नी सक्यो कै पूर गीलो हो अर बा गिंध बीरै मांय सूं आवती ही। सत्तार बीड़ी री फूंक खैंच'र बोल्यो–देख भायला, म्हैं अेकर तो मोटर सूं उतर'र घरां आवताई गंठो बीड़ू''''अर फेर मौको लाधै जणा''''। बीड़ी रो धूंवो गिरधारी रै मूण्डै आगै पसरग्यो अर गंठो बीडण रो अरथ ई समझग्यो। अरथ समझ में आवताई बो मुळक्यो। बो बोल्यो—चालो, थोड़ी ताळ बारै घूम आवां।

—चाय रो ग्रेक दौर हुय जावै। पछैई चालां।

—ग्रो दौर बारै ई करसां। बीरो जी की-की मिचळावण लाग्यौ हो। मर्योड़े मीढ़कै री गिंध बीरी नास्यां में भरीज्योडी ही।

सत्तार काछ खुजावतौ बोल्यौ—जियां थारी मरजी""।

गिरधारी गांव जावण खातर तैयारी कर लीन्ही। ग्रेक पींपै में सातेक किलौ ग्राटौ, हठड़ी मे मिरच-मसाला, ग्रेक डब्बै में तेल ग्रर दूजै में घी, कोथळी में घर री कर्योड़ी वड्यां, ग्रेक ठूंगै में ग्रालू, कांदा ग्रर मिरचां""फेर तवौ, वेलण, चकळौ, स्टोव, घासलेट रौ पींपौ""दरी, चादरी""बो ग्रेक-ग्रेक चीज गिण-गिण र सामान बांधण लाग्यो। स्सौ सामान बंध'र तैयार हुयौ जणा तीन नग हुयग्या। सवा तीन वजी घर सूं निकळ्यौ ग्रर साढ़ी तीन ताईं गोळ बाग कनै पूग्यौ। वठै वस लाग्योड़ी ही। गिरधारी ग्रापरौ पींपो ग्रर दूजो सामान मोटर रै ऊपर रखवाय दियो। खुद मांय जाय'र बैठग्यौ। मोटर में साढी पाच फुटौ ग्रादमी ई सावळ ऊभौ कोनी रैय सकै, बौ तौ पांच फुट दस इंच लम्बौ हो।

मोटर मे ग्रेक्कानी जनानी सवार्‌या खातर सीटा ही। वी माथै पाच-सातेक लुगाया बैठी ही। सामै सीट माथै कई थेला ग्रर ग्रंगोछा पड़्या हा। ग्रेक जागा साफो मेल्योडो हो। गिरधारी समझग्यौ कै ग्रै लोग ग्रापो ग्रापरी सीट रोक'र नीचै खुली हवा मे ऊभा हुवैला का पछै सौदै सुलफ खातर कनै ई गयौडा हुवैला। पूणी च्यार वजी सत्तार ग्रायौ। पजामौ ग्रर बुसट। मूण्डै मे बीड़ी। ग्रांख्यां मे सागी गैळ। गिरधारी रै मन में ग्रायी कै पूछूं—क्यों भाइड़ा, ग्रावती वगत तौ गंठी पकायत बीड्यौ हुवैला। सत्तार बी रै कनै ग्राय'र बोल्यौ—म्हारी जागा रोकी का नईं?

—भेळा हुय'र बैठ जासां""।

—ग्रा तौ खैर करसां ई""। सत्तार बोल्यौ।

च्यार बजगी, पण मोटर हाल टुरी कोनी। सवा च्यार वजगी। सत्तार नै पूछ्यौ तौ वौ बोल्यौ—मोटर भरीज्यां पछै रवाना हुसी।

—हाल भरीजणी बाकी है कांईं? मोटर मे खचाखच भीड़ ग्रर घूंवै सूं ग्रमूझ्योडै गिरधारी कैयो।

—हाल तौ इत्ता-रा-इत्ता लोग ग्रौर बैठसी!

—ग्रां सवार्‌यां माथै?

—ना, ग्रां रै कनै बैठसी ""ग्रर केई बैठसी मोटर रै ऊपर।

ग्रा सुण'र गिरधारी ग्रमूझ्योड़ौ हुवता थकाई मुळक्यौ। बीनै मुम्बई री डब्बल डैकर वसां याद ग्रायगी। वांनै ग्रांसूं सरखावण लाग्यौ वौ। ग्रोपन

ग्रेयर उब्वल डेकर ! ग्रेक विचार वी रै मगज में उपज्यो ग्रर इण नूंवे सबद री मौलिक सूझ सूं वो री छाती चवड़ी हुयगी !

—ड्राइवर सांब पधारग्या दीखै ! सत्तार बोल्यो।

गिरधारी बैठो नै देखण लाग्यो। ग्रेक मुड़दल-सी ग्रादमी। चिब्बो बैठ्योड़ा। मूंछ्यां जरूर भरवी ही। माता रा गैरा बण। ग्रांख ग्रेक ही, पण वा सरच लाइट री काम काढ़ै जैड़ी ! दूजोड़ी नै तो जाणै किणी ग्रंगूठै सूं दाव दी हुवै-ग्राली माटी रै गोळ में !

मोटर रो होरन बाजण लाग्यो दो-च्यार मिनख माय ग्रोरूं धसग्या। कोई ऊपर चढ़ग्या तावड़ै में 'ग्रोपन एयर डब्बल डेकर' री मजो लेवण नै ! मोटर टुरी, जितै साढ़ी च्यार वजण लागी।

थोड़ी ताळ पछै मोटर में धक्कम-पेल-सी हुवण लागी। ग्रारणियै मैसै सो ग्रेक ग्रादमी गळै में चमड़ै री वटुवो लटकायां, मूण्डै में पान चिगळतो ग्रावै हो ग्रर भाड़ो वसूल करै हो। गिरधारी ग्रर सत्तार ई ग्रापरो भाड़ो चुकायो।

—क्यों, सोरा तो हो नी माइ़ साब ! रापया कनै बैवती पीक नै बुसट री बांव सूं पूंछतो वो बोल्यो।

थारी मोटर में दोराई क्यां री ? सत्तार बोल्यो जाणै फस्ट क्लास ग्रेयर कण्डीसड डब्बै मे ग्राराम सूं सिगरेट पीवतो मुसाफिर बोल्यो हुवै ! गिरधारी मांय री माय मुसळीजतो हो। ऊंधी सूंधी गाळ्या काढ़तो हो। थोड़ी ताळ पछै गिरधारी सत्तार रै कांन मे कैयो—गुरू ! ई बस में बैठ'र भाड़ो देवणो तो साव बेकायदै री बात है। ग्रो ढंग ढाळो देखतां तो जिको ग्रापरै गाव जीवतो पूग जावै वी नै फूल माळावां पैरा'र ग्राखै गाव में घुमावणो चाईजे !

—परवाह मा कर, थारो केस ई खाडो कोनी हुवै !

मोटर चाल्यां जावै ही। बीच-बीच मे ग्रावतै ठेसणां माथै मोटर ढबती ग्रर नुंवी सवार्‌या लियां जावती।

सिझ्या पूणीक ग्राठ बजी मोटर गाव पूगगी। मोटर सूं हेठै उतर्‌या पछै गिरधारी री ग्रांख्या ग्राडा तिरवाळा-सा ग्रायग्या। बिण उबासी ली। ग्रठी-उठी देखण लाग्यो।

—पैली सामान उतार लेवां, पछै कड़क चाय पीसां। सत्तार बोल्यो—पण ग्रा तो बता कै माळावां पैर'र गाव मे घूमसी ? जीवतो पूगग्यो है लाडी ? ग्रर दोनूं हसण लाग्या।

थोडीक ताळ में च्यार-पांचेक मास्टर भेळा हुयग्या । बातां में ठा पड़ी के सिझ्या पड़्या पछै पीपल रै गट्टै माथै श्राय र श्रै लोग बैठ जावै श्रर मोटर नै उडीकै । मोटर श्रावै जणा थोडीक ताळतांई बठै चैल पैल श्रर बात-बंतळ रैवै । पछै म्हाराज श्रापरी चाय री दुकान वढ़ा'र घरां जावै परा । मास्टर श्रर दूजा लोग गुद्दी कुचरता, उबास्या खावता, बीड़ी पीवता का जरदै री पीक थूकता, खुडिया रगड़ता श्राप श्रापरी कावकां कानी टुर जावै । मांचा माथै पड़्या पसवाड़ा फोरता घांसता-खंखारता भाख फाटण नै उडीकता रैवै !

गिरधारी री श्राख साढ़ी पाच वज्यां खुली । विण श्रापरी श्राख्या मसळी श्रर श्राभै कानी देख्यौ । श्राभै में तारा गूमळा पड़ग्या हा ।

रोजीना री श्रादत मुजब बिण दांतण कर्‌यौ श्रर फेर श्रेक लोटौ पाणी पी'र निमटण सारू टुरग्यो । बिण सत्तार नै पूछ्यौ तौ बौ श्राख्यां मसळ'र गीड बिछावणै रै श्रेक खुणै माथै मसळतौ बोल्यो–तूं निमटीया भायला । म्हैं तौ सिझ्या नै जाया करूं ।

बिण गिरधारी नै बताय दियौ कै पैली तौ नाक री डाडी जावौ कर्‌यै श्रर फेर डावै कानी मुड जायै ।

गिरधारी निमट'र श्रायौ जित्तै ताई सत्तार मांचै-माथै बैठ्यौ बीड़ी पीवै हो । कांई टेम हुयग्यो ? सत्तार श्रापरी घड़ी में चाबी भरतां पूछ्यौ– म्हारली घड़ी तो रात नै बन्द हुयगी वेटी !

—साढ़ी छव ! गिरधारी कैयौ श्रर न्हावण खातर वाल्टी भरण लाग्यौ । सत्तार ऊठ'र स्टोव मे पम्प मारण लाग्यौ ।

बिण टोपियै में पाणी घाल'र स्टोव माथै मेल दियौ । गिरधारी न्हायौ जित्तै चाय तैयार हुयगी । चाय पी'र दोनूं तैयार हुवण लाग्या । सत्तार 'ड्राईक्लीन' कर'र जूता पैर्‌या । बौ बोल्यो—श्रावो चालां !

गाव रै श्रेक छेड़ै स्कूल बण्योडी ही । स्कूल में कोकरिया ऊग्योड़ा हा । चौफेर काटा री वाड । स्कूल रै लारै देखा तौ च्यारूं मेर धोरा ई धोरा ।

स्कूल दो सिफट मे लागती । दिनूगै सात सूं साढ़ी बारै तांई पैली सिफट । जिण में छठी सूं दसवी ताई रा छोरा श्राया करता । फेर साढ़ी बारै सूं पांच तांई पैली सूं पांचवी ताई रा छोरा ।

स्कूल री हालत देखण जोगी ही । नवमी-दसवी में सात-सात छोरा । पूरी सिफट में गित्तरेक छोरा नीठ हा ।

गिरधारी नै लखावतो कै श्रठै वगत श्रजगर दांई पसर्‌योड़ो पड़्यौ है । श्रेक श्रेक दिन हफ्तै दाईं बीततौ लखावतौ ।

अठै बगत कटै किया कोनी ? बौ केई दफै सोचतौ।

दिनूगै ऊठो अर चाय पी'र स्कूल जावौ। साढ़ी वारै वजी छूट्या। डेढ़-दो ताई रोट्या सेको। चाय'र मांचै माथै आडा हुय जावौ। पछै च्यारेक बज्यां चाय पी'र वारै निकळो। वां सागी'ज च्यार पाच मास्टरा कनै जाय आवौ का पछै संग भेळा हुय'र कठैई बैठ जावौ। पीपल रै गट्टै माथै जावौ परा। वठै 'चर-भर' खेलतै लोगां नै देखौ का पछै दो-दो जणा खुद ई 'चर-भर' मांड र रमण नै बैठ जावौ। सरू में तौ बीनै 'चर-भर' देखण में कीं रस आया करतौ। बौ लोगां री बाता सुणतौ–हे लै····आ चाली। अबै खोल उकरास।

—उकरास देवूं, क्यूं हियौ फूट्योड़ौ है कांई ?

—डोफा ! उकरास दे ना दियै। लारै फाडी पड़ी है।

—अेक र देय'र देख तौ सरी। मूतिया बंद नीं कर देवूं तौ नाव फोर दियै।

वांरी वातां सुण-सुण र गिरधारी नै मजौ आवतौ। थोड़ै दिना पछै वौ खुद इ 'चर-भर' खेल'र बगत काटण लाग्यौ। पण तौ ई बीनै लखावतौ कै वगत कट नीं रैयो है। वो वी सोसाइटी में खुद नै मिसफिट मैसूस करतौ !

—लै आव, चालां····। गिरधारी कैयौ।

सत्तार उथळौ दियौ—इत्ती कांई लथावळ है। कमरै में जाय'र ई कांई करसां बठै जाय'र माचै माथै ई तौ पड़णौ है। मोटर देख'र चालसां।

—कोई आवण आळौ तौ है कोनी। गिरधारी बोल्यौ।

—कोई नीं आवौ भलांई। मोटर तौ आसी'ज ! ई वगत ई तौ गाव में थोड़ी चैल-पैल निगै आवै। अर आपां ई बगत कमरै में जाय'र मरीजां वाईं पड़ जावां ! हुऽऽ ! बीड़ी सिळगा'र फेर बोल्यौ—इंयां उफत्यां अर उदास हुयां काम कोनी चालै !

—मन नीं लाग रैयौ है।

—सरू-सरू मे इंयां ई हुया करै। पछै अै ई बातां आछी लागण लागै !

थोड़ी ताळ पछै सत्तार बोल्यौ—लै देख, बठी नै देख। बौ बजरंग आवै अर वीं रै साथै कैलास ई है। अै ई मोटर री रोनक देखण खातर आय रैया है। अर तूं कैवै कमरै में चालां।

गिरधारी बठीनै देखण लाग्यौ।

वै बट आय'र गट्टै माथै बैठग्या अर मोटर नै उडीकण लाग्या। कैलास चाय री कैयौ। पछै गिरधारी नै पूछण लाग्यौ—क्यूं, गांव में मन लाग्यौ का नईं ?

—पंछी उदास है ! सत्तार बोल्यौ ।

—सैंर ग्राळां नैं गांव में कम ई आवड़ै ! बजरंग बोल्यौ—सैंर रा जीव तौ सैंर में ई राजी रैवै !

—पण सैंर में रैवण रौ पट्टो थोड़ी लिखवायोड़ौ है !

—प्रमोसन हुवै जणा तो ग्रेकर वारै भेजै ई है ।

—प्रमोसन क्यां रौ ग्रो तौ पनिसमैंट है !

—ग्रोर नी तौ कांई ? सत्तार बोल्यौ—घर छूटै ग्रर विना मतलब ई दो चूल्हा हुय जावै । दोलडा खरचा हुवै ।

—घाटौ तौ साफ दीखै ई है । ग्रवै देख लै, गिरधारी प्रमोसन लेय'र ग्रायौ है । कंवण नैं तौ दो इनक्रीमेण्ट रौ फायदौ हुयौ, पण ग्रसल में तौ सवा सौ, डेढ़ सौ रौ घाटौ हुयौ है । फेर बीड़ी रौ धूंवौ छोड'र खुलासौ करण लाग्यौ—सब सूं पैली तौ पचास रुपिया हाउस रैंट मिलतौ, बौ बन्द हुयौ । ग्रठै गांव में ई चाळीस रुपिया कमरौ भाड़ौ देवौ । गया नी निब्बै रुपिया तो पूरा ! पछै ग्रायै सनिवार सैंर जावौ जणा हरेक दफै पन्दरै रुपिया वैं गया । महीनै में साठ तौ ग्रै गया । फेर ग्रठै रैवां जणा खावण-खरच ग्रर चाय बीड़ी रा जित्ता गिणौ, वैं ग्रौरूं गिण लौ । ग्रवै जोड़ौ । ग्रर फेर हां, बठै घर ग्राळा रैं खरचै में तौ रत्ती भर ई फरक कोनी ग्रावै । ग्रौ खरचौ न्यारौ बंध जावै ।

चाय पीवौ परा । ग्रै खरचा तौ इंया ई लाग बो करसी ! कैलास बोल्यौ—लै गरु, पी परी ! गिरधारी चाय पीवतौ-पीवतौ सोचतौ रैयौ कै ग्रौ सौदो तौ घाटै रौ रैयौ । प्रमोसन नी हुवतौ तो ई ठीक हौ ।

चाय पी'र सैंग ग्रापो ग्राप री गिलासां धोय'र धर दीनी । मोटर ग्रायी ग्रर थोड़ी ताळ री चैल पैल पछै लोग खिंडण लाग्या । गिरधारी ग्रर सत्तार ई कमरै में ग्राया ।

रोटी करा कांई ? गिरधारी पूछ्यौ ।

कित्ती रोट्यां पड़ी है ?

पांचेक फलका पड्या है ? ग्रेक बाटकी साग है ।

थोड़ा भुजिया पड्या हा नीं ?

हां, है नी ।

फेर वळण दै । कुण माथा फोड़ी करैला । बियां कोई खास भूख तौ ग्राय कोनी !

हां, दो फलका नींठ भासी । दो वजी तौ जीम्या ई हा । हाल तौ ग्रागलो ई हजम कोनी हुयौ ।

आलू कांदा री साग अर मुजियां सूं रोटी खाय र दोनूं मांचै माथै बैठग्या। ट्रांजिस्टर रा सैल डाउन हुयोड़ा हुवण रै कारण वौ घर्र घर्र करतौ हो। आवाज साफ नी आवै ही।

अबकै सनीवार नै सैर चालसां नी ?

हां, सनियार नै जरूर चालसां ! सतार री आवाज में हरख हबोळा मारै हौ।

आज काई वार है ?

मंगळवार है !

हाल मंगळवार ई बीत्यौ है ? हाल तौ सनीवार आडा निरा दिन पड्या है। बुध, बिस्पत, सुकर अर सनी.....हे राम !

वै दोनूं बत्ती बुझाय'र सूयग्या। पण नीन्द कोसां दूर न्हाटगी। पसवाड़ा फोरतै गिरधारी नै घडी घड़ी श्रोई लखावतौ कै वै दिन अर बौ ग्रेड आछौ हौ, जद दोनूं वगत घरा बणी-बणायी ताजी रोटी मिल जाया करती ही। अर इण भांत सनीवार नै उडीकणौ कोनी पड़तौ।

बी नै लम्बी उबासी आयी। अंधारै में की-की सुणीजतौ लखायौ—प्रमोसन क्या रौ.....ओ तो पनिसमेंट है, पनिसमेंट ! असल बैठा हा आराम सूं घर में। उठाय'र टेक दिया बारै !

गिरधारी पसवाडौ फोर'र सूवण री कोसिस करण लाग्यौ, पण अंधारै में वै आवाजां तर-तर तेज हुयां गयी।



छोरौ विगड़गौ

☐ उदयवीर सरमा

खुल्ली चोखी सोवणौ दिन हौ। सीळी पून को चाल री ही ना। गणेसाराम आपरी रिस्तैदारी में जा'र आपरै गांव कानी बावड़र्यो हो। मारग में सोवणै दिन नै देख'र विचार आयौ "टाबरियै सूं मिळ चालां। देखां किमोक ठाठियो बाघ राख्यो है ? घणीवार चिट्ठियां में मिलण बुला चुक्यो। आज मौको है। वो नैं छुट्टी में घरै आया घणा दिन हुया। ब्याव करया पछै आयो ई कोनी। टाबर तौ सुपातर है, कहे में है। चोखो कमावै है। स्याणौ समझदार है। फेर इवी उमर ई कितणी ? जवान बणतो टाबर है। धीर्‌यां-धीर्‌यां टेम पा'र और उन्नती करसी, ऊँचो-बड़ो होसी। चोखा पीसा कमासी। मेरे तो चारुवा मे सूं यो छोटकियो ई घणो चातर अर सीळ सुभाव री निकळ सी।" इयांल के विचारां रै वेग सूं गणेसाराम री छाती फूलगी अर वीरी प्रेम धारा छोरै सूं मिळण नै चाल पड़ी।

घड़ीक चाल्यो, रामगढ़ आगो। गणेसाराम कनै आपरै छोरै री पूरौ ठिकाणो-पतो को हो नी। पण वेरी हो सरकारी कुवाटरा में रैवै है। बस नम्बर याद कोनी। बूझतो-बूझतो कुवाटरा मे आ लियो। कुवाटरा मे आ'र घणी भगा दौड़ करणी पड़ी। कोई आवै "इन्नै" बतावै, कोई आवै "बिन्नै" बतावै। अेक जणो बतागो, दस कुवाटर छोड'र आगै अेक सड़क आवैगी, सड़क सूं चाल'र अेक हाथी मड्‌योड़ौ कुवाटर आवैगो, बीनै बायो छोड'र आगै सीधा चल्या जाओ, पाचवो कुवाटर विना रो ई है। और आगै पूछ लियो" गणेसाराम री चोखी गोडा तुड़ाई हुवै। कुवाटर को लाधैनीं। फेर अेक जणो मिल्यो, वो बतायो, "थे ऊळा आगा। इण तरफ तो से बैंक अर अेल. आई. सी. में काम करणिया रैवै है। थारो छोरो किण म्होकमै में काम करै है ?"

गणेसाराम ग्रावतो सो हो'र बोल्यो "म्हेकमो तो मेरै ठीक सावळ याद कोनी, पण बो तेंसील में काम करै है । बी रो नाम चतरसिंघ है ।" बताणियो बोल्यो "थे इण सड़क सडक चल्या जावो, जठै या सड़क खतम हुवै, बठै सूं दांयै हाथ कानी मुड़ज्यायो, ग्रागै चाल'र ग्रेक बड़ रो बिरछ ग्रासी, बिण सूं बाया चाल'र सौ-ग्रेक कदम थे चालस्यो जणा तेंसील हाळांरी कोलोनी ग्रासी । बठै थे पूछ लियो । थांनै ठायो ठिकाणो मिळ जासी । गणेसाराम पग तुड़ाई करतो फिरै, पण छोरै री कुवाटर को लाधैनी । जितणो जोर दस कोस चाल'र कुवाटरां नेंड़ै ग्रावण में को ग्रायो नी, बितणो जोर कुवाटर-कुवाटर छाणनै मे ग्रायो । पण तोई ग्रेढ़ो मिल्यो कठै ? दिनरा ग्राठ सूं बारा वजण में ग्राई, इब ग्रायोड़ो बिना मिल्यां कियां जावै ? सांप- छछूंदर री गत हुयगी । ग्रोरूं कुवाटरां में पग तुड़ाई करै लागो ।

चालतो-चालतो रेवैन्यू कुवाटरां मे ग्रायो । पूछताछ करी । ग्रेक जणो ग्रापरै कुवाटर सांमी ऊभो हो । तेंसील में काम करतो । वो चतरसिंघ नै चोकस जाणतो । सो वो गणेसाराम नैं ग्रापरै कुवाटर में लेगो । स्वागत सतकार मे चाय प्याई । निरणावासी गणेसाराम रै पेट में क्यूं पड़्यो । जी में जी ग्रायो । हिम्मत बंधी । ध्यावस ग्रायो । चाय पीता-पीता बतळाया, "चतरसिंघ जी पैली इणी कुवाटर में रेंवता । इब बै छोड़'र सहर मे चल्या गया । बठै बांनै क्यूं बडो ग्रर सज्योड़ो मकांन मिळगो । ग्रठै सूं दो कोस दूर पड़सी तांगै में चल्या जायो । म्हैं थानै पूरो पतो दे देस्यूं । फोड़ा कोनी पड़सी । 'सिंघजी' ग्रादमी घणा लूंठा है । मस्त घणा । पीसै कानी कोनी देखै । गोठ-घूघरी रा तो भोत प्रेमी । घूमणै रा घणा सोकीन । कदै-कदै सभा सोसाइटी में 'पकाळियो खाण-पाण' ई करै लागा । थारा बै कांई लागै ?" "बेटो"

इब वात बदळतो वो बोल्यो, "मेरो मतलब यो नीं है कै बै बिगड़गा या कोई कुलत है । घणा स्याणां है । लैण पर है । म्हारा तो बै सैकटरी है । कुलखण तो वा रै नेड़ै ई को ग्रावै नीं । भोत घणा मैनती है । खटकै पीसा कमाणिया है । कोई री सेवा-सहायता करणियां ई है, कराणिया कोनी । बै सैरा प्यारा "सिंघजी है ।"

बेटै री बडाई सुण'र गणेसाराम री छाती फूलगी ।

छोरै सूं मिलण ताईं पग तुड़ाई करतो गणेसाराम वीं रै बतायेड़ै ठिकांणै मुजब ग्रोरूं चाल पड़्यो, पण इत्ती ठायचो कटै ? दो री तीन कोस लठरी जात निकळी, पण गणेसाराम चालणियो ग्रादमी हो । के भावै ही ? पूछतो-पूछतो इवकै ठायचैसिर ग्रा लियो ।

मकांन सामी ग्रा'र देखै तो छोरै री नाम ग्रेक काठ री पाटी पर लिख्योड़ो टंगर्यो हो। गणेसाराम नै थोड़ा घणा नांव बांचणा ग्रावंहा। वो मकान में चल्यो गयो। सोवणो बाग बगीचो देख्यो। मन हर्यो हुयगो। ग्राखर किसान रो छोरो है। हरियाळी सूं प्यार होवणो ई चाहिजै। वी हरियाळी मे दो च्यार मुड्डा-कुरसी पड़ी ही। बीच में टेबल रखी ही। पण सुनसान कीनै पूछै ! दुरजे कानी गयो तो लिख्योड़ो हो "बुलाने के लिए घंटी बजाओ" इब गणेसाराम नै बेरो कोनी कै घंटी कियां बजसी ! पण वो बटंण नै छेड़ दियो। छेड़तां ई मायनै टरनाट उपड़यो। घंटी ग्रापो ग्राप बाजगी। थोड़ी देर में दरवाजो खुल्यो।

देखै तो ग्रेक फररी-फूटरी, दो चोटला करयां, टरकूं मरकूं करती ग्रेक जवांन सी लुगाई ग्रघ जड़िया कुंवांड़ा में सूं सावळ दीखी। मांय सूं तन रा पळका पटकण हाळी लाइलून री ग्राडं पल्लै री साड़ी बाध्यां ही, जिण मे सूं ग्रेक बिलांदियो कब्जो भळकै हो। ग्रेक हाथ में कांच री विदरंगी चूड़ियां दूज में चूड़ियां री जघां घड़ी ही। मुखड़ै रा मन भावणा ग्रंग भांत भात रै रंगां रै साज सूं सज्योड़ा हा। इयां लागै हो जाणै बा कठै ई जावण नै सज्योड़ी ही। पगल्या धरती पर उभाणा ई टिकर्या हा।

इसो सरूप जिंदगी मे नेड़ै सूं पैली वार देख'र गणेसाराम हैक-बैंक हुयगो। बोल को उपड़ै नीं। बिसवासई को होयो नी कै मैं मेरै छोरै रै घरूं खड़्यो हूं। मैम हुयगो, कठै जूता नीं पड़ज्या। या घंटी काई बजगी, नाटक रो पड़दो सो ई खुलगो यो कांई जादू है ? या सांपरत चीज है। मन, माथै ग्रर मुखड़ै मे तो उथळ पुथळ हुवै, पण जीभ को चाली नी। इतणै में वा देवी बोल पड़ी "थे कुण नै पूछो हो" इब गणेसाराम री वारी ही बोलण री बोलणो पड़्यो, "चतरसिंघ ग्रठै ई रैवै है कांई ?" "हां, पण वै तो बारै गयोड़ा है।"

गणेसाराम सुण राखी ही कै दीतवार नै सै नोकर घरै ई रह्या करै है, दफ्तर को जावंनीं, बोल्यो, "ग्राज तो दीतवार है बारै क्यूं कर गया ?" "ग्रेक भायलै रै ग्रठै दावत है, वीं में गया है। मै ई बठै ई जावण त्यार हो री हूं। मन्नै कपड़ा पैरण में क्यूं देर लागगी। वै पैली चल्या गया। मैं इब जा री हूं। बोलो कोई काम हो काई ?" "फेर ग्रासी कद" "रात रै बारा ग्रेक वजे तक। पैली दावत में जाणो है, फेर ग्रेक सहेली रै मन्नै जाणो है। पीछै सिनेमा देखण रो प्रोग्राम है। रात री ग्रेक वज ज्यासी। थे काल मिळ सको हो दस वजे पैली पैली।"

गणेसाराम को सोच सक्यो नीं कै इब कांई करणो चाहिजै ? ठैरै तो कटै ठैरै ? बो तो या ई को पूछ सक्योनीं कै थे कुण हो ! चतरू्य री के लागो हो ? सूरज सामी ग्रांख्यां हुया ज्यूं पळको लागै ग्रर थोडी देर तक क्यूं ईं नी दीखै बियांल ई गणेसाराम री ग्रांख्यां सांमी तिरमिरा ग्रावै लागा। बो तो घबरागो बोल को उपड़ै नीं। सहर री इसी लुगाई नै कदै देखण री कांम जिंदगी में ईं को पड़्यो हो नी। बोलणो-बतळावणो तो दूर रह्यो गणेसाराम सैंग-बैंग हुयो सड़्यो।

बिन्नै घड़ी रा सुइया ज्यूं ज्यूं "चल चल ग्रागै चल चल" करता बढ़ता जार्‌या हा त्यूं त्यूं मन जावण री तावळ करै हो। गणेसाराम नै गूंगो सो खड़्यो देख'र बा भाळ खा'र "ठीक है काल मिलियो" कैंवती किवाड़ जड़ लिया। इब गणेसाराम ग्रेक लो बारै ऊभो। क्यूं थ्यावस ग्रायो। चित में चेत ग्रायो। घर रै बारै निकळ'र मापरै गांव रो गैलो पकड़ लियो।

गणेसाराम रै घरै पूंच्या फेर दो दिन पाछै चतरसिंघ रो कागद ग्रायो। लिखी "काका तू मिलण ग्रायो पण मैं घरै को मिळ सक्योनीं। माफी चावूं।" बांच'र गणेसाराम रै पकायत जंचगी कै बो कुवाटर मेरै छोरै री ई हो पण सोचै "बा छोरी कुण ही ? बी री बींदणी सी तो को लागै ही ना। ब्याव हुयां पाछै इबी ग्रठै तो बी नै ल्याया ही कोनी। बीं रा तो पळका पड़ै हा। मेम री बच्ची हो री ही। के चतरै री बींदणी बा हो सकै है कांई ? ल्हाज सरम तो बी रै नेड़ै ई को लागी नीं। ब्याव में तो इसी कै, क्यूं ईं को जांणै ही ना। घाघरियो को सम्हे हो ना, लूगडती पड़ पड़ जावै ही। पण छोरै नै सहर री फैसन लागी। या के हुई ? इब कांई हो ? छोरो बिगड़गो।"

सोचतो-सोचतो बो खेत रै कांम धंधै में लागगो, पण मन मे इयांलकै भावा री उथळ पुथळ हुवती रैई।

☐

जेवड़ी

☐ कमला वरमा

डाक्टर साव रै ई बंगलै में ऊपरली कमरी सौ रुपिया किरायै में मिळग्यौ। बंगलै मे लाग्योड़ी हरियाळी, दूर तक जावती साफ सुथरी सड़क, नीम, पीपळ अर बड़ रा अै भारी भारी दरखत""""स्याम नैं सुरग री पगोथियौ ई मिळग्यौ।स्याम री आदत घर सूं बारैं भटकण री, यार भायलां में मन रमावण री जरा सीक ई नईं। स्याम नै चाईजै अेकान्त, हवादार कमरौ, जिकै सूं बारै दीखै, आख्यां नैं तिरपती देवण वाळी चीज्यां।

डाक्टर साव री पत्नी निरमळा देवी री बोली में ई कित्तौ मिठास है। ईं ममताळ सभाव नैं देख'र तो स्याम निरमळा देवी में मां दुरगा री छवि देखी। हाथ जोड़ आभार प्रकट करियौ अर विनम्र संबदां में स्पस्ट ई करियौ के बौ आपरी तरफ सूं बंगलै री आब बिगाड़ैला नईं।

—स्कूल में कईं कईं पढ़ाया करौ ?

—संगीत सिखाया करूं।

—लड़क्यां री स्कूल में हौ ?

—हां जी।

—ट्यूसन ई करौ ?

—संगीत रा ट्यूसन मिळै ई कठै ?

—म्हैं दिरवा देसूं। खनलै बंगलां में संगीत सीखण वाळी टाबरटोळी घणी निकळ जासी।

—ना जी, म्हे समरथ कोनी। म्हनैं वगत ईं। कोनी"""म्हैं स्टेज पर गाया करूं, अभ्यास करण नैं टेम चाईजै""",

—जणै तौ थांरी संगीत मंडळी अठै रोजीनां जमैला कईं ?

आपनैं कोई तकलीफ नंईं हुवैला। म्हैं अेकलौ वैठणियौ जीव हूं कमरौ बन्द कर अेकलौ ई अभ्यास करूं.........यूं म्है लेखक ई हूं, कविता, कहाणी लिख्या करूं.....ईं खातर न्यारी निरवाळी सी क आदत्यां है। आपनैं किणी भांत तंग नंईं करूं'ला।

वा ऽऽ वा, सोनैं में सुहागौ मिलग्यौ। म्हनैं तो सगीत रौ घणौई सौक है। अेक र संगीत स्कूल में सरगम्यां घरगम्या म्हे ई सीखी, पण डाक्टर साब री गिरस्ती संभाळण में पार पड़ी कोनी.........मांय मायं अनूभती अेक दो वार लेख अर कहाण्यां म्है ईं लिखी.........म्हनैं तो थे मन पसन्द साथी मिलग्या.........कित्तीक किताब्यां छपगी है ?

—किताव तौ छपी कोनी पत्रिकावां में थोड़ी घणी जगा मिळ जावै।

थोडी वातचीत में ईं स्याम समझग्यो के वौ ईं परिवार सूं गरिमामय सम्वन्ध वणा सकसी। निरमळा देवी सूं वीरो चेतना में अेक ऊरजा ई आ सकसी निरमळा देवी आम घरेलू औरत सी ई नंईं है, आधुनिकता री अटपटी चादर ओढ्योड़ी ई नईं दीखै.........ईं औरत रै रुख मे ई अेक अलग अंदाज है.........अेक विचित्र चीज है।

चाळीस पैंताळीस साल री निरमळा देवी में उमर सारू प्रौढ़ता नंईं है, अेक ठैराव होवणौ चाईजै वौ ई नईं लागै। जद डाक्टर साव बोल्या—देखो जी, थारी भाभीजी नैं संगीत अर साहित्य रौ रसास्वादन करावणौं मत भूल्या, आंनैं कलाकारां सूं वेसीज लगाव है।

निरमळा देवी चिमक'र बोली—कलाकार री कदर म्हैं ईं जाणूं, नीरस डाक्टर कला री नाड़ कईं समझै ?

कोई अणजांणं आदमी परसाद देवै, घोबा भर भर.........अजूबौ लागै क नी ? स्याम ई सोचतौ के निरमळा देवी इत्ती खातिरदारी, सम्मान अर सनेह कईं मकसद सूं करै ?

केई दिन जिद राखी के स्याम डाक्टर साब री रसोई में ईं जीमैला घणी टाळमटोळ अर बहाना लगाया, पण निरमळा देवी मानैं ईं नंईं। दुपहर में स्कूल सूं आवै थाळ तैयार। सिंझ्या रा डाक्टर साव अस्पताळ जावै अर नास्तौ तैयार। रात रा दस बजी फेर भोजन री मनवार।

आखिर डाक्टर साव री मौजूदगी में स्याम हाथ जोड़'र आपरी बात स्पस्ट कर दी—म्हैं गांव सूं दूर घणौ सीक अेकलौ रैयोड़ो हूं। पढ़तौ जणैं सूं ईं म्हनैं रोटी वणावण री आदत है। चटणी, रोटो अर खीचड़ी खावण

री आदत है, म्हैं इत्ती मनवार पचावण में घणी दोराई मैंहसूस करूं·······भोजन खातर माफी चाऊं।

निरमळा देवी मान तो गई पण दूसरै तीसरै सिझ्या री बगत कंईं न कंईं तस्तरी में राख'र लियावती अर जिद कर'र सामैं खणावती।

कंईं कंईं अन्दाज लगावतो रैवतो स्याम। निरमळा देवी रा दोनूं लड़का हॉस्टल मे वारै पढै·······वीं अभाव नै पूरो करती हुवैला, संगीत अर साहित्य रै लगाव री डोर नै कसण खातर ईं खातिरदारी सूं गांठ पक्की करणो चावती हुवैला। निरमळा देवी री वातचीत में खुल'र हिस्सो लेवणो चावतो, पण निरमळा देवी वीनैं अजूवी ओरत लागण लाग जाती अर वो सनेह री जागा संकोच अनुभव करण लाग जावतो।

—पत्नी कित्तीक पढ़ेड़ी है ?

—चौथी-पांचवीं

—जणाँइज सागै राखणी चावो कोनी,

—आ वात कोनी, म्हैं अेकल-खोरियो जीव हूं। वा भरै-पूरै परिवार में रमियोड़ी। दो छोटा छोरा है। गाव में दादी वडिया खनै बिलमीजै, बांनै अठै क्यों अळसाऊं।

—ठीक है। आदमी नैं इसोई हुवणो चाईजै। अै डाक्टर साव है नी, म्हारो साथ कदै ईं नी दियो। म्हनै दसवीं पढा'र मा-वाप आंरै लारै करी ही, जद तक अै पढ्या, आंरै मा-वाप री गुलामी करी, अब आपरी गुलामी करवा रया है। आरै खातर म्है संगीत स्कूल बिचाळै छोडी इन्टर रा फारम दो वार भर्‌या, यूं ईं गया। इत्ती हाजरी भरूं पण म्हारै हर काम में गलती काढ़सी।

यूं हर काम निरमळा देवी मन भरजी सूं ईं करती, पण डाक्टर साव री दो च्यार बुराई रोजीना करती।

—आप म्हारो हारमोनियम कई दिन राख लोनी, लिखियोड़ी स्वरलिपि रै सहारै थोड़ो अभ्यास करो·······मन में चैन आसी।

निरमळा देवी हारमोनियम लें'र राजी हुया। सप्ताह बाद ईं पण उतफग्या।

म्हनै अबै किसी क्लब में गावण री न्योतो मिळै है, स्याम जी, आप तो बस म्हनैं लेखिका वणवा दो,

—आप लिख्या करो, वणसी जिसी मदद जरूर कर सूं।

वा चिड़ी जिकी फुदक'र आंगण सूं सीधी छत पर चढणो चावै, निरमळा देवी ईं इणी प्रकृति री लागी। दूजै दिन स्याम स्कूल जावण खातर

नीचै उतर्‌यौ । 'निरमळा देवी चार-पांच कागज पकड़ा दिया—स्कूल में टैम काढ़ र देख लिया । रात खासी देर जाग'र कहाणी लिखी हूं ।

संझ्या नै डाक्टर साब रै ड्यूटी जावतां ईं ऊपर आ'र ऊतावळी सी पूछण लागगी—क्यूं किसी क है, म्हाणी कहाणी""कि दम है ?

—थोड़ै सुधार री जरूरत है ।

—तौ चटपट सुधार कर'र छपवादो ।

—आप खुद ईंनै दो-च्यार वार पढ़ौ समझो के कठै कमी है ।

—लाडी म्हनै इत्तौ टेम कठै ? आ तकलीफ थे ई करौ । जित्तै म्है दूसरी कहाणी त्यार कर राख सूं ।

रात नैं स्याम बी कहाणी सूं खासी माथा फोड़ी करी । सवेरै निरमळा देवी नै दे'र बोल्यौ—अब आप ईं नै 'फेअर' करलौ ।

—थारी स्कूल रै बाबू सूं टाइप करवाय लाओ ।

—वीं रै खनै कांम घणौ । यौ तौ नईं कर सकैला ।

भोळा जीव हौ थे तौ ! म्हा खनै सूं सैम्पल में आयोड़ी अेक-दो टॉनिक री सीस्या ले जाया, और ई कोई दवा धवा चईजै तौ ढूंड दिया, टैम निकळ आसी चट देणी ।

—वौ इण तरै रौ आदमी कोनी, लाओ म्हैं म्हारै हाथ सूं लिख देसूं ।

कहाणी, जिकी री रूपरग बीं री खुद रौ ई हौ, लिखतौ बगत स्याम सोचतौ रैयौ आ आफत बार बार आई तौ ?

साचांणी आ आफत रूटीन बणगी । चाय, कॉफी अर मिठाई री मनवार रै साथै निरमळा देवी बतंगळ रा झूंझळा ई झूंझळा पटक जावती । स्याम रै खातर कमरै रौ अेकान्त, बगीचै री हरियाळी, खिड़की सूं झांकतौ असमानी आभौ""अै सब गूंगा बणग्या । ना तौ आं दिनां बौ कोई धुन बाध सक्यौ अर लिखणौ तौ दूर, रचना रा पगलिया ई नंईं बण्या ।

दुपारै अेक बजी स्कूल सूं आ'र, सवेरै री बण्योड़ी खीचड़ी खावतौ अर दो-तीन घंटा नींद लेवतौ, सिंझ्या रा दो-तीन घंटा निरमळा देवी रै बतंगळ नैं झेलतौ झेलतौ घर सूं निकळतौ घूमघाम र घरै आवतौ ।

घणी वार डाक्टर साब रात नैं देरी सूं आवता । निरमळा देवी बीं बगत स्याम नैं नीचै बुलवा लेती, आपरी सहेल्यां सूं मिलवाती, केई किस्सा सुणावती""फेर लेखिका बणन री त्यारी में चहक चहक'र नवा नवा प्रसंग छेड़ती ।

—रचना भेजी जिकै री जवाब हाल तईं नंईं आयौ। पत्र लिख'र पूछ देखां।

बारै गयोड़े मिनख रै कागद री उडीक हुवै ज्यूंईं निरमळा देवी आपरी रचना रै निरणै री उडीक राखी।

ईं बीच स्याम निरमळा देवी सूं उफतीज ग्यौ। हाल तौ दो ढाई मईना हुया ईं घर आयां। अणूंती मनवार, अणूंतौ हेत स्याम रै जी रौ जंजाळ बणग्यौ, पण बारै सूं पूरी तरै सुभाविक बणवा रै प्रयास में रैवतौ।

रचना वापस आई देख, निरमळा देवी संपादक नै कोसती रैयी। सब जगां जाण पैचांण चाईजै भई। लेखक लोग तौ हाथोहाथ रचना स्वीकृत करवार आवै। अबकी थे म्हारै साथै आकासवांणी चालौ।

—म्हारै तौ बठै कोई जाण पैंचांण कोनी।

—म्हनै तौ जाण जासी। डाक्टर साब कोई अणजांण आदमी कोनी। थे बस साथै चालौ पण।

स्याम बी बगत कंईं जवाब नंईं दे सक्यौ। निरमळा देवी कित्ती बार पूछ चुकी, कद चालसां आकासवांणी! स्याम टाळमटोळ कर जावतौ। आखिर स्याम नै साफ जवाब देवणौ पड़ियौ—म्हैं आपरै साथै नंईं जा सकूं ला।

—म्हैं अेक इज्जतदार औरत हूं, म्हारै साथै कंईं अंतराज है?

काल रात नै ईं तौ आ इज्जतदार औरत दारू री बोतल लेंर बी रै कमरे मे आई ही—लेखक लोग दारू पीया करे है। थे सरमाळू आदमी हौ, म्हांसूं मांग लिया करौ।

स्याम अेक टक देखतौ रैयौ बोतल नै फेर निरमळा देवी नै—असल लेखिका तौ आप हौ। आपनै ईंरी दरकार है। खातिर राखौ। म्हैं नंईं पीऊं।

—म्हारै डाक्टरां रै समाज में तौ चालै ईं है। क्लब जावां जणै थोड़ी तौ चाखणी पड़ै। थे आ राखौ फेर जरूरत पड़ै जद मांग लिया।

निरमळा देवी बोतल राख'र जावण नै हुई।

—आ उठार ले जावौ।

स्याम भंवराटा चढ़ा'र बोल्यौ। बी रौ मन हुयौ दो-तीन लात्यां मार'र कमरै सूं बारै काढ दूं, माथै सूं आ बोतल फोड़ दूं।

—खनै राखण में कईं अंतराज है?

—आप उठा'र पाछी ले जावौ। अबार रा अबार....ईं घड़ी।

निरमळा देवी अेक निसरमी हंसी हंसर बोली—ले जासूं लाडी इत्ता लाल पीळा क्यूं हो वौ !

निरमळा देवी रै साथै जावणौ तौ दूर, दो मिनट बात करणौ ई अब तौ दोरौ है ।

—म्हे दूजी ठौड़ मकान ले लियौ, अै लौ आपरै किरायै रा रूपिया, बस म्हैं जाऊं हूं ।

स्याम सोच लियौ हो के इं कमरे नै छोडण में ई लाभ है । अेकर स्कूल में ई जा'र टिक जावां, फेर दूजी ठौड़ देखता रैसां ।

—ना ऽ ऽ ऽ, कठैई जांणै री जरूरत कोनी । म्हैं तकलीफ घणी देऊं ? ''''वा अब कई नई कैऊंला थे कमरे में बैठो । लिखो पढ़ो बगत मिळै तौ बतळा लिया नई तौ कोइ दोराई कोनी ।

निरमळा देवी री आंख्या पाणी सूं भरीजगी—इयां मोह लगा'र जाया करै कंई ?

स्याम कमरै री खिड़की खनै सूं बारै देखतो रैयौ—असमांनी आभै नै, दूर जावती सड़क नै बिना कोई अरथ रै ।

—तौ इयां करां आ रचना आकासवाणी में लिफाफै में घातर भेज दां । थोड़ा दिन बाद फोन सूं पूछ लेसां''''लौ चाखौ तौ''''आगरा सूं आयोड़ी दाळमोठ है''''

स्याम नै चुप देख निरमळा देवी तस्तरी राख'र नीचै चली गई । स्याम री जी हुयौ तस्तरी उठा'र खिड़की सूं बारै फेंक दूं ।

पण स्याम चुपचाप माचै पर बैठ ग्यौ । बी रै सरीर पर अेक जेवड़ी सी बंधगी ।



सुपनौ

□ भीखालाल व्यास

आज रांमू भाग फाटी रा ऊठगी ! यूं तौ वा नितरोज वैगी ऊठ जावै, पण पछै जठा तांई दिन नीं चढै वा घट्टी फेरती रैवै। गळी रै मिनखा री पीसणी करै—आठ आंन माणी। नित री वा दोय मांणा पीस देवै। पण आज वा ऊठनै घट्टी खनै नीं गई।

रांमू ऊठ'र झाड़ू काढ्यौ, बरतनो रै हाथ फेर्यौ अर आय'र बारोख खनै बैठगी। आज सात वजियां री गाड़ी सूं उणरौ बेटौ मोवन आवण-हाळौ हौ। उणरी कालै कागद आयौ हौ, जिणमें उणै आज जरूर आवण रौ कह्यौ हौ।

रांमू रै मोवन अेकाअेक बेटौ हौ, जिणरै आसरै उणै आपरै रंडापै रा अठारै बरस काढ्या हा। बाळपणै ई उणरौ धींद उणरै खोळा माय तीन महीना रौ टाबर छोड़'र रांमसरण व्हैग्यौ हौ। रांमू री दुनिया सूनी व्हैगी ही। उण बापड़ी सुख रौ चांदणौ कदै ई को देख्यौ नी, खावण-पीवण अर पैरण-ओढण सूं पै'ली उणरौ सिन्दूर उजड़गौ हौ।

दिन आयौ अर रात गई—अर आज उणरौ बेटौ ई अठारै बरस रौ व्हैग्यौ....रांमू ई इण अठारै बरसां में डोकरी व्हैगी ही....आज उणरौ बेटौ नौकरी लाग्यां पछै घरै आय रह्यौ हो। रांमू रै हियै मांय उछाव बढ़ रह्यौ हौ....उणरै आचलां माय सिंदूरी कीड़ियां चालण लागी। वा सोचण लागी। उणरी आख्यां आगै दसेक बरसां पै'ली री चितरांम फिरग्यौ।

मोवन उणटैम तीजी किलास में पढ़तौ हौ। दोपार रा वौ घरै आयौ तौ उणरी मा सूखौ सोगरौ मिरच सूं लगाय'र खावती ही। मोवन औ देख्यौ तौ अचूंभै रैग्यौ। हालांकि मोवन इण बात नै जांणतौ हो के वै गरीब

है पण रामू उणनै कदेई दुःखी नी कियौ हौ। खुद भूखी रैवती पण उणनै चोखो खरावती-पीरावती-पैरावती-ग्रोढ़ावती।

मोवन बोल्यौ—ग्रौ कांई मा ! थूं इसौ सूखौ सोगरौ क्यूं खावै ?

—यूं ईं बेटा, ग्रौ कालकौ पड़ियौ हौ, बारै फेंकण सूं कांई फायदौ। थूं तौ इसकूल जावै, मैणत करै, जिणयूं थनै तो ऊनो खरावूं तौ ठीक रै वै। म्हारै कांई काम करणौ पड़ै ! यूं ईं ग्राखौ दिन बैठी रैवूं, पछै सरीर खिड़कै नै किसो मालाणी मे वेचणौ है। केय नै वा फीकी हंसी हसती पाणी रै घूंट साथै कवौ गळा सूं नीचै उतार दियौ।

—नीं मा ! म्हैं थनै इसौ नी खावण देवूंला। कैय'र उण मा रा हाथ मांय सूं टुकड़ौ उठाय'र बारै फेंक दियौ।

रांमू उणनै कीकर कैवती के ग्रापां गरीब हां, ग्रापां रै भाग मे इसौ ई लिख्योड़ो है। ग्रै ई धणी मुसकल सूं मजूरी कर'र लावूं हूं। उण ग्रेक सुपनौ संजोयौ हौ। मोवनियौ मोटौ व्हैला, पढ़-लिख'र नौकरी करैला, *तिणखा लावैला जद उणरै किणी बात री कमी नीं रैवैला। वातां करतां* दिन जावैला परा।

दसवी पास कर'र मोवनियौ जिण दिन घरै ग्रायौ हौ, वा घणी राजी व्ही। मोवन उणनै कह्यौ—मा, मीठी मूंडौ नी करावै। ग्रर उण ग्रापरै पल्लै बध्योड़ी ग्राठानी उणनै देय दीनी ही। उण रात रांमू सफा भूखी सूती ही, उणरौ हियौ इणबात री गवाही देवै।

गाड़ी की सीटी सुण'र उणरी तन्द्रा टूटी। वा सोचण लागी हमे मोवन गाड़ी मांय सूं उतरग्यौ व्हैला। हमें रवानै व्हैग्यों व्हैला। उणरी गाड़ी माथै जावण री घणी मंछा ही, पण उणरै खनै पैरण जोग कोई ढग रौ गाभौ ई नी हौ। उण सोच्यो ग्रैड़ा फाटोड़ा गाभा मे वा जावैला तौ मिनख उणनै ई देखैला, पेंट-सूट पेर्योड़ो मोवन ग्रर खनै फाटोड़ा गाभा पेर्योड़ी वा, मिनख तौ हंसैला ई, मोवन नै ई सरम ग्रावैला।

वां गळी रै छै माथै मीट राख्यां बैठी ही। थोडीक ताळ में मोवन ग्रावतौ दिखियौ। रांमू ग्रागै वध'र उणरै वाथ घालो, लाड़ दियौ ग्रर उणरी थैं'ली ग्रापरै हाथ में पकड़'र नैना टाबर री गळाई उणरी ग्रांगळी पकड़'र घरै लायौ।

उणरी नोकरी री सारी वातां बूझी—किण तरै रौ गांव है, कितरी ग्रर किणरी वस्ती है, मकांन रो कांई सुभीतो है, पांणी कितरौ नैड़ो है, ग्रर

ठा नी कितरी वातां वा उणनैं बूझती, मोवन रैं जवाब रैं मुताबिक उणरी आंख्यां आगैं उण गांव रो खाको बणतो रह्यो।

उण मोवन वास्तैं चाय अर खांड ई लायनैं राख्या हा। मोवन नौकरी करैं—नौकरी करण हाळां नैं चाय पीवणी पड़ैं। मोटा मिनखां रा नखरा मोटा-नसा मोटा-आदता मोटी। वैं पांन खावैं, चायां चोहै अर सिगरेटां पीवैं। चूल्हा माथैं देगची चाढ़'र चाय चणाई अर वाटकी भर मोवन नैं सूंपी। मोवन कह्यो थूं कोनी पीवैं ?

—ना रैं भाई! म्हारैं पी नैं कठे जावणी। सांमियों रैं कै'ड़ा मुवाद।

जीम—जूठ'र वैठा तो रांमू बूझ्यो—थनैं महिना ऊपर टैम व्हैग्यो है नीं।

—हां मा सवा महीनो व्हैग्यो। अेक महीना री तिणखा रा साढ़ी तीन सौ रिपिया ई मिळग्या।

रांमू नैं ठानीं क्यू नैं'चैं व्हियो। साढ़ी तीन सौ री नाम उणरैं हियैं में ठंडक री व्हालो दियो। वा थोडी ताळ चुप रैंगी।

—पण मा साराई खरच व्हैगा। रामू रैं कांन मे ऊनैं ऊनैं तेल री गळाई मोवन रो अेक-अेक सबद पड़ियो।

—खरच व्हैगा, इतरा—सारा पईसा, रांमू नैं ठानी क्यूं लाग्यो कै उण पईसां माथैं थोड़ो-घणो उणरो ई हक हो।

हा मा, गाभा घणा मूं घा है। दोय जोड़यां करायी, जिणमैं सगळाई निठग्या अर वाकी रा दूजी चीजां माथैं....' मोवन बात टाळी।

रांमू रो हियो वैठण लाग्यो। उणैं उण सूं आगैं की नी बूझ्यो।

सूबैं सूं साभ व्हैगी पण ठा नी क्यूं रांमू रो जीव उदास ई रह्यो। वा दिन भर घड़ती-भांगती रही। उणनैं लाग्यो कै उणरा सुपना संजोवण सूं पैं'ली इज बिखरण लाग्या है। वा दिन भर सोचती रही कै उणरी आसा रो तांतणो टूटण लाग्यो है। उणनैं याद आयो—मोवन कह्यो हो-थूं सोच मती करजे मां, हमैं थोड़ा दिनां सूं म्हैं नौकरी माथै लाग जावूंला तो पछैं वस! देखजे थारैं वास्तैं जोरदार ओरणी अर घाघरो लावूंला, थनैं पछैं किणी तरैं री तकलीफ नीं रैं वैंला। थूं म्हारी नौकरी तो लागण दै !

मनमांय राजी होवती थोड़ी सिक मुळकती वा कैंवती—म्हारैं हमैं कांई चाहिजैं वेटा! पण पैं'ली तिणखा मिळैंला जरैं पाडोसयां नैं मिठाई जरूर बांटांला, दोय-च्यार वांमणो नैं ई जीमावांला अर दूजी तिणखा

मिळतांई आंगां रणूजै जावांला-वावा रै पगै । अर वा आख्यां मीच लेवती, जांणै वा साचांणी रणूजै पूगगी व्है ।

—थनै कितरी तिणखा मिळैला ! थोड़ी ताळ पछै वा बूझती ।

—कम सूं कम तीन सो······ । मोवन कंवतो ।

—तीन सो······वा आंगळिया माथै गिणती—अेक सो······दोय सो······तीन सो······उणनै लागतो जांणै उणरी आगळियां मांय तीन सौ तांईं गिणण री सामरथ कोनी । इतरी तिणखा······अर वां कंवती—

—तीन सौ तौ घणा व्है······दोय सौ सायां ई को खूटै नीं······अर लारला सो······सो-सो भेळा कर सूं । थोड़ो-घणो गैणो-गाठो ई घड़ावणो पड़सी······ब्याव करसां जद बींदणी नै चढ़ावण नै ई चाहिजैला···निंतर गिनात सोचैला के बापड़ी रै नैनप पड़गी ही सो गैणा-गांठा बेचनै रंडापो काढ्यो है······ । अर वा विचारा मांय खो जावती । मोहन उणरै आगै बींद वण जावतो नुवां गाभा, मोजड़ी, माथै साफो—तुर्रां······तुरिया······अर उणरै होठां माथै आ जावतो—

> लचकै लाड़ा थारी मोजड़ी रै,
> भळकै केसरिया री जांन,
> नगरी रै लोकै पूछियो रै,
> किसो रायवर परण वानै जाय····

अर दूजै पळ उणरी आंख्यां आगै नुंवी बींदणी आ जावती, घूंघटा मे गोठिलो व्हियोड़ी, सरमीजती—उणरै पगै लागण आगै आवती अर उणरा हाथ पगां माथै पूग जावता ।

—यूं ई कांईं सोचण लागी मां, बस आपां दोय जिणा इज रै-वांला······खावांला—पीवांला अर मौज करांला······' मोवन उणरा विचार तोड़तो ।

रामू मुळकण लागती । बा सोचती—मोवन 'ब्याव' मैं समझण लागग्यो है ।

सुवैं री गाड़ी सूं मोवन नै पाछो जावणो हो । रांमू बेगी ऊठ'र उणरै वास्तै रोटी बणाई—अर उणरै साथै घाल दी । त्यार होय'र मोवन वहीर व्हियो, तो रांमू ई उणनै थोड़ी-ताळ पोंछावण नै साथै चाली । बारै ठंडी हवा चालरी ही । रांमू रै फाटोड़ी ओरणी ओढ्योडी ही, अेक जगै तो खूब मोटो बागो व्हियोड़ो हो ।

—इणरै टँको सेय सेवती । मोवन बागै कांनी ग्रांगळी करनै कह्यो।

रांमू री ग्रांख्यां मळमळी व्हैगी । नीचला होठ नैं दांत सूं जोर सूं दबाय ग्रर ग्रासू रोक्या । नीची धुण कियां इज बोली—सेय लेवू ला, बेटा, घरै जाय'र सेय लेयूंसा । रोज टँको लेयण री सोचूं पण टेम ई को मिळै नीं .... ।' ग्रागै उण सूं नीं बोलिज्यो, गळो भरीजग्यो हो । भळभळी ग्रांख्यां उण मोवन कानी देख्यो मोवन ग्रापरै बुगट्ट री कॉलर ठीक करतो हो ।



अेक बोतल री कमी

☐ जनक राज पारीक

कक्षा छठी रै विद्यारथी डालचन्द नाक में दम कर राख्यो हो। पाँच दिन ऊं हिन्दी री किताब नी लाईरियो, जदी पूछो, काले-परसूं री बहानो। किताब नी व्हेयां ऊं वो घर रो कांम ई नी कर पातो। रीस मे म्हैं वणीरा कानडा पकड़ नै ऊभो करतां थका कियो "किताब लेय नै क्यूं नीं आवै? काले कोई जांच रै वास्तै आयग्यो तो म्हूं कई जवाब दूंगा?" रीस में चार-पाच बेंत वणीरै हाथ पै जमायी अर कियो, "बोल, किताब क्यूं नी लावै?"

गिड़गिड़ातो डालचन्द बोल्यो "बापू लाईनै नीं देवै" म्हैं वणी रै डेस्क पर ऊं किताबां उठाय नै छेटी फेंकता थकां पूछ्यो, "या भूगोल री किताब किस्तर लाई दी दी? या गणित री किस्तर लाई दी दी?"

"मूं खुद लायो हो, खाली बोतला वेच नै" डालचन्द डसुका भरतो बोल्यो, म्हैं पूछ्यो, "तो हिन्दी री क्यूं नीं लावै?"

"अेक बोतल री कमी रैयगी है" डालचन्द लाचारी ऊं कियो।

"अेक बोतल री कमी?" म्हैं पूछ्यो।

बापू रे कमरा ऊं खाली बोतलां अेकठी करलूं वणांनै बेच नै किताबा लाऊं। हाल तलक तीन बोतलां हीज व्ही—अेक रीप्या अस्सी पीसां री। अेक काले और खाली व्है जायगा तो हिन्दी री किताब ले आऊंगा,"

म्हनै धक्को सो लाग्यो अर मायनै ई मायनै दुःख व्हियो, पन्दरा रीप्यां री अेक बोतल जदी बापू पी जावै, तो बेटा नै साठ पइसा किताबां रा मलै।

साठ रीप्यां री दारू पीवैंगा तो वेटा नै दो रीप्या चाळीस पइसा मिलैंगा, यानै छठी री किताबा रा पूरा तीन सेट जदी बापू पी जावेगा, तो विचारा वेटा नै ग्रेक हिन्दी री किताब मलैगा—जो भी पांच दिन री मार-पिटाई केड़ै। म्हैं सोच्यो म्रनै दुखी मन ऊं, वर्णी री दोई फैंकी थकी किताबां उठाय नै डालचंद रै हाथां में देवा लाग्यो—ग्रेक कसूर वार री तरै, धूजता थका हाया ऊं



छोटी कथावां

□ ईस्वर सिंघ कुळहरि

राई रा भाव रात ई गया

ग्रेकर ग्रेक चोर सेठ री हेली में घुस्यो। घर में सेठ-सेठाणी दोई जणा सूता हा। चोर नैं घर में देख'र सेठ नैं ग्रेक तरकीब सूझी। सेठ बोल्यो—सेठाणी वा राई ग्राळी बोरी कठै धरी है ? सेठाणी बोली वरिण्डै में धरी है। क्यूं ? कांई बात है ? कयां पूछ्यो ? सेठ पडूत्तर दीन्हो—तनैं कांई मालुम ? राई रा भाव बहोत ऊंचा चढ़ग्या है। सोनैं सूं ई मूंघी होयग्यी है। या कैयर दोनूं चुपचाप सोयग्या।

उणरी बातां सुण'र चोर सोची आपणं तो राई ई ले चालां। बो राई री बोरी ले'र भीर हुयग्यो। सुबह चोर बाजार में राई रा भाव पूछतो फिरै। जद उण सेठरी दुकान पर राई रा भाव पूछ्या तो सेठ पडूत्तर दीन्हो—राई रा भाव रात ई गया। चोर समझग्यो ग्रर बहोत सरमिन्दो हुयर चलतो बण्यो।

सेठांणी ग्राळो ऊंट

ग्रेक सेठांणी ऊंट पर चढ़'र घूमणै वास्तै निकळी। ऊंट री धणी सेठांणी नैं समझा दीन्ही के ऊंट रै बैठतै वखत सावचेत रैवै, पड नीं जावै। ऊंट बैठतै वखत ग्रापरा ग्रागला गोडा ढाळ्या तो सेठांणी सावचेत हुयग्यी ग्रर पाछै ढ़ीली हो'र बैठी रई। पण जद ऊंट लारै सूं बैठवा लाग्यो तो सेठांणी झट लारै गुडगी। ऊंट ग्राळो बोल्यो सेठाणी जी कांई बात हुयी ? सेठांणी बोली—म्हूं नैं कांई पतो थारो ऊंट दोबर बैठे है !

नट विद्या आज्या जट विद्या नीं आवै

अेक जाट अर नट में तकरार हुयग्यी। नट बोल्यौ तनैं म्हारी विद्या नी आ सकै। जाट बोल्यौ तेरी विद्या मे कांई है ? अभ्यास रो काम है। पण म्हारी विद्या तनैं नीं आ सकै। दोन्यां मे होड हुयग्यी। जाट बोल्यौ तीन महीनां रौ टेम दे। तेरी सगळी विद्या सीख जाऊंलो। पण तूं नी सीख सकैलौ। जाट तीन महीना में नट री सारी विद्यावां रौ अभ्यास कर लिन्हौं। इण रैं साथ-साथ जाट आपरैं खेत में अेक बेल कै लिपटती मतीरी नैं अेक खाली घड़ै मे मेल,दीन्हीं। मतीरी घड़ै में बढ़ती-बढती घणौ बडो मतीरौ बणग्यी।

तीन महीना पाछै दोन्यूं मिल्या। जाट नट नैं उणरा करतब दिखा दीन्हां। पाछै जाट आपरैं घड़ै में मतीरौ दिखातां थका बोल्यौ—यौ मतीरो म्हूं घड़ै मे घाल दीन्हो अर अब तूं इणनै विना घडौ फोड़ै निकाळ दें। बिचारौ नट सोच मे पडग्यो अर घणी कोसिस करी पण मतीरौ नी निकळयो। हार'र बोल्यौ—नट बिद्या आज्या पण जट बिद्या नीं आवै।

ठाकर सेठ सूं आंक भरावै है

अेकर अेक सेठ साथ में आपरी बही ले'र अेक ठाकर रै घर उगाई वास्तै गयौ। बी वखत ठाकर रै घर लड़कै रैं ब्यावरी त्यारी होर्‌यी ही। ठाकर सेठ नैं घणी समझावणी दीन्ही—कै आप कीं दिनां और ठम जाओ। थारा रिपिया पूगा देस्यां। पण सेठ नीं मान्यौ। ठाकर सेठ नैं कह्यौ निकाळौ थारी बही अर दूजी तरफ ढोल बजावणिया नै कह दीन्ही-कै बजावौ जोर-जोर सूं। ठाकर कही कै सेठ—भर आक। सेठ बोल्यौ रिपिया दियां विनां आक नीं भरीजैं। इण बात पर ठाकर सेठ नैं तडातड पीट बा लाग्यौ। ढोल री आवाज में दूजां नैं की नी सुण्यौ। बिचारौ सेठ आक भर पाछौ गयौ परौ।

थोडा दिनां पाछै सेठ अेक गांव रै बीच होकर जायर्‌यौ हौ। बठै अेक घर में ढोल बाजर्‌या हा। बीं रै साथी पूछ्यौ सेठ जी औ ढोल किणं बात रा बाजै है ? सेठ पडूत्तर दीन्हो—कोई ठाकर सेठ सूं आंक भरावै है।



पोकर गरू री बातां

□ रामनिवास सोनी

पोकर गरू हा छोटा सा गोळमटोल आदमी । मस्त, बेफिकर । लांबी चोटी । रंग गोरो चिट्टो । लिलाड़ माथै तिरपुंड भसमी रो । जठै कानी जावै, लोग राजी हुवता बतळावै—"पोकर गरू जै शंकर री ।" उणांरी मधरी मधरी बोली सुणतांई गळी-गवाड़ री लुगायां, टावर-टूवर, मोट्यार सैंग भेळा हुय जावै । हथाळी मांय खैनी री खंख उड़ावता पोकर गरू घणा खीखी हांसता । बोलता तो दांत रै झरोखै सूं थूक उछळतो, पण फेरई लोग उणानै घणा चावता ।

गोपीनाथजी रै मिन्दर री मोटी तिबारिया मांय गरू रो अखाड़ो हो जठै गरमी री दोफारी काटता, भांग-बूंटी छाणता अर मारग बैवणिया नै आसीरवाद लुटावता । मिन्दर री आरती री वेळा पोकर गरू जोर जोर सूं झालर टंकोरो बजावता, सिलोक बोलता अर भजन-भाव करता । कस्बै रा लोग बाग उणांनै जोतस रा फळादेस पूछता । वै धरम ग्यान ई सुणावता । कदै पंचांग री पुराणी पोथी सूं घड़ी पुल मुहरत निकाळता, टेवो बणावता अर लोगां नै भजन ई सुणावता । उणां नै जोतस री पूरी जाणकारी नीं ही तोई कस्बै रा लोग घणकरा आपरा गिरह गोचर उणांनै ई दिखावता क्यूंक उणांरी बात सांगोपांग सोळा आना मिल जावती ।

पोकर गरू चमत्कारी पुरुस हा । इण कस्बै रा मोटा पिंडत जोतसी उणानै पाखंडी समझता । पण वै इणरी रत्ती भर परवा नी करता । उणा रो घर मिन्दर रै पागती हो, बेटा-पोता लुगाई सैंग वात रा ठाठ-बाट हा, पण गरू रो मन तो मिन्दर में घणो लागतो । जजमानां रा नूता, सीधा, लावणा परसादी मिन्दर रो भोग किणी बात री कमी नी सतावती । सस्ती वाड़ा रै

उण जमानै में महीनां में अठाइस दिन पोकर गरू आप रै जजमानां रै अठै चकाचक माल मलीदा उड़ावता अर जठीनै निकळता आवाज आवती– "पोकर गरू, जै संकर री ।" गरू मुळकता उण दिनां सिराध पख चालै हा। तीन टेम भांग पीणो अर तर माल चावणो गरू रो नित रो कांम । यूं तो पोकर गरू चिलम तमाखू सूं पचास कोस दूर रैवता, पण किणी अखाड़ां री मंडली जद मिन्दर कानी आय जावती तो वै धपाधप गांजा सुलफा रा दम लगा'र चादी बणाय न्हांखता । उण बगत नैणां रा राता डोरां सूं वै साकसात महादेव सरीखा ओपता । अेकर भाग रै गेघट नसां मांय आपरै पोतै नै खांधै बैठा'र गळी मुहल्लै पूछता फिरया क म्हारो पोतो गमग्यो, लाधो कोनी, कोई बताओ । लोग सोचता क आज पोकर गरू मार्गे भांग रो नसो घणो है । जद घरै पाछा आया तो दरवाजै सूं पोता रो माथो टकरायो । बाळक रोवण लाग्यो तो गरू बोल्या–"अरे म्हनै ठा कोनी क थूं म्हारै माथै पै सवार है, म्हूं देख्यो क यूं कठेई गमग्यो ।

अेक सेठ उणां कनै परदेस जावण रो मुहरत पूछवा आयो । उणांरी घूढली मा बेमार । गरू तो सफा नटग्या, पण सेठ वैद डाक्टर री सलाह सूं वहीर हुयग्यो । पाछै सूं डोकरी पार पडी । सेठ माथो कूटतो, रोवतो कळपतो आयो । उणी दिन सूं बो पोकर गरू रो पक्को भगत बणग्यो । पोकर गरू नै नींद रा सपना मांय महादेव रा दरसण घणीवार हूवता । वै भगवान सूं बात पूछता अर उणांरा बचन फळ जावता । पूरा गिरस्ती होवता थका गरू ओलिया पुरुस हा । घणा लोग उणानै छेडता पण वै कदेई नाराज नी हुया, हँसता ई रैवता ।

पोकर गरू रोज मीठो भोजन जीमता अर मीठो ई बोलता । उणारै कबीला में अेकर अेक काची मौत हूयगी । जीमण रो जद बुलावो आयो तो आपरै दोनूं पोता नै सिखाय भेज्यो क बेटा म्हारै बिना मत जीमज्यो; रोबा लाग जाई ज्यो ।ठीक आ ई बात हुई । दोनूं पोता जीमती वेळा रोवणै लाग्या क दादाजी बिना कोनी जीमा । सेवट लोग पोकर गरू नै बुलाया तो गरू कयो क अै छोरा म्हारै बिना कदेई नी जीमै । जद लोग जबरदस्ती गरू नै सागै जिमाया । पोकर गरू तो बस आ ई बात चावता हा । यूं तो पोकर गुरू री अेक-अेक बात लाख-लाख रिपियां री है, पण दो किस्सा मंड़ा है जिणसूं उणांरी साख घणी बधीजै । पैलड़ी वार तो वै आपरै राजाजी रै हाथां सूं इनाम इकरार सारटीफिकट लियो अर आपरै गुजारै वास्तै दस रिपिया महीनां रो परवांनो ताजिनगांनी लिखाय लियो । वै दरबार रा गरू बणकर

उणांनै परचौ दियौ अर चमत्कार दिखायौ। वै जोतस रै टिप्पै सूं अैड़ी बात मिलाय देवता क वड़ा-वड़ा पिंडत राज-जोतसी ई उणा सूं चकरावता।

उणांरी लुगाई उणासूं घणी नाराज रैवती। क्यूंक वै तौ भाग पीवता अर मौज करता। गरू अवै 70-75 बरस का हुयग्या तौ लुगाई पूछती क थे कद मरस्यौ। पोकर गरू जवाब देवता क देख जद थरै ब्याव हुवैलो, बाजा बाजैला उण वगत म्है मर जावाला। थूं म्हारी बात नैं पक्की समझजे। दो च्यार बरसां पछै पोकर गरू रै भतीजै रौ ब्याव मंडियौ। बारात री निकासी री तैयारी, बाजा बाजण लागिया। लुगांई गीत गावण नैं घरै बारै निकली तौ पोकर गरू कयौ—देख, आज चोखौ मुहरत है, आज ई मरणै रौ पक्को विचार है, जोतस मिलायेड़ी है। जद पोकर गरू सारा कपड़ा उतार दिया, आपरै हाथां सूं गोबर गंगाजळ री चोपौ लगायौ अर सांसा ऊपर चढ़ा'र आंगण मांय लेटग्या। लुगाई नैं कयौ, देख थूं निकासी में जावै तौ जा, आखरी मुलाकात करलै। थूं पाछी आसी, जद पोकर गरू कोनी मिळैला। लुगाई गाळियां काढ़ती-काढती गीतां सागै चलीगी। लारै सूं पोकर गरू अेकला घर रा दरवाजा बंद कर आपरी सांसां नैं ऊपर चढ़ा'र छोड़ दी। सूवटो उड़ग्यौ, पींजरो खाली पड़ग्यौ। जद उणांरी लुगाई पाछी आई तौ गळी मांय हाकौ फूटग्यौ; रोवणा-पीटणा सुरु होयग्या। पोकर गरू री मौत हालताईं कस्बै रा लोगां रै वास्तै घणी चमत्कार री चीज है।



डूंगरींग जी वांका

☐ दिलीप सिंघ चौहाण

यूं तौ जलम रा नाम सब राईं श्राछा हुवै, पण ज्यूं ज्यूं टावर मोटौ हुवै, त्यूं-त्यूं नाम छोटौ व्हैवा री सलूक सब ठौड़ां है। डूंगरींग जी बांका रै नाम रौ इतिहास टंटोळा तौ जलमतां ईं स तौ ई 'डूंगरसिंघ' हा, पछै घर में लाड सूं 'डूंगौ' 'डूंगली' श्राद वणिया, श्रर ना' ता-भागता व्हिया, तौ 'डूंगा' नै 'डूंगला' री श्रोपमा सूं जाणीजवा लागा। जद मोटियार व्हिया तौ डूंगरींग जी बणग्या, श्रर 'बांका' रौ खिताब तौ श्रण गांव मे लोगां श्रणा रा करमां सूं दीदौ।

वात श्रसी है कै जद ई 'डूंगला' वणिया, वण ऊमर में ईं चोरी रौ चस्कौ लागग्यौ। दिन तो लोगां रौ नै रात श्रणां री ही। लोगां रै रात पड़ती नै श्रणां रै दिन ऊगतौ। लोग सूता नी कै ई कणी साठा रै खेत रै श्रधविच करड़ करड़ सांठा करडावता। जद तांईं चूंषां री ढगलौ श्रणां रै दाड़ी रै न्ही श्रड़ जातौ, डूंगरींग वठा सूं न्ही हटतौ।

रात में कपास का खेतां मे सूं कपास चोर'र दिन में वाणिया नै बेच नै पिंडखजूर गटकावता। पाकी श्ररण्ड काकड़िया दिन मे तौ गोड़ रै ऊपर नजर श्रावती नै रात मे डूंगरींग जी रै पेट में कुरड़ कुरड़ करती। या ई दसा होळा, उमिया नै मक्या, काकड़ा री ई ही।

पण श्रेकर जद यै रात रा श्रंधेरा में श्रेक श्रांबा पर मूंगणा (केरी) खावा चढ़्या तौ मूंगणा तोडतां डाळी वड़ीको मार दीधौ नै डूंगरींग जी धड़ाम सूं मऊड़ा रै फूल री नाईं जमी पर श्रा पड़्या, नै गोडां में सूं पग वांकौ व्हियौ। खोड़ाखोड़ घणा दोरा घरै श्रा'र खूब लूण रा सेक श्रर मऊडा री लपरी रा पाटा बाध्या, पण पग थोड़ौ सो वांकौ रैग्यौ, सो रैई ग्यौ। वै

वणीज दिनां सूं थोड़ा लंगड़ाता-लंगड़ाता चालवा लागा, तौ लोगां अणां नै 'बांका' रौ खिताब दियौ। अब डूंगरीग जी रौ नाम व्है ग्यौ 'डूंगरीग जी बांका'।

यूं तौ धूणी पर बैठ'र डूंगरीग जी सीख री मोटी-मोटी डींग मारता, पण चोरी रा मामला में वणां रौ मन डोल जातौ। वणां रै डींग हांकतौ वगत कोई मनचलौ वणां री चोरी री बात रौ कड़वौ घूंट देतौ, तौ वै करसण जी रै मासण रौ दिरसटात दे'र वीनै पी जाता, पण चोरी रौ सौक नौ बूढ़ा व्हीग्या, तौ ई न्ही छोड्यौ।

डूंगरीग जी बांका चोर हा, पण कद पकड़्या जाता तौ लच्छा ज्यूं नरम व्है जाता नै कैवता—माफी चाऊं सा, गलती व्हैगी। हत्यारौ मायलौ पापी डोलग्यौ। आज केड़े थांणै अठै हाथ न्ही घालूं ला। अण भांत वणा रै चरितर में चोरी तौ ही, पर सरजोरी न्हीं ही।

अेकर रात में पाड़ौस वाळा रै घर सांमै ऊभी करी सागठियां पर वणा री काळी नजर पड़ी तौ रोज रात नै दो दो डूंगरीग जी बांका रै घरै जावा लागी। सागठिया वाळा नै भैम पड़्यौ के ई दिन-दिन कम क्यूं व्है री है? वणी रात में चौकसी राखी। आधी रात मे डूंगरीग जी बांका आपणा खांदा पर दोई सागठियां मेल'र खोड़ा-खोड़ा अण मस्ती सूं जा र्‌या, जांणै व्ही तौ वणा रै भाई रीज है। पाछै सूं खट जाय नै सागठियां पकड़ी तौ डूंगरीग जी बांका बांका व्है'र वण रै पगां पड़ग्या नै कैवा लागा—"अणी धौळी दाढी री लाज थारै हाथ है, व्हैणों थौ जो तो व्हौ ग्यौ। अबै माफी चाऊं। आज केड़े थारी अेक ई सागठी डगज्या, तौ म्हनै पूछजे। थारी दस सागठियां म्हारै घरै अौर पड़ी है वै ई म्हैं लाय दूं कैता थका दसई सागठियां ला'र सूंप दी नै पिंड छुड़ायौ।

अेकर जेठ री कड़कड़ती दोपारी मे वै म्हारै कुआ पर आया नै थोड़ीक दाण तौ अठी-वठी री वातां करी नै बोल्या—भाया चड़स हांकणौ है रे, पण लाव टूटगी, अब कांई करां ऽऽ? थोड़ी'क देर ढब'र पाछा झट सूं बोल्या—देखां कठू'क कबाड़ां, कैवतां ई ऊठ्या नै म्हारा हांक्या थका खेत रै अधबीच में गया अर ढेकला दूर कर फटाक सूं लाव निकाळी। खांदा पर धर डूंगरींग जी बांका तौ व्हीजा, व्हीजा। न मालम कणी रै कुआ सूं रात में ऊठा नै ले आया हा,

डूंगरींग जी बांका रै चोरी जस्यौ ई अेक चसकौ जीमण जीमवा रौ अपूठौ हौ। आस पास जात-बिरात मे जीमणवार रौ नूंतौ आवतौ तौ अेक

दिन पैंली सूं ईं वै साबण सूं न्हाता-धोता नै आपणैं तीनूं टाबरां नै ई संपडा'र त्यार करता। जीमण रै दिन परभात सूं भूखा रैता नै दुपैरी ढळतां ईं आपणी टट्टूडी पर जीन कस नै तीनूं टाबरां नै ऊपर बिठाय लगांम नै थाम'र आगै-आगै डूंगरीग जी बांका धोळी पाग, बगल में पेसकवज नै गिरियां तांई धोती पैर'र खटूक खटूक चालता नै पाछै पाछै वणां री टट्टूड़ी तड़पड़ तड़पड चालती। मोटी बात तो या ही के गाम रा सगळा मिनख सांझ नैं जीमवा जाता नैं ई जीम'र सामैं गेला मे मलता। जीमती वगत टाबरां नै डरपाय डरपाय जबरन सूं ठूंस-ठूंस नैं जीमावता। खुद ई इत्तरो ठूंसता के घर आ'र रात नैं पेट पर ठण्डा पांणी रौ लोटो रख'र 'आं ऽऽ आं ऽऽ' मांदा ढांढ़ा ज्यूं टसकता।

डूंगरीग जी बांका रा सब गुण वणा रै मन भावता भगवान दीधा, पण अेक आवत पर वणां नै खुद नैं ई नफरत ही। वै रात नै गहरी नींद में बैलता थका जे जे चोरियां करता, सब रात नै कह देता।

अेक दिन री बात है डूंगरीग जी बांका नैं पर-गाम रात रैणी पड़-ग्यो। वै जीमण रै सिलसिला में ईं गया थका हा, पर मळगी होवण सूं रात रैवणी पड़ग्यी। रात नै गाभरा दूसरा जणा रै बीच में वै सूता थका हा। गहरी नींद आवतां ई बांका तो गुपत पोथ्यां खोलवा लागा—"वण ढाळिया में कोठी री गळी में·········मं ऽ ऽ सांबळ·········पड़ी है या चैना भोपा री है। कणी नैं कैवौ मती।" वठै अेक टाबर सुण ऱ्यो हो, वण परभाती सगरी पोल खोलदी, जो या सांबळ पाछी देणी पड़ी, चोरी 'आउट' व्हियां बाद वै मांय न्ही रालता।

वणा पूरी ऊमर छोटी-मोटी चोरियां कीधी, पण भगवान अेक दिन कोप्यो जस्यो कदी न्ही कोप्यो। वणां री नैनकियो टाबर गाय-मैंसा री ओड रै नीचै होळा सेक ऱ्यो नै बांका आपणी घर पर त्यार कराई कुरसी पर दोई पगां पर बांदरा री नांई बैठा हा। दोई हाथ री कूणियां गोडा पर दीधी थकी नै हाथ सूं गाल पकड़्या थका। ऊंडी आंख्यां नै लाबी दाढी, माथा पर गमछी याध्यो थको। होळा सिकजा तो खावां री वाट नाळ ऱ्या। वा'दी रौ घपडको जोर सूं व्हियो तो ओड पर पड़ो घास-फूस आग पकड़ ली थी। डूंगरीग जी वांका अठीनै वठीनैं भाग्या नै कंई ठा न्हो पड़ी कं अबै काई करै, वणा जोर-जोर सूं वा'र लगाई—"दौड़ ज्यो रे। दौड़ ज्यो वासदी लागी गी है ओ ऽ ऽ ऽ।" गुणतां ई पास-पड़ोस रा लोग-बाग पाणी रा चुकल्या ले-ले'र दौडता थका आया। ओड पर पाणी छांटवा लागा तोई आग पर कन्ट-रोल न्ही व्है सक्यो। अबै जलती ओड में लोगां री चुराई थकी चीजां दड़ाक

पड़वा लागी। भमरा, ताकळा, फावड़ा, कुदाळिया, कुल्हाड़ा नै सेती रै कांम री कई चीजा श्रेक श्रेक कर'र नीचै पड़वा लागी। डूंगरींग जी बांका तौ चांदरौ वरा नै पाछा श्रापरणी कुरसी पर बैठ ग्या।

ज्यूं चीजां पड़ै ज्यूं लोक श्राग बुझावरणौ तौ भूल ग्या नै चीजां श्रोळखवा लागा। कोई कैवै—"श्ररे यौ भमरा तौ म्हारौ।" तौ दूजो कै वै—"यौ फावड़ो तौ म्हारौ। जतरै तीजो बोल्यौ—"घरणा दिना सूं ढूंढ र्‌यौ म्हारौ कुल्हाड़ो कठै है? यौ तौ यौ र्‌यौ।" तावड़ तोड़ मे सब जरणा श्राप श्रापरी गुमी चीजां भाळवा लागा। जद करणी श्रेकई चीज नै दो दो श्रादमी श्रापरणी बतावता भगड़वा लागा तौ डूंगरींग जी बाका श्रापरणी कुरसी पर सूं ई हाथ लांबौ कर'र बोल्या—"श्ररे हाको करौ मती नै चीजां श्राप श्राप री श्रोळख श्रोळख नै लीजो। श्रेक दूजै री चीज मती ले लीजो। जरणरी व्है वौई लीजो श्रस्या हा म्हारै गाम रा डूंगरींग जी बाका।



गंगो मन रो चंगो

☐ रूपसिंघ राठौड़

नांव तौ गंगाराम पण कैंवण नै सैंग गंगौई कैवै। भोत पुराणौ लगोटियौ यार है म्हारौ। जिस्यौ पवीत नाम बिस्यौई बीरौ कांम। दूध सूं धुल्योड़ी सफेद झक है बींरी आतमा। कठैई कोई दाग नी। गांव री निपज जयां खेडा ई बता देवै। जिसूं मिळसी मुळकतौ ई मिळसी।

चाळीसेक री उमर गंगा-जमना सिर रा केस, मोटी-मोटी हिरण सी आंख्यां। रंग गोरौ, सीदी-सादी चाल-ढाल, झुकेड़ी नजरां, ठंडी मीट। साडे छः फुट रौ पूरौ पट्ठौ जवान। मुंह पर बाकोड़ी मूंछ्यां री रमझोळ। स्यान-सकळ रौ भोत फूटरौ। धरती पग मेलतौ मस्तो यूं चालै तौ धरती सरमा मरै। खान-पान रौ बडो सीदौ-सादौ।

मन मूं भोळौ-ढाळौ। सांच्याई बींरौ राम रुखाळौ। कोई गरब गुमेज नीं। नैर-खाळिया री चिणाई रौ भ्रेक नवर रौ कारीगर। बयां तौ बठै धूढळी नै पापड़ बेलतां बोळा बरस होग्या। टाबर थकोई ईं हेलै लागियौ हौ। राजस्थान नहर रै सैंग नामी-गरांमी ठेकादारां रौ मुंह लागतौ। कमाऊ पूत। प्यारौ क्यूं लागै नी। जमानै री म्हैर कांम प्यारौ चाम रौ के प्यारौ।

सुभाव सूं भोत ठंडौ। कदै-कदास ई गरम होतौ कोनी देख्यौ। दूजौ चापै बींरौ कित्तोई नुकसांण क्यूं नी करद्यौ, पण मेरौ बेली मूंगौ सांड मुंह ई नीं खोलै। तूं-नूं-मैं रै चक्कर में ईं नी पड़ै। दूजा लोग उकसावणियां जे बैठे ऊंट पर चढ़ावण री कोसिस करै तौ बो कैवै—"तेली रै बळद नै रौंड़ाई सूं कांई कांम। मिनख नै आपरै कांम सूं वास्तो राखणौ चाईजै। लडाई-झगड़ौ कांई चोखो हुवै। यै तौ गयै घरां रा काम ही।"

पराये दुःख में पडरण हाळो है। दूजां री पीड़-ओड़ी में सैंगां सागै रैवरिणयों। बात घरणां दिनां री नीं। लारलै आपातकाल री है। गोरमिन्ट म्हांसूं नसबन्दी रा दो केस माग्या। हूं सोच में। काईं करूं। के सिर-पग तोडूं। कठैऊं केस ल्याऊं। यार दिनूंगै पैली आयौ। मुळक'र धीमैं सी बोल्यौ—"काईं बात है मास्टरजी? कयान—आकळ-वाकळ होर्‌या हो?"

हूं पडूत्तर देतां कैयौ—"यार! की बात नै बात रो नाम। साथी संगलियां नै कैंवता सरम सी आवै।"

"गंगो मन री बात जाणतो सो बोल्यौ—"थारै मन री हूं जांणी। वा नसबंदी हाळी तो बात होसी। थे की फिकर ना करो। म्हे चार थारै सागै चालस्यां। अेक भाठै सूं दो सिकार—म्हारो भलो हुज्यासी थारो काम।" म्हांनै आछी तरियां याद है वो बी दिन अेक इस्यै डाकदर रै पल्लै पड्यौ जिकै नै हूं कैंवू क मिनख वो के जीनै पसु सुदा करण रो बेरो नीं। बिचारो आपरै टाबरां रै भाग सू जियौ। हूं काळी-मूंडो होवरण सूं बच्यौ। डाकदरां कानी सू तो बारा बजगी ही। मौत दिनां ताईं फोड़ा भोग्या।

गंगो ई जमांनै में इत्तो गूंगो क कदैई बात रो पाछो उथलो नी देवै। बा बात कै—कुवा थारी मा मरगी। कै मरगी। जीवै क जीवै। इस्या मिनखा री ई जमांनै मे जिवारी दोरी। बेजुबाना नै गळी रा गडका ई नीं घूंसै। गैलड़ै दिनां री बात है। गाव में रैवरण नै मकान रै नाव पर अेक खुलड़ी ही, जिकी नै ई वडै भाई मुंह फोर आप धरा भेळी कर ली। लोगा समाचार पुगायौ तो छत्तरगढ़ सूं आयौ। पाच-दस दिन गाव मे सबसूं मिळ-जुळ'र पाछौ गयौ। किन्है रै सूं वै ई नी कही। लोगा खेत री सीव तोड़ नाखी। पंरण वदै सास ई कोनी काढ्यौ। भगवान जाणै मेरो वदो कुणसै खंदेरी माटीसूं घड़ियोड़ो है।

वात अर करार रो बड़ो सांचो है। कदैई बात रा बारा आना नीं होवरण दै। जिको ई कांम हाथ में ले ले बीनै टेम माथै पूरो करै। आपरै साथ रैवरिणया मजदूरा नै फोड़ा नी घालै। रळ-मिळ'र काम करै।

भाईड़ा री लुगाई इसी कै—बारा मुट्ठी तीन लप्प। पूरी दातार। धरणी दयाळू। दातार रै धन कठै। भाइड़ो खून-पसीनो अेक कर'र महीनै भर तेली रै बळद ज्यूं घांणी में पिलै। मइना रो आखरी दिन आवता न आवता भाई भूरा लेखा पूरा। परण करम कमाई रो इस्यो मेळ कै काम आगे सूं आगे मिळतो रैवै। नीं तो गरीबी मे आटो गीलो होता कित्तीक देर लागै। "घड़ै गैल ठीकरी मा गैल डीकरी।" टाबर-टीकर ई भोळा-ढ़ाळा।

वेलीड़ो घणो संतोखी जीव । "सदा दिवाळी संत रै आंठू पौर त्यौहार" हाळी वात वी पर साम्परत लागू हुवै । "लूखी-सूखी खायकै ठंडो पांणी पी" में सदा सूं अटूट विसवास । कदैई भूठा हांफळा नी मारै । जिस्यो फाट्यो-पुराणो मिळज्या गळै मे घालतै । कोई नाज-नखरो नी राखै ।

छत्तरगढ़ खनै केई दिनां सूं अेक जमीन रै टुकडै में खेती करै । भूदांन हाळा बतायो हो । घणां दिनां भागा-दौड़ी करी । दुःख ई ठायो । आखर मे छत्तरगढ मे ईं गोडा गाड़ दिया । डेरा लगा दिया ।

पनरा क दिना पैली कागद आयो कै जमीन उणरै नाम व्हैगी है । सपनो साचो होग्यो है । साढै बारा बिग्गा जमीन मिळगी । होती क्यूं नी । साचै राचै राम । गंगै रो मन बड़ो चंगो । पुरखा री कैयी वात कदै भूठी हुई कै—"मन चंगा तो कठौती मे गंगा ।" गंगै री जमीन में राजस्थान री गंगा—राजस्थान-नहर—कळ कळ करती बैवै । गरीबड़ां रा दुःखड़ा दूर करती । गंगो आपरै खेत री टीवड़ी माथै बैठ्यो सुख रा सपना लेवै । पग पसार—सुख री नीद सोवै ।



संत कवि गोमदा

☐ रामनिवास सोनी

राजस्थान री वीर प्रसूता धरती री कूख सूं जठै अणगिणत सूर-सांवत समै री कसौटी माथै आपरी जसगाथा री अमिट रेख छोडी अर इतयास रा उजळा पानां नै सोना रा आखरां सूं जगामग करिया, उणी धरती री पावन गोद सूं घणकरा संत, कवि अर विचारक उपज्या, जका आपरी इमरत वाणी री गंगा सूं असवाड़ै-पसवाड़ै तौ काई दूर-दिसावरां बनखंडां तांणी समूची छेत्तर सींच र नै हरियौ-भरियौ करियौ। इणी संत परम्परावां में संत कवि गोमदा (गोविन्दराम जी) री नाव घणी आदर-हरख रै सागै लियौ जावै।

हिन्दी साहित री बीज रूप सूं दोय धारावां मांनीजै—सगुण मारगी अर निरगुण मारगी। संत गोमदा निरगुण धारा रा उपासक हा। उणारी जलम राजस्थान रै नागौर जिला मांय कस्बै लाडणूं में सं. 1750 वि० में अेक साधारण सुनार रै घरै हुयौ। बाळपणै सूं ई संत रौ मन भजन, सतसंगत अर ध्यांन मांय घणौ लागतौ। उणारै घरै कळाकारी रा नांमी गैणा घड़ीजता, पण गोविन्दराम जी पीतळ रा बरतन घड़ता थका तत री पिछांण करी अर आपरी जिनगांनी काटी। नीति अर सिणगार रा सिरमौर कवि बिहारी जिण ढंग सूं "अन्योक्तियाँ" लिखी, उणीज ढंग सूं संत रा कथियोड़ा दूहा अजूं तांई जनता जनारदन री जबान माथै निरत करै। खोटै मिनख नै पीतळ री उपमा देवता थका संत गोमदा इण तरै फटकार लगावै—

बीस वार बानी कियौ आघौ दीन्यौ खोय।
कोरौ पीतळ गोमदा कंचन किण बिध होय।।

नागौर जिला रै मांय रामसनेही संप्रदाय री सबसूं मोटी गादी रैण गांव मांय थरपीजी जठै समरथ गरू महाराज दरियावजी नामी पौंचवान साधु हा। संत गोमदा रा वै गरू भाई हा। आ वात रैण रै पुराणै दस्तावेजा मांय मिळै क्यूं क संत री घणकरी जीवण सासा "दरियाव मंडळ धाम" रै अठै भगती, ध्यान अर साधना मांय वतीत हुई। उणारौ मन संसार री मोय, माया, अर तिसनां मांय कम लागतौ। उणारा पिताजी इण वास्तै सतरा बरस री उमर में उणारौ ब्याव मांड दियौ। संत गोमदा तेईस बरस ताईं गिरस्ती रा जंजाळ भोगिया। उणारै दो बेटा ई पैदा हुया, जिणारै बाद आखी उमर ताणी वै सीळ वरत पाळियौ।

संसारी वासना, जाळ-जंजाळ सूं पल्लौ छुड़ा'र उणारौ घणकरौ टेम ध्यान, भगती मांय लागतौ। हिन्दू, मुसळमान, जैनी सभी जातियां रा लोग सत्संगत मांय सामिल हूवता। इण वास्तै लोग उणानै "साद महाराज" रै नाव सूं बतळावण लागा। उणारौ मुळमंतर कैवीजै—"राम निरंजन सब दुःख भंजण" अरथात निराकार ब्रह्म (राम) ई दुख मेटणै वाळौ है। संत गोमदा रा गरू प्रेमदास जी महाराज कैवीजै जिणारै बारै मे खुद संत लिखै—

प्रेम सिपाही रामरा तत बांधी तरवार।
कंचन कामनी छोड़कै मुजरा है दरवार।।

संत गोविन्दराम जी स्वाभिमानी, निडर अर सच्चा पौंचवान गिरस्ती साधु हा। उणारी समाध छतरी लाडणू रै मावलियां बाडी मुहल्ला मे अजूं ताईं खड़ी है, जिणा ऊपर संगमरमर री अेक सिलालेख सं. 1835 वि० माह बद 5 रौ सत री निरवाण तिथि री याद दिरावै। उणा रै पागती उणारै पिताजी रौ समाध चबूतरौ है। सत री करीब 200 बरसा पैली रौ पुराणौ हस्त चित्तर हाल ताईं उणारै परवार रै लोगारै पास मौजूद है, जिण सूं संत री सादगी, नम्रता अर तपोनिस्ठता री दिग्दरसण भली भात हुय सकै। संत सादा जीवण उच्च विचार रा पाळणिया हा। सादौ भोजन करता अर मास भखणै नै घणौ खोटौ बतावता आप यूं फरमावै—

जीव मार जौवर करै खातां करै वखाण।
परतख दी सै गोमदा थाळी माय मसांण।।

संत कवीर री तरै सूं सच्चा साधु री पिछाण आप यूं फरमावै—

भेड़ भेख सब अेक है रहै गाँव रै गौर।
कदै न देख्यौ गोमदा सौ सिंघा री टौर।।

दूजा रा पूत रमावणियाँ माथै आप यूं चोट करै—

पूत खिलायां पारका कारज सरै न कोय ।
घर में बसती गोमदा आप जण्यां सूं होय ।।

इण रै अलावा नीति रा मोकळा दूहा अजूं तांणी जनता री जबांन माथै निरत करै—

पड़ियां भ्रत लेवै नहीं मुंवां नै चाले साथ ।
दीया पाछै गोमदा दोरा आवै हाथ ।।
खैर बुरी है खलक की मेल भर्या सब मंड ।
खरी मजूरी गोमदा खता नहीं नव खंड ।।
ग्यांन गरीबी गुरू धरम नरम वचन निरदोस ।
ऐतामत छोड़ो गोमदा सरदा, सीळ, संतोस ।।

अेक कहावत रै मुजब नगरी री राजा संत सूं नाराज हुय उणानै जेळखाना रै मांय न्हाक दिया । सुपना रै मांय राजा नै परचौ हुयौ । उणा संत सूं माफी मांगी अर पाछौ उणानै आदर रैं साथ आपरै घरै पौचायौ । संत गोमदा उच्चकोट रा कवि हा । उणारा हस्त लिखित ग्रंथ अजूं तांई हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, उरदू, फारसी आद भासावां मांय मिलै । उणारा ग्रन्था मांय "ध्यांन तिलक" अर "भूलणा" मुख्य है, "गुरू पचीसी" मांय आपरै गुरू री महिमा रो वरणन मिलै ।

संत गोविन्दराम जी रा दो खास चेला हा—मोहनलाल अर चितानंद दोनूं नांमी विद्यान अर भणियोड़ा हा । उणारा ग्रंथां मांय "निरगुण स्तुति" "शब्द प्रभाती" "उक्ति अनूप", "वेद विचार" अर "करणा पचीसी" प्रमुख है । मोहनलालजी संत री वदना इणतरै सूं करै—

मोहन को सतगुरु मिल्या चिलकाणैं के घाट ।
ताळा कूंची डाळके खोलै जड़े कपाट ।।

निरगुण संत साहित री सोध करणिया साधका री ध्यान जद कदैई इण संत री तरफ हुसी तद नुंई नुंई संभावनावां अर हकीकतां री पतौ लागसी । संत गोमदा (गोविन्दराम जी) री कयेड़ी वांणी बानगी रूप मांय इण छोटै से लेख मांय दियी जावै—

सकल कला परवीन कहा जस कीरत गावै ।
अन्तर्गति मन लीन ताहि कहा दरद सुनावै ।।
सबके सिरजनहार सकल के पोषण भर्त्ता ।
पूरन अधिक अगाध सृष्टि कर्त्ता के कर्त्ता ।।

अमर आदि अंतकरण और कौन सरभर करै ।
'गोविन्द' प्रेम परताप से राम रजासिर पर धरै ।।
(निर्गुण स्तुति से)

श्रवणा सुन रामनाम रसना रटैं रामनाम
हिरदै हित रामनाम राम लौ लगाई है ।
मनको मन रामनाम चित को चित रामनाम
रामनाम सूं ही सूती आतमा जगाई है ।।
सुख को सुख रामनाम रस को रंस रामनाम
रामनाम लेतां रामनाम रिध पाई है ।
"गोविन्द" गलकाय भये राम रस सागर में
राम बिना रहिवो नहीं राम की दुहाई है ।।

अैड़ा दुरलभ सत आतमा जुगां री लांबी छोड़ रै बाद ई कठैई कैई उत्पन्न हुवै, जका सैंग धरमा री सौरभ गाथा नै संजोवतां अेक निराकार अजन्मा ईस्वर री उपासनां में आपरै तपजीवण री जोत निखारै, जिणांरै पावन चरणां मांय सैंग धरमा रा लोग सरधा भाव सूं बंदण करै अर सीस झुकावै ।



रूड़ो राजस्थान

☐ मूळ दान देपावत

मरुधर री मैंहमा, कीरत अर बडाई री बखाण आखरां में बाधीजण जोग नीं है। मरुधर रा किसाई खूणां-खचूणां में जावो अठैरा मिनख-मानवी, वांरी बोली-चाली अर पैरेस रोही री छिब, दाव-जिनावर अर बैंरा तळाव आपरैं मन माथै गहरी छाप मांड दैं।

आयूणां राजस्थान में निकळ जावो जठैरी निराळी झांकी आप अदीठी नीं कर सको। ऊजळा धोरा जुगा-जुगां सूं इण बात री साख भरै कै अठैरा रैवणियां री मन म्हारी तरै ऊजळो अर निकळंक रैयो है। अठैरा मिनख घणमोही हुवै। दाव-डांगर भी रूणी वितार कोसां री भीं भांग ज्यावै। मोह री धणी कांई बात अेकर बीकानेर रा राजा रायसिंघ जी दिखणाद में गयोड़ा हा, जठै फोग देख बीरै बाथां घाल घणा विराजी हुवा

तूं सैं देसी रूंखड़ो, म्हे परदेसी लोग।
म्हांनै अकबर तेड़िया, तूं किम आयो फोग।।

फोग अठैरा रूं रूं मे रमियोड़ो है।

ऊनाळै री ढ़ळती मांझळ रात आ धोरां माथै चांदणी अठखेल्यां कर निछरावळ करै अर कतारियै री पणिहारी री टेर समां बांध दै। पीवण रा पांणी री कमी मोकळी रैवै, पीवण रा पांणी रा सांसा पड़ै। सगळा देई-देवता आपरा देवरा तळाव री पाळां माथै जमायां विराजै। आधी ढळतांई कुआ तेड़जण लागज्या अर 'आयो आयो' रा लैंकारा सुणीजै। लोग 'आयो आयो' करता तिसवारी काढ़दै। कुआ साठीका जिणमें पांणी रो तोड़ो। कैवा चालै अठैरा लोगां री अकल ई साठीका रा पांणी जिती ऊंडो व्है, ओछापणो

नैड़ोई नीं आवै । दिन में लू रा लपरका चालै, देह रा सूक्ता वण जावै पण थांनै सेजड़ा री वैम री छिया तळै ढेरियो कातता मिनख उघाड़ा बैठा लाधसी पांणी बिना दरखत कठै, पछै छियां कां री सो छियां रै सारै ई कुण है ।

जिण भुंय पन्नग पीवणा, कैर कंटाला रूंख ।
आकै फोगै छांहड़ी, हूंदा भाजै भूख ।।

पण लखदाद है आ रूंखां नै जका साथ नी छोड़ै । इण मौसम में ई आपरी रसाळ, खोखा, ढालू, जाळोटिया, नींबोळी देवै । बळती तावड़िया में लाय मे सेजड़ा ऊभा सांगरियां, खोखा लुटावै अर छाळी, लरड़ी चरावता टावरां नै भाड़ो देवै । इण तिसवारी लुवां, रौळाड़ करती आंधी, भतूळियां में ऊभा रोहीडा खिलै अर फूल गुलाल विखेरै, पण कांई करै—

मारवाड रा देस में, अेकन भाजै रिड्ड ।
ऊंचाळो कै म बरसणो, कै फाका कै तिड्ड ।।

धिन है अठैरा जाया-जलम्यां नै जका खुद महाकाळ बण्या काळ री कांई परवा करै । अेवड़ रै लारै ऊभा अेवाड़िया तबीठ में खीर सबोई अर अलगोजो बजावै । राईका साढ्यां लारै टररहे टररहे करता खांधै रस्सी घाल्यां फिरै । लोग आपरी भूरा मुरट री रोटी, बरड़क बाटी अर तूंबा रै बीजां री रोटी; फोगलै रो रायतो, डोवी, गुजनी जीमजीम मिट'र काळ री कमर भांग नांखै । अठैरा लोग आपरी तिस दूध पी'र बुझावै । दूध में रांधै अर घी में अलोवै । लोगां रै मन चित मे ई आगूंच री चिंता नी व्यापै । बैठा कोटड़्या मे जाजम ढाल्योडी अमल गाळै, रंग रा दूहा पढ़ै अर मनवारां री झड़ी लागती रै । पनवाड़ै ढोली बैठा माढ़राग में गीत सुणावै—ओळूं ड़ी, कुरजां, बायरियो काछबियो जिण सूं बाळू री रवो रवो सजीव हुय जावै ।

काठा दोवटी रा धोतिया अर अंगरखी पैर्या; कानां में मोकळी मुरक्या, काळी ऊन री कंदोळी जिणमे मादलिया वांध्योड़ा; रंग-बिरंगा साफा-मोलिया, चूंदड़ी, केसरिया कसूंमल वांध्योड़ा अठैरा मिनख घणा भला लागै । छैवटी ढाळ्यां, नेवरै पैर्योड़ा, मोरखा बेळचा सूं लडालूंब, गोरबद लटकायां नाचणा रै टोळा रा करहा नचावतां मुकलावै जावतै मोट्यार रै मोद री कांई पार । रूणझुण करती बैहली मे नीची निजरां बैठी, मैंहदी लगायोड़ी नाजू, काळजा री कोर, हिवड़ा री हार बीनणी रै मन रा भाव कुण पढ़ सकै ? डीकर्यां मोळड़ा रा कुड़ता घाघरा पैर्यां, खणक-खणक बिलिया बजावती घरबार रा कांम दौड़ दौड करै । टावर ऊंचा-ऊंचा धोतियां बांध्या हाथा-पगां मे चांदी रा कड़ा पैर्या, माथै चोटी चुगली जका मांही मादळिया

गूंथ्यां हायां कंवाड़की लियां लूंकटाळी छोगें। लुगायां चूंदड़ी, पोमचो, लैरियो ओढयां, साड़ियो, लहगो, कळीदार घाघरो पैर्‌यां, चोरियो, रखड़ी, लड़ां, सांकळी, सुरलिया पत्ता, तिमणियो, कन्दोळी, कड़ला आंवळा, टणका, जोबें, नेवरें, साटें पैरयां; हायां मे बिलिया, खांचा, तड्डा, गोखरू, हथफूल पैर्‌यां आपरें घर री काम काज बुहारो झाड़ो, पीसणो-पोवणो, दूवणो-बिलोवणो, सिभारो करें। तरें तरें रा जीमण कढ़ी खीच, रोटी-रावड़ी, कैर-सागरियां, फोफळिया-मेलरा, काचरां-गोटका री साग अर ऐढ़े टाँमैं सुगनीक लापसी अर वड़ियां री साग करें। डोकरियां लासी ओढ़्यां दोपारें बैठी चरखो कातें अर आयण-दिनूंगें बीनणियां रें कांम री बखत पोतापोती रमावें, फिरें हथायां करें। डोकरा ऊनाळें रा बैठा मांचा बिणें, ढेरिया कातें, खींप रा डोरिया काढें अर भरायां गूंथें; सियाळें रा कांबळ, बरड़ी, पट्टू, खेसलो ओढ़यां घूणी रें खनें तमाखू री गट्टो मेल्यां, होका भरें, गल्लां करें अर मजा करें।

ऊनाळें री खास तिंवार आखातीज आवें जद सुगनी आगलें जमाना रा सुगन विचारें। बळती लूवां री वेग जेठ महीनें आपरीभर जवानी में वेंवें पण असाढ आया उणरें अत नैड़ो व्है जद आमें में बादळ दीसें।

को लूवां कित जावसो, पावस धर पड़तांह।
हिंयें नवोढा नार रैं, बालम बीछड़तांह।

अर लूवां आपरा डेरा बिरहण रें काळजें जा नांखें। मेह री माया सावण भादवें धरती माथें बिसेरीजें। ऊपरलें री आस वंधें। तेजें री टेर में बीज्योड़ी भादवें में काकड़िया मतीरा, सिट्टा रें रूप फळापें। 'आई आई ए मां ए म्हांरी सावणिया री तीज' गावती तीजणियां हीडें गी तिणिया सूं लूंब्योड़ी, सतरंगी चूनड़ियां ओढ्या, भीजतें चीर घणी भली लागें। तीज रें दिन पीहर में नहीं रेंवण री पीड़ सासरें बैठी रें साल भर परनाळा पांणी पड़त, बीज री झळाबोळ में मैड़ी में दियें रें चांनणें बैठी बिरहण रो मन घणो आकळ बाकळ हुवें—

जे ढोला तूं न आवियो, सावणिया री तीज।
चमक मरेली मारवी, देख खिवंता बीज।।

इण धोरां री धरती में सावण मनभावण अलायदो है।

सियाळें खाटू भली, ऊन्हाळें अजमेर।
नागाणो नित रो भलो, सावण बीकानेर।।

बीकानेर री थळी राजस्थांन रो नांमी टुकड़ो है।

ऊंठ मिठाई अस्तरी, सोनो गहणो साह।
पांच चीज पृथवी सिरें, वाह बिकाणा वाह।।

जळ ऊँडा थळ ऊजळा नारी नवलै वेस।
पुरुख पटाधर नीपजै, अइहो मुरधर देस।।

इण धोरां री धरती माथै रामसा पीर, पाबूजी, गोगोजी, तेजोजी, जांभोजी, करणीजी, राणी सतीजी अवतरिया। इण वीरभोम में भारी मड उवराव, रणबंका राठौड़, जयजंगळधर बादसाह आपरी वीरता गीतड़ां अर भीतडां मे अमर कीनी इणारी सीख अर समझावण रई है—

इला न देणी आपरी, हालरियै हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण बडाई मांय।।

अठरा विना माथै तरवार वावणियां नै रैंकारै री गाळ, अर मांचै में मरण री मैंणी लागै।

सूर न पूछै टीपणो, सुगन न देखै सूर।
मरणा नूं मंगळ गिणै, समर चढै मुख नूर।।

धर जाता जातां धरम, नर मर जाता कट्ट।
टावरिया रमता फिर्‌या, उण घर में रजवट्ट।।

रणवीर पृथ्वीराज चवहांण, राणा प्रताप, वीर दुरगादास, अमरसिंघ जयमल फत्ता सूं लेर डूंगजी जवारजी, लोटियो जाट, बारठ केसरीसिंघ, प्रतापसिंघ, परमवीर पीरूसिंघ, सैतानसिंघ, कवेसरां, सूरजमल मीसण, आढै दुरसै, बारठ ईसरदास राठोड़ पृथीराज; ख्यातकारा कविराजा स्यामलदास, मुंहतानैणसी, सिंढायच दयालदास इण रजवट्ट नै अमर कीनी।

इण सदा सुरंगै मरुधर मे रूप री गवर मरवण अर मूमल आपरा कूंकूं पगल्या धर्‌या। ढोले-मरवण, मूमल मैन्द्रे अर बाघै-भारमली रै हेत रा गीत गाईजै।

इण धोरां री धरती साथै सेजै पांणी, हरियाळी जठै कोयला टहूका करै अर भाखरां री धरती ई है। ढूंढाड़ रा लोगां रा ठट्‌ठा करीजै।

गाजर मेवो कांस खड़, पुरखज पून उघाड़।
ऊँधै ओभर इसतरी, अइहो धर ढूंढाड़।।

पण आबू री छिब देखण जोग है—

टहूके टहूके केतकी, झरणै सूं जळ जाय।
आबू री छिब देखतां, और न आवै दाय।।

अगूणै राजस्थान री सिरमोड़ उदैपुर है। भीलांरी धरती री भाठी वणणोई सौभाग री वात है—

भाठा तूं सम्भागियो, पीछोळा री रग्ग ।
गुल लजा पांणी भरै, ऊपर दे दे पग्ग ।।

फूलां री कोमड़ी जैड़ी ललनावां अठै जलमैं—

उदियापुर री कोमणी, गोखां काढ़ै गात ।
मन तौ देवां रा डिगै, मिनखां कितीक बात ।।

साची है—

उर चवड़ी कड़ पातळ, झीणी पासळियांह ।
कै हूर भजिया मिळै, कै हेमाळै गळियांह ।।

अर चित्तौड़ री तौ भाठौ-भाठौ देव अर घर घर धाम है । अठारी माटी तिलक लगावण जोग है । धिन है इणरी गोद नैं जका अस्सी घावा रै धणी राणैं सांगै

गीध कळेजो चील्ह उर, कंका अंत विलाय ।
तौ भी सौ धक कंतरी, मूंछां भौंह मिलाय ।।

परताप जैड़ा सूरमा

जननी तूं ऐड़ा जणैं, जैहड़ा रांण प्रताप ।
अकबर सूतो औझकै, जांण सिरांणै साप ।।
अकबर पथर अनेक, कैइ भूपत भेळा किया ।
हाथ न लागो हेक, पारस रांण प्रतापसी ।।

भामासाह जैड़ा साहूकार, पन्ना जैड़ी धाय, महाराज चतरसिंघ जी मीरा जैड़ा भगत, पदमणी जैड़ी बहू अर चेटक जैड़ा अणदागल घोड़ा रमाया ।

लीला मो पहली पड़ै, कीध उतावळ काय ।
वाल्हा कंवळां पाळियो, पडतो मूफ पोचाय ।।

चित्तौड़ रा पांणी री कोई बराबरी नीं कर सकै । मरण-तिंवार अठै मनाईजै, जौहर अठारी व्रत है । किला री काळी पड़्योड़ी भींता, पछीतां जुगां जुगां सूं यो इतिहास खोल्यां खड़ी है ।

इण इतिहास अर संस्कृति री राथापोथी नैं संभाळता थकां राजस्थांन हुणा री सदी में जो पसवाड़ो फेर्‌यो है, वीनैं कोड-कोड़ रंग है । जठै अेक मेह अेक मेह करता पीढ़्यां पूरी व्हैगी, वठै राजस्थांन नहर रै छाळा मारतै पांणी में काग डूबै । जठै लोग हळ. माथै हाथ नी देवता बठै री जमी देस रा धान निपजावणिया में आगेड़ी है । बिजळी रा कुवा, बंधा अर कारखाना री मुकळायत सूं अठारी किसांनां अर मजूर घणौ मस्त है । गांव-गांव अर ढाणी-

ढांणी में स्कूलां, सफाखानां, बिजळी, पांणी अर सड़कां री घणी सुख है। मेळो डवोळा, वार तिवार, ऐढ़ै टांभ अठैंरा बसेवानां में जो हेतप्रेम है, ग्रंजस री बात है।

इण रूड़ै राजस्थांन री बखांण करतां कोई धाप नी आवै। अठैंरी धरती माथै अवतरण नैं देवता तरसै अर मन डिगावै जको अठैंरा जाया-जलम्या आपरैं भाग माथै इतरावै, गुमेज करै, उणरौ वडो भाग है।



ग्रावाज नै सुण'र कंजूसां रै मन मे घणी पीड़ होवै जकी मोत दिना ताई मिटै कोनी—

लो घड़ता ज लुहार, मन सु ग्भई दे-दे भणैं ।
सूंमां रै उर सार, रहे घणा दिन राजिया ।।

सीता रा पति भगवान राम सब कुछ जाणैं है । उणां सूं कोई बात री लुका-छिपी मत करौ । जे लुका-छिपी करस्यो तौ सीतळा माता री गत होसी । सीतळा माता नै धरती पर चढ़ण खातर भगवान राम गधो दियो—

"सीतापति सब जाण, कांइ अतवी न करौ ।
मह सीतळा मल्हाण, रासभ दीनौ राजिया ।।

या ठाकरां पर कौनै हंसी कोनी ग्रावै जका खुद तौ बेखबर रैवै अर ग्रापरै कनै मूरख मिनखा नै राखै । ग्रा री हालत तो वी ग्रांधै जिसी है जकै नै पत्तो ई कोनी कै वो कठीनै जावै है । ग्रागै रस्तो सीधो है कै गैरो खाडो है । ग्रा नै भगवान भळै ई बचाल्यो नी तो बचणा मुस्कल है—

सुध-हीणा सरदार, मत-हीणा राखै मिनख ।
ग्रस ग्रांधौ ग्रसवार, राम रूखाळौ राजिया ।।

लोग कैवै—ग्रब ग्रौरतां रो राज ग्राग्यो । राणी विक्टोरिया नै देखल्यो चायै घर में देखल्यो । मरद लुगाई रै लारै लारै चालै । के जमानो ग्रायो है । पण ग्रा कथा कोई ग्राज री नुवी कथा कोनी । तीन तिलोकी रो नाथ किसन भगवान राधाजी सूं डरतो उणां रै पगा पड़ै । पछै दूजां मिनखां री तौ कैवणी ई काई । दुनिया में इसो कुण है जको ग्रापरी लुगाई सूं कोनी डरै । वो तो प्रेम सूं हाथ जोड़्यां वियै री सेवा में त्यार रैवै—

हित कर जोड़े हाथ, कामण सूं न डरै कवण ।
नमै त्रिलोकीनाथ, राधा ग्रागळ राजिया ।।

ग्रब तौ डाक्टर लोग ई तमाखू पीणै रा नुकसाण बतावण लागग्या, पण पैली ग्रां नै कुण रोकतो । जागां-जागां हुक्कौ पीणिया री जमघट दीखतौ । समझाणै सूं मानता कोनी । तमाखू पीणै सूं दमै री बीमारी होवै । बुढापै में सारी रात खांसता खांसता बीतै । नींद ग्रावै नीं । कफ थूकता थूकता घर नै नरक सो गन्दो बणा लेवै । मर्‌या पछै ई हुक्को पीणिया सुख कोनी पावै । ग्रागै भगवान रै दरबार में भी उणां पर मार पड़सी ।

होका पीवणहार, जासी नरकां जीवतां ।
पाछै पडसी मार, राम कचेड़ी राजिया ।।

'राजियै रा दूहा' यूं तो नीति-प्रधान है पण इयै में व्यंग्य तो पैंडै पैंडै पर है। जको मिनख जिसी संगत में रहसी विसी वाता ई सीखसी। ग्रोछै आदम्यां रै बीच में रैणियो महापुरसां रा गुण कठैऊं सीखै। टीटोड़्या री टोळी मे रैता थकां राजहंस री सी बोल-चाल री रीत-भात कोनी ग्रा सकै—

आवै नहीं इलोळ, बोलण चालण री विविध।
टीटोड़्यां री टोळ, राजहंस री राजिया।।

लड़ाई मे जीत रो असली कारण फौज कोनी। असली कारण तो बादर मुखिया है। जे प्रधान वीर होवै तो वडै सूं बडै किलै नैं ई मामूली सेना जीत लेवै। लंका जिसै विकट किलै नैं साधारण रीछ अर बांदरा जीत लियो क्यूं कै बारा मालक रामचन्द्र जी लूंठा वीर हा—

कारण कटक न कीध, सरवरा चाही जै सुपह।
लंक विकट गढ लीध, रीछ वानरा राजिया।।

आदमी देखण में चाये फूटरो मत होवो पण गुणी होणो चाईजै। गुणी रो ई आदर होवै। देखण में फूटरो पण गुण बाय रो मिनख के काम रो? कस्तूरी रंग री काळी होवै अर देखण में कोजी लागै पण आपरै गुणा रै कारण मैंघी बिकै अर कांटै पर तोळा मासां सूं तोलीजै। सक्कर देखण मे घणी फूटरी दीसै पण उण मे कस्तूरी जिसा गुण कोनी। इयै वास्तै वा भाटा सूं तोली जै—

काळी भोत करूप, कसतूरी कांटै तुलै।
सक्कर बडी सरूप, रोड़ां तूलै राजिया।।

जठै लोगां में समझ कोनी होवै बठै चीज री गुण-दोस ई कोनी पिछाणीजै। सारी चीजा टकै सेर। गुड अर खळ दोनूं अेकै भाव। इसी अन्धेर नगरी सूं तो जंगळ में रैणो आछो है—

खळ—गुळ अणकूंतांह, अेक भाव कर आदरै।
ते नगरी हूंतांह, रोही आछी, राजिया।।

नासमझ आदमी दूजां रो नुकसाण करै। समझदार मिनख रो ईंस्यूं क्यूं बीगड़ै कोनी। पण आ बात समझदार नै दोरी लागै। गधो दूजां री बाड़ी मे बड़'र बठै खूंद खूंद'र खावै। हरेक आ ई सोचै कै बाड़ी आपा री कोनी, आपा क्यूं चिन्ता करां। पण समझदार आदमी रै मन में आ बात खटकती रैवै कै देखो गधो बाड़ी रो नास कर र्‌यो है—

खूंद गधेड़ो खाय, पैलां री बाड़ी परै।
आ अणजुगती आय, रड़कै चित में राजिया।।

काम करणियो गैरो आदमी तो आपरै गेलै मस्ती सूं चालतो रैवै। जे कोई ओछो मिनख उण नैं देख'र रोळा करै, रोकणो चावै तो आ बात फिजूल सी लागै। हाथी रै लारै घणां ही गडका फिजूल में भुसै, पण हाथी उण री परवाह कोनी करै—

गहभरियो गजराज, मदछकियो चालै मतै।
कूकरिया बेकाज, रोय भुसै क्यों राजिया॥

कोई संगीत री जाणीकार मूरख कनै जा'र आपरी कळा दिखावै, तो यूं लागै कै "भैस रै आगे वीण बजाई, भैंस रही पगुराय।" घणै जंगल मे जाय'र जे कोई जोर सूं रोवै, तो उण री सुणाई कुण करसी। मूरख रै सामनै आपरा गुण दिखाणां जंगळ में रोणै रै समान है—

"गुणी सपत सुर गाय कियो किसब मूरख कनै।
जाणै रूनो जाय, रोही में नर, राजिया॥

आदमी पेट खातर के कोनी करै? 'बुभुक्षितः किम् न करोति पापम्?' भूख मरतो आपरै फरज नैं भूलज्यां। लुगाई टाबरा नैं बेच दे। और तो और चावै जको पाप करण नैं त्यार हो ज्यावै। ईं सूं आ बात साफ है कै दूनिया में रोटी मिनख री पैली जरूरत है—

जग में दीठो जोय, हेक प्रकट विवहार म्है।
काम न मोटो कोय, रोटी मोटी राजिया॥

डूंगर पर जळती आग नै सगळा देखै पण आपरै पगां कनै लाग्योड़ी लाय नै कोई कोनी देखै। दूजा रा तो छोटा छोटा दोस ई लोगा नैं घणा मोटा दीसै पण खुदरा मोटा मोटा औगुणां कानी उण री निजर ई कोनी जावै। आ दुनिया री अनोखी रीत है—

डूंगर जळती लाय, जोवै सारो ही जगत।
प्राजळती निज पाय, रती न सूझे राजिया॥

भायला सूं मसखरी आछी कोनी। मजाक करणै सूं कई वार तो दोस्ती टूट ज्यावै। दूध में खटाई नाखणै सूं वो दही बण ज्यावै। दही बण्यां पछै उण रो रूप, गुण, सुवाद सोक्यूं बदळ ज्यावै। दोस्ती रै दूध में ईं जे मसखरी री खटाई पड़ ज्यावै, तो फेर पैली हाळो भायलो चारो कोनी रैवै। इयैं वास्तै दोस्त सूं मजाक नही करणी—

तुरत बिगाड़ै ताह, पर गुण स्वाद सरूप नै।
मितराई पय माँह, रिगळ खटाई राजिया॥

आदमी नैं लागती बात कदेई नहीं कैणी । चुभती बात इसी लागै कै जिन्दगी भर वुण रौ घाव कोनी भरै । तरवार री लाग्यां जे घाव हो ज्यावै तो दवाई लगा'र पट्टी बांधणै सूं थोड़ै दिनां में घाव भरज्यावै, पण चुभती बात सूं काळजै में जकी चोट लागै बियैनैं ठीक करण सारू रत्तीभर ई कोई दवा-दारू कोनी । इयैं वास्तै आदमी नैं हमेसा सोच समझ'र बोलणो चाइजै । आ नहीं कै मूंडै में आई ज्यूं ई काढ़ दी । कैवत है कै आदमी कुचालां इत्तो जल्दी कोनी मरै जितो जल्दी कुबोल्यां मरै । बात रौ घाव बड़ो गैरो होवै है :—

"पाटा पीड़ उपाव, तन लागां तरवारियां ।
वहे जीभ रा घाव, रती न ओखद राजिया ।

समै बडो बळवान है । कदैई आछा दिन तो कदेई माड़ा दिन । कदेई महल माळिया तो कदेई टूट्योड़ी झूंपड़ी । कदैई—छप्पन भोजन तो कदैई दाणां री ई सांसो । विधाता री ईं लीला नैं कोई नहीं जांण सकै । काल ताणी जकां नैं भात आछो कोनी लागतो, षट्-रस व्यञ्जन ई सुवाद कोनी लागतो, वै समै रै फेर सूं आज रोट्यां रै टुकड़ां खातर रोवै है—

भावै नहीं ज भात, लागै बिजण बिढावणा ।
रीरावै दिन रात, रोट्यां कारण राजिया ।।

असल में किरपाराम जी री वांणी में हास्य तो कम है पण व्यंग्य भौत है, जको उणां रै नीति रै दूहां नैं सूतै उपदेस री संज्ञा सूं बचा'र ऊंचै काव्य री श्रेणी में ले ज्यावै ।



डर

□ अमोलक चन्द जांगिड़

डरतौ हर हर करतौ मिनख लगै री जात सीधौ होजावै। हळाडोब हो जावै पसेव सूं। अर थर थर धूजण लाग जावै डर सूं। आकडो—सेजड़ौ'ई भूत बण जावै। वो रा ठाडा वीचार अचक-बचक हो'र इयांसा भागै जिया गधै रै सिर सूं सीग। वी री सगळो व्यक्तित्व'ई रुळ-खुळ जावै; अंनांण-सैनाण ई समरथी रै सांमी नी टिक पावै; काळजौ आपरी जगां छोड़ देवै—इंयालो होहै डर-भौ।

डर अंयाली कोजी अबखाई होहै के मिनख नै जेजलौ कर गेरै। वी रै जीवण रै बोझै ने इस्यौ सूकावै के लाधै नी डांड, फळ री बात'ई मूंडै मे क्यूं घालो। विचारै मिनख रौ जीवणो हरांम हुजावै। सास निकड़ै कोनी बाकी क्यूं बचै कोनी। स्यात् कदै सांस निकड़ ई जावै तौ की अचम्भौ नी।

जिनगानी भगवांन री दीयोड़ी सूंठी चीज है। ईं नै जे मिनख डर-भौ सूं परै राखणो सीख जावै तौ इंसूं वेसी सुख कठै नी लाधै। चोखा-चोखा सत-मातमा आहीज सीख देग्या क जीवणै रो रहस खोज्यां मिळसी अवस पण मिळसी सुख रै नेड़ै रैवासूं अर डर-भौ रै रावण नै जीवण-रेख सूं परै राखणै सूं।

डर तौ जैर रौ अैडो जोहड़ है जिमे अेकस्यां आदमी खळखोटौ ले लेवै तौ वो वावळै ज्यूं रड़वडतौ फिरै। जे वो दूजै मिनख रै बटकौ भर लेवै तौ बौई धिरनी-चक्कर खा जावै। सो डर रौ तौ सांमी छाती मुकाबलो करै जणा सावळ पासौ पड़ै। क्यूं क डर अेक कूडी कळपना है जिनै मिनख काळी कामळ ज्यूं आपै ओढलै है। ओहीज मिनख रौ घणौ मूरखापण है अर अेक वावळी भूल है।

डर नैं भगावा में बीजां मिनखां री जुरत कोनी। बैं कांईं ग्राडा ग्रा सकै है! भगवान बीं नैं साथ देवै खुद ग्रापरौ साथ ग्रापनैं देवै। ग्रातमा नैं बळवान बणाई राखणौ ग्रर दिरड़ सकळप सूं कांम लेवणौ ई भो सूं मुगत होवणैं री रामवाण ग्रौसद है। जणा पाछै सुख-सोमती सूं दिन तोड़्या जा सकै है।

डर रौ असर न्यारौ'ई हुवै है। बौ निराकार हुता थकां पौड़ा-पौडा पर साकार दीखै। राई रौ डूंगर बण जावै ग्रर झूठ रौ सांच हुजावै; छाऊं-मांऊं लुक'र पाछै सगळै सरणाट करै; निबळौ हुता थकां बळवांन दीखै। बौ संका खिडावै, मन रै भचोड़ा मारै ग्रर चानणैं री जगां ग्रंधारौ चावै। बौ ग्रादमी रौ ग्रव्वल दरजै रौ दुसमी होहै। बीं पर जीत री डकौ कोई वजर री छाती वालौ'ई बजा सकै है। बठै कायर काळजै री विसात कांईं!

दिनां रै फेर सूं बीखौ ग्रा पड़ै। कसट रौ कळायण उमटावै। चाणचकै कीं ग्रणहोणी नी हुजावै रौ विचार काळजै नैं घालणौ बेज कर-गेरै। मन ग्रणूतै भय सूं धूजण लाग जावै। जणा ग्रादमी परिस्थितिया रौ दास होवै है ई, ग्रर थाकेलै सू हार मान बैठै। फेर ग्रापरै भाग नैं कूड़ी गाळयां भांडै। विचारौ भाग कांईं करै। ग्राप कमाया कामणा दई न दीजै दोस। ग्रा मिनख री मजबूरी है। मन रै हारै हार है मन रै जीतै जीत। ग्रातमबळ सूं मिनख री सगळी जीत हुवै। सबसूं पैली मिनख ग्राप पर भरोसौ राखै ग्रर भगवान पर ग्रटूट ग्रास्था। सबक्या सूं गजब रौ है ग्राप रै बळ रौ भरोसौ। ईं रै बिना फतै मिळै कोनी। दूजौ-भगवान पर भरोसौ राखणैं सूं सगळा कारज सरै ग्रर सोयोडौ ग्रातमबळ पाछौ ग्राजावै। ग्रातमबळ सूं धीरज ग्रावै ग्रर धीरज मिनख रौ पक्कौ भायलौ ही है। धीरज ग्रायणौ ग्रोखौ है पण ग्रायां पाछै जीवण जीवणौ खरौ ग्रर मन ऊजळौ हुजावै है। फेर की लाट सा'ब रौ डर कोनी—धीरै धीरै ठाकरां धीरै सब कुछ होय।

ग्रापा नैं ग्रापणैं सूतै बळ नैं जगावणौ चाहीजै जिसूं ग्राधी जीत तौ घर री दैळ्यां मांय त्यार है; फेर बारै फतै पावणी घणी दौरी कोनी। भरोसौ विजय रौ मूळ मत्र है। डर-भो मौत सूं'ई बेजा। क्यूं क मिनख तौ ग्रेकबर'ई मारै पण डर तौ बावड़-चावड़ घेटुग्रां मोसै। पण कदे-कदे मौत रौ भय मिनख में ग्रणूतौ बळ भेळौ कर मेलै। कुतै रै हमलै सूं कूणै मे दब्योडी बिल्ली में ग्रथाह ताकत ग्राजावै ग्रर बा कुतै नैं फंफेड़ गेरै। चीन रौ माग्रो कैवै—'दुसमन नैं तीन नाका सूं घेरणौ चाहीजै। ग्रेक खूणौ बीरै भागवा खातर खुलो छोड़ देवणौ, सो ग्रासानी सूं भाग जावै नी तौ चारूंखानी सूं फंसेड़ो दुसमण घणौ खतरनाक साबत हुवै।' मरणियै नैं मारणियौ कुण!

डर

☐ अमोलक चन्द जांगिड़

डरतौ हर हर करतौ मिनख लगै री जात सीधौ होजावै । हळाडोब हो जावै पसेव सूं । थर थर थर धूजण लाग जावै डर सूं । भाकडो—खेजड़ी'ई भूत बण जावै । वी रा ठाडा वीचार अचक-बचक हो'र इयांला भागै जिया गधै रै सिर सूं सींग । वीं री समळौ व्यक्तित्व'ई रळ-खुळ जावै; अेनांण-सैनांण ई समरथी रै सांमी नी टिक पावै; काळजो आपरी जगां छोड़ देवै—इंयालो होहै डर-भौ ।

डर अंयाली कोजी अवखाई होहै के मिनख नै जेजलौ कर गेरै । वी रै जीवण रै बोझै नै इस्यौ मूकावै के लाधै नी डांड, फळ री बात'ई मूंडै मे क्यूं घालौ । बिचारै मिनख रौ जीवणौ हरांम हुजावै । सांस निकड़ै कोनी बाकी क्यूं बचै कोनी । स्यात् कदै सास निकड़ ई जावै तौ की अचम्भौ नी ।

जिनगांनी भगवांन री दीयोड़ी लूंठी चीज है । इं नै जे मिनख डर-भौ सूं परै राखणो सीख जावै तो इंसूं वेसी सुख कठै नी लाधै । चोखा-चोखा सत-मातमा आहीज सीख देग्या क जीवणै री रहस खोज्यां मिळसी अवस पण मिळसी सुख रै नेड़ै रैवासूं अर डर-भौ रै रावण नै जीवण-रेख सूं परै राखणें सूं ।

डर तो जैर री अेड़ी जोहड़ है जिमें अेकस्या आदमी खळखोटी ले लेवै तौ बौ बावळै ज्यूं रडवड़तो फिरै । जे बो दूजै मिनख रै बटको भर लेवै तौ वौई घिरनी-चक्कर खा जावै । सो डर रौ तो सांमी छाती मुकाबलौ करै जणा सावळ पासौ पड़ै । क्यूं क डर अेक कूडी कळपना है जिनै मिनख काळी कामळ ज्यूं आपै ओढ़तै है । ओहीज मिनख रौ घणौ मूरखापण है अर अेक वावळी भूत है ।

डर नैं भगावा में बीजां मिनखां री जुरत कोनी। बैं कांई आडा आ सकै है! भगवान बी नैं साथ देवै खुद आपरो साथ आपनैं देवै। आतमा नैं बळवांन बणाई रासणो अर दिरड़ संकळप सूं कांम लेवणो ई भो सूं मुगत होवणैं री रामबांण ओखद है। जणा पाछै सुख-सोमती सूं दिन तोड़्या जा सकै है।

डर रो असर न्यारो'ई हुवै है। वो निराकार हुता थकां पीड़ा-पीडा पर साकार दीखै। राई रो डूंगर बण जावै अर झूठ रो सांच हुजावै; छाऊं-मांऊं लुक'र पाछै सगळै सरणाट करै; निबळो हुता थकां बळवांन दीखै। वो संका खिडावै, मन रै भचीड़ा मारै अर जानणैं री जगां अंधारो थावै। वो आदमी रो अव्वल दरजै रो दुसमी होहै। बों पर जीत रो डंको कोई बजर री छाती थालो'ई बजा सकै है। वठै कायर काळजै री बिसात कांई!

दिनां रै फेर सूं बीखो आ पड़ै। कसट री कळायण उमटावै। चाणचकै की अणहोणी नी हुजावै रो बिचार काळजै नैं चालणी बेज कर-गेरै। मन अणूतै भय सूं घूजण लाग जावै। जणा आदमी परिस्थितिया रो दास होवै है ई, अर थाकेलै सूं हार मान बैठै। फेर आपरै भाग नैं कूड़ी गाळयां भांडै। बिचारो भाग कांई करै। आप कमाया कामणा दई न दीजै दोस। आ मिनख री मजबूरी है। मन रै हारै हार है मन रै जीते जीत। आतमबळ सूं मिनख री सगळी जीत हुवै। सबसूं पैली मिनख आप पर भरोसो राखै अर भगवान पर अटूट आस्था। सबक्या सूं गजब रो है आप रै बळ रो भरोसो। ई रै बिना फतै मिळै कोनी। दूजो-भगवान पर भरोसो राखणैं सूं सगळा कारज सरै अर खोयोड़ो आतमबळ पाछो आजावै। आतमबळ सूं धीरज आवै अर धीरज मिनख रो पक्को भायलो ही है। धीरज आवणो ओखो है पण आयां पाछै जीवण जीवणो खरो अर मन ऊजळो हुजावै है। फेर कीं लाट सा'ब रो डर कोनी—धीरै धीरै ठाकरा धीरै सब कुछ होय।

आपां नैं आपणैं सूतै बळ नैं जगावणो चाहीजै जिसूं आधी जीत तो घर री दैळ्या मांय त्यार है; फेर थारै फतै पावणी घणी दोरी कोनी। भरोसो बिजय रो मूळ मंत्र है। डर-भो मौत सूं'ई बेजा। क्यूं क मिनख तो अेकबर'ई मारै पण डर तो बावड़-बावड़ घेटुओ मोसै। पण कदै-कदै मौत रो भय मिनख में अणूतो बळ भेळो कर मेलै। कुतै रै हमलै सूं कूणै में दब्योड़ी बिल्ली मे अथाह ताकत आजावै अर बा कुतै नैं फफेड़ गेरै। चीन रो माओ कैवै—'दुसमन नैं तीन नाका सूं घेरणो चाहीजै। अेक खूणो बीरै भागवा खातर खुलो छोड़ देवणो, सो आसानी सूं भाग जावै नी तो चारूंखानी सूं फंसेड़ो दुसमण घणो खतरनाक साबत हुवै।' मरणियै नैं मारणियो कुण!

सो डर सूं डरणैं री जुरत कोनी। वींसूं फकत दो दो हाथ करणैं री जुरत है।

डरणो मिनख री निवळापन है। स्वामी विवेकानन्द कैया करता के डर कर अर निबळो होकर जीणो'ई महापाप है। नेपोलियन धड़ क'र बोलतो क जिनै हारणैं रो भय है वो जरूर हारसी। डर री भावना आणै रै साथै मिनख रो मन सफळता री आसा छोड़ देवै अर हार रो हार गळै घाल लेवै। अंयां कांम नी चलै, डर रै खनै गयां डर भागै।

फेर निरभै कुण है ? निरभै वो है जिरो अंतस दूध धोयो है, जो दिन नै दिन अर रात नै रात नी समझै भलो करणैं में। दुखियां रो दुख दूर करणैं मे लाग्यो रैवै अर डर सूं सहज मुगती दिरावै; की नै नीं सतावै अर बदळै री भावना सूं कांम नी करै। जिरै हिरदै में दया, छिमा आद हिलोरा लेवै अर तपसी रो जीवण जीवै। जिरो मन गुलाब सो मुळकै अर सुवारथ सूं कोसा दूर रैवै। जया-जया मिनख ईरखा, लोभ अर सुवारथ सूं अळगो होतो जावैलो तयां-तयां वो आतमा पर विजै करतो जावैलो अर 'सत्य शिवं सुंदरम्' रै परकोटै मे निधड़क विचरैलो।

निरभै रैवणो हिरदै मे अणूतो आणद देवै। परमातमा रो अंस जीव घणो हरख करै, जिसूं जागरण रो संख फूंकै। पण मो'-माया रो भरमायेड़ो मिनख ताबळी सो सत्ता-गरब सूं हटै कोनी। ई ससारी रा भौतिक सुख-सुभीतो वी री नस-नस में रम जावै अर वी री भीतरली सांति नै उड़ा देवै। असल मे मिनख मन नै मोह सूं मुगती दिला'र'ई ऊंचो उठ'र जीणो सीख सकै है। क्यूं के सुख-भोग रै जाळ में फस्यां पाछै आदमी डर सूं आजाद नी हु सकै। वी रै गरब रो कादो लाग जावै। धन-संपत हुवणैं सूं वो राज-पाट सूं डरबोकरै, मांन होणै पर अपमांन सूं डरै, राज करै तो दुसमण सूं डरै, जोबन रो जोर बुढ़ापै सूं डरै अर काया मौत सूं डरै। कैवणै रो अरथ श्रो है क डर मिनख नै चारूमेर सूं घेर राख्यो है। वीं सूं पिंड छुड़ाणो मिनख री भीतर री ताकत पर निरभर करै है, जे वो अपणै आप नै बस में राखै। फेर डर में बड़्यां डर भागै। सो मिनख रो मंगल ईं बात में'ईं है क वो सब बगा में निरभै रैवै अर भगवांन मे आस्था राखै।



लोग के केवैला

☐ त्रिलोक गोयल

घटना दुरघटना आ हुई क रामसरूप जी मास्टर सूं हैडमास्टर होगा। कीयां होगा ? आ बात पड़दै री है, पड़दा मे ईं रहवा द्यो, पण होगा जो तो होई गाक ? गळा में पट्टो तो पड़ई गोक ? डांड, पटेलाई अर थाणेदारी री मजो अमलाण्या जस्यो खटमीठो हुवै है, चटखारा ले लेर वै ई ऊरो सवाद लेबा लाग्या, मालम तो पो फाट्यां पड़सी क ?

नवो मीयां अल्ला अल्ला पुकारै। इब हैडमास्टर साब री मन री मिनकी नै सुपना ई आवै तो स्कूली भूसां रा। कागदी योजनावां अर थोथा उपदेसां सूं ईं जे सो क्यूं हो जातो हुवै तो रोवणो ई क्यां रो ? असल बात आ है क अै जतराई 'टर' है क, अै लारला तीस-पैंतीस बरसां सूं निरथक ई 'टर टर' करै है, जे अै 'कर कर' री पाठ पढ़ लेवता तो औ मुलक आज कठै री कठै पूग जावतो।

रामसरूप जी हैड हा पण हा तो 'टर' क ? आपरा मास्टरी जीवण मे जीयां बखत बितायो वीमे कोसीस कर्‌या ईं घणो बदळाव आणो सहज सरल नी हो, पाका घड़ा पै माटी कतरीक टिकती ? म्हारै कहणै री औ मतबल नी है क वै कोई खोटा मास्टर हा, आज रा घणकरा पेट भरू जीव जीयां होवै है, बीयां ईं वै ई हा। हां आ कह सको होक पोथा पुराणां मे बतायोड़ा आदरस गरू जसी गरिमां व्यां में नी ही, हरेक सूं असी आसा राखवो ई बैल नै दूणो जस्यो ई है, आदरस चाद सा चिमकणा अर ऊंचा हुवै है, कोई बिरला रै ई हाथ आवै, जे रामसरूप जी रै हाथ न आसक्या तो व्यांरो के दोस ? मिनख तो आखिर मिनख ई है क ? वो मन नै कतरीक

बस में राखै ? क्यूं राखै ? जीवतौ पिराणी भाठा रौ कीयां हुवै ? देवता कीकर वर्णै ?

हैडमास्टर जी रा संस्कारां रा रूंख मे बीज तौ गावा रौ न फळ सहरा रा, कदैई कदैई दो चार फूल विलायती ई लाग जाता हा। ई रूंखड पै बैठ्यौ श्रेक काळौ कागलौ बरावर श्रा कांव कांव कर्‌या करतौ हौ क लोग कांई कैवैला ? 'दुनियां कांई कहसी ?' कागला री श्रा कुवाण व्यानै केई खोटा चोखा कामा सूं रोक देती, ऊं री श्रा टेम कुटेम री टोका टोकी व्यांरी सुतन्तरता पै बाधक रा सड़ाका सी ही।

परै तौ हैडमाट साब धोती ई पैरता हा पण स्कूल जाती टेम पायचा टांकर ऊं पै ई पतलून ठांस लेवता, व्यानै श्रवखी तौ घणी ही लागती, पण कागलै री सावचेती नै कीकर नकारता क छोरा टिमल्यां उडासी, मास्टर्‌या वाता वणासी क ढीली धोती रा हैडमास्टर सूं तौ चपडासी ई चुस्त लागै।

जठै ती व्यानै याद है व्यांरी तीन पीढी तीं रा वडका मे मोजा जूता श्राज ती कोई नी पहर्‌या। श्राजादी पगां रौ जळम सिद्ध श्रधिकार हौ। बिदेसी बेवसी सूं जे कदेई देसी पगरखी मे वन्दी हो णौ ई पडतौ तौ ऊं काळ कोठरी व्यांरा चरण कँवळ रौ जीव श्रमूभतौ, बासता। हैडमास्टर ई समै रौ पावन्द नी होसी, तौ दुनियां कांई कहसी ? ऊभा गास्या लेता रामसरूप जी रावडी री लार डवत रोटी निगळ'र झट चपलां श्रटका'र स्कूल नै वीर हुया, गैला मे व्यांरी छोरी कांन रै ट्रांजिस्टर लगाया किरकिट री कमेन्ट्री सुणतां इंजन ज्यूं फक-फक धुंश्रां उगळती श्रार्‌यौ हो, वौ पूठ पिछाडी हाथ करै ऊं कै पैलां ई श्रै ऊरौ कान पकड'र लवडधक्या......"सूश्रर गेला में सिगरेट फूंकता तनै लाज सरम नी श्रावै, लोग दुनिया के कहसी क हैडमास्टर रै छोरा रा लक्खण देखो, श्रै दूजा रा टावरां नै के सुधारैला ? सुपातर बेटौ बापरी कमजोर नस पकड़ी, मात नै पलटी देर बोल्यौ—"पैंट पै चपला ? राम राम श्रो कस्यौ पहराण, देखण हाळा भला श्रादमी के कहसी ? ल्यौ श्रै म्हारा वूंट पहरल्यौ दोरा सोरा श्राई जाश्रो, चपलां म्हनै दयौ !" मूल मुद्दौ तौ हुवा में उडगौ'र भोळा-ढाला हैडमास्टर जी घंट चालाक छोरा रा मोजा जूता कीया जीया ठांस ठूंसर, पगां रौ मुरनौ वणावता स्कूल पुग्या।

गाळ्यां'र घी री नाल्यां। टावरपणा सूं ई वै छूट्टा सेल्या खाया हा, व्यांरौ हर मद् वाक्य फाटी फूहड गाळ्यांरा किरिया करम श्रर श्रलंकारा सूं लद्‌यौ फद्‌यौ होतौ। साफ सूधा हिवडा सूं नीसरी श्रै श्रोरिजनल सुद्ध गाळ्यां, गाळ्यां नीं ही मनुस्मृति रा स्लोक हो, व्यांरी श्रभिव्यक्ति री मौलि-

कता, स्वाभाविकता ने सरलता ई ही। सबदकोस रा संकुचित अरथां सूं वां सुनेरी सबदां रा अमोलक भावां री की लेणी देणी नी ही पण इव करै के ? हैडमास्टर होता ईं पग पग पै कागलो कुरळावै— छोरां पै के असर पड़सी ? बीयां रामसरूप जी आ आछीतरां सूं जाणै हा के घाट घाट रा पांणी पीयोडा छोरा गाळ्यां रा मामला में गरूजी रा गरूजी हुवै है पण वै कागलै रा हुक्म सूं जीभ रै लगाम लगार फूंक फूंकर बोलता, मांय ई मांय घुटता, सावधानी व रततां बरतता ईं जे कदैकाण भूलचूक हो जाती तो मन ई मन कांन पकडर ऊठ बैठ लगाता, ब्यांनै अयां लागतो जांणै काल रो रामसरूप दूजो हो अर आज रो दूजो।

आ अतिसयोक्ति नी वास्तविकता है क कड़क सूं कड़क हैडमास्टर री हैडमास्टर घरहाळी ई हुवै है। लाण हैडमास्टरणी साव रामजी री गाय ही, पण पुरबला पुण्य सूं हैडमास्टर होतां ही रामसरूप जी ऊंनै सूल्याणी समभादी क "इब तूं मास्टरणी नी, हैडमास्टरणी होगी है तनै स्टेण्डर्ड सूं रेणी पड़ैलो, गंवारू अर जूना पुराणा सगळा ढंगढाळा बदळना पड़सी"। बीयां हैडमास्टरणी चावै कक्को कोडीडो ई न जाणती ही, पण पीर सासरै दोन्यूं ईं ठौड आ पक्की पाटी पहलां ईं पढ्योडी ही क जे दुनिया नै आंगळी उठावा रो मौको न देवै वो कदैई ठोकर न खावै, इब हैडमास्टर जी रै वार्निंग देबा पै कोढ में खाज होगी, सुरखाव रा पर ई नीसरगा, घाघरा लूंगडी भुसमुसार मटकामें मिलीजगा न साड़ी पेटीकोट खूंट्यां पै टंकगा, हां आ बात दूजी है क ऊंनै ऊर्ध पल्लारी साडी पहरवौ परलोक जातां तौ नी आयौ जो नी होज आयो। अेक सूं दो भला, आप डूबता पांडिया न लेडूब्या जजमान। खोडलो कागलो दोन्यां रै ई माथै बैठ बैठ'र कां"""कां करयाई करतो। जे हैडमास्टर जी कोई काम जग हसाई रो करता तो कागलो हैडमास्टरणी मे बड बड बोलतो, जे हैडमास्टरणी अस्यो कोई काम करती तो कागलो हैडमास्टर जी में बड जातो, ईं तरां तिसळता तिसळता दोन्यूं अेक दूजा नै संभाळता—कदैई दोन्यूं संभळ जाता कदैई दोन्यूं धडाम।

अजंता मे 'लव इन सिमला' चाल री ही, रामसरूप जी बोल्या आज दीतवार री छुट्टी है, चालो पिक्चर ई देख्यांवा, हैडमास्टरणी रो कागलो तुरत अैंव करी *'हैडमास्टर होर लव अव रा सलीमा देखो कोई स्कूल रा टावर* मां बाप रै सागै मिलग्या तो के कहसी ? आपां तो मेंजेस्टिक मे नानी बाई रो मायरो देखबा चालस्या" । गया। इन्टरवल में बारै आया तो ठेला हाळा कनै फूल्या फूल्या पाणी रा पतासा देख'र हैडमास्टरनी रो मन चाल्यो, मन

तो हैडमास्टर जी रो ई चाल्यो, पण खुद अनीत प चालै तो दूजां नै की कर बरजै ? हैडमास्टरजी नैं कह्यो "जे पतासां पीतां कोई देख लियो तो तड़कै लोग बाग आ ई कहसी क ऐं बै ई हैडमास्टर है नीं जो सड़कां पै ऊभा ऊभा दूना चाटै ? नीं बाबा नी, ठाला कांम रो असी जोखम कुण उठावै ? आपां तो पावली री मूं फळ्यां ले चालस्यां जो अंधारा में बैठ्या कुड़ कुड़ाता रहस्यां"।

मास्टर हा जदांती तो छोरी रो ब्याव बीस पैंतीस में निबट जातो, पण हैडमास्टर होर जै पचास साठ हजार न लगावै तो लोग माजना में धूळ नी नाखसी ? मास्टरी में अर हैडमास्टरी में नींठ सो रूपल्ली रो आंतरो अर बोझ जमाता भर रो ! सरकार, छोरा, जनता अर मास्टर चार विगडेल सांडा सूं बापडो अेकलो हैडमास्टर कीकर बाथ्यां पड़ै। जण जण रा मन राखतो वैस्या रहगी बांझ। सो दो सौ री ट्यूसनां तो दैड़ में गई जो गई, दो चार अठी ऊठी रा पार्ट टाइम काम कर'र की हाथ खरच काढ़ लेता हा, बा और मारी गई। हैडमास्टर होतां ई कागलो की वेसी ई पगला गो, हीड़क्या कुत्तारी जीया कूं.......कूं कर्‌या ई करतो।

थोडा दिना में ई रामसरूप जी ढील मे आधा रहगा, बैंक बैलेंस निल। कदां कदा वै अेकता मे आपूं आप सूं सुवाल करता 'म्हनैं आ बाटी खातां बूजी क्यूं आई ?' पड़ूत्तर ई खुदई देता के बूर रा लाडू खाय जो पिछताय अर न खाय जो पिछताय। अेक बर काठाई काया होर भुभळा'र रीसखार वै ई कागला रा कण्ठ पकड लिया "नासपीट्या तूं म्हनैं कठी रो नी छोड्यो, इब म्हैं म्हारै तांई नी दुनिया रै तांई होगो, सुख सूं खाणी-पीणी सोणी-जागणी सोवयूं हराम होगी, राममार्‌यो मुरादाबादी लोट्यो ई अस्यो गुड़कणो न होसी। अस्यी किरकिरी, बणावटी, अर बेमजा जिन-गाणी रो के करूं ?"

भिचा भिचा गळा सूं कागलो अरडायो "करमहीण कण्ठ तो छोड, लोग के कहसी ?" जीयां राजारामचन्दरजी रै हाथ लगातां ई सिव धनुस आपूं आप ई टूट गो बीया ई 'के कहसी ?' रा तकिया कलाम रो राम बाण छोडतां ई कागला रो कण्ठ छूटगो।

कागभुसुण्ड जी संसार अर आ कहतां उड़न छू होगा क "भाया लोग दुनिया रै डर सूं आदरसां री गळी सडी रामनांमी चादर नैं पीढ़ी दर पीढ़ी ओढणिया रूढळ्या बूढळ्यां लोगां री आ ई दुरदसा हुवै है, सोच समझ'र हिवड़ै सूं अपणाया ठोस आदरस ई उजाम कर सकै है।"



नुगरौ होग्यौ नेह

□ कल्याण सिंह राजावत

वाचक —मन उजळ तन उजळी, और उजळी नांव ।
वाचिका —ऊभी प्रेम पगोतियै, प्रेम कर्‌यो सर नांव ।।
वाचक —पोह् रौ म्हीनो सी घणी, ऊपर ओळा मेह् ।
तर तर गीला कापड़ा, थर थर धूजै देह ।।
वाचिका —काळा काळा बादला, भिड़ बरसै घनघोर ।
घणी झबूकै बीजळी, रैण दिवस अठ पोर ।।
वाचक —बरड़ा बीहड़ डूंगरा, ग्वाळां रौ इक गांव ।
चारण अमरौ धीवड़ी, बठै चरावै दांव ।।
वाचिका —बरसां ऊपर साठ रै, अमरौ बूढी जान ।
ऊजळ बरणी ऊजळी, बेटी जोध जुवांन ।।
[बरसात व्हैरी है, बादळ गरज रैया है अर
मांझळ रात में घोड़ै रा पोड़ सुनीजै]
वाचक —दड़बड़ घोड़ौ दौड़, थमियो अमरा री थळी ।
परवत लंध्या पोड़, थर थर धूजै थाकियो ।।
वाचिका —टूटै जिण बिष डाळ, घोड़ै सूं नीचै गिर्‌यो ।।
मुरछित है मूंधाळ, पोर बन्दर रौ पाटवी ।।
वाचक —खट पट सुण झट पट उठ्‌यो, द्वार बटाऊ जांण ।
लथ पथ देख्यौ मानवी, उडता दीख्या प्राण ।।
वाचिका —बळ सूं बूढो डील हो, मन सूं हो बळवांन ।
निसचै हुयो बचावणो, घर माया रौ प्रांण ।।

वाचक —अमरौ हे लौ देय नैं, बेटी ली बुलवाय ।
दोन्यूं ल्याया मायनैं, गूदड़ दिया ओढ़ाय ।।
अमरौ —राली, गूदड़ सौड़, ओढ़ायां नी तन तपै ।
तन नैं तन सूं जोड़, जीव बचै जद ऊजळी ।।
वाचक —बाप कहै बेटी सुणै, अण होणी सी वात ।
मेह वरसै बीजळ खिवै, सियाळै अधरात ।।
अमरौ —आज कहूं सुण ऊजळी, मूंघा है मिजमांन ।
आ री जान बचावणी, प्राणां की मत पांण ।।
वाचिका —अखन कवारी ऊजळी, पंथी मरद अजांण ।
की कर तन अरपण करै, बिन पोथी परवांण ।।
दोय परकमा देय नैं, साखी रख भगवांन ।
मन में मान्यौ देवता, तन री भैंटी तान ।।
समवेत —गिरस्थी धरम निराळौ
औ इमरत री घूंट और औ बिस रौ प्यालौ
मैंदी, चवरी, गीत, मांडणा, राखी रंग रूखालौ
मंगता, फिरता, संत, सूरमा, सां री साख संभाळौ
तीज, त्युहांर, ब्याव, मायरा, फागण घूमर घालौ
पीढ़ी पीढ़ी पीत्तर पूजो, अगली पीढ़ी पाळौ
घण मोला मिजमांन बटाऊ पंथी कदै न टाळौ
सुख सूं राखो सदा सदा ही, वरसां लग बरसाळौ
वाचक —सोळा वरसां ऊजळी, तन जोबण रै ताव ।
सूती सागै सामनै, बांहा रै पसराव ।।
वाचिका —पोह म्हीनै ओळां पिटयौ, जडग्यौ सारौ डील ।
जमग्यौ मे हौ जेठवौ, सोसा रंगी ढील ।।
वाचक —किरणां उगतै भाण री, ज्यूं हिम नैं पिघळाय ।
ताती छाती ऊजळी, मेहा नैं गरमाय ।।
जाग हुई जद जेठवौ, देखी सुवरण बेल ।
लिपटी लाय लगायरी, ज्यूं वाती में तेल ।।
जेठवौ —रामजी करी कांई माया ?
कठै-कठै सूं कठै चाल नै चाल कठै आया ।।
सागै कुण हा, कुण कुण म्हे हा, सगळा ही भरमाया ।
सिधा तणी सिकार खेलता, खुद ही तौ चित आया ।।

वाचक —जान बची तो मन जुड़ै, रूप रास री डोर।
पैली नैणा पारधी, चित अब होग्यो चोर ।।

वाचिका —प्रीत हुई अर प्रण हुया, रैवां ब्याव रचार।
पेचो बांध पधारस्यो, सज रैजे सिणगार ।।

वाचक —मेहा कुळ री जेठवो, पोरबद रा राज।
चारण कुळ री ऊजळी, बधिया प्रीत रिवाज ।।

वाचिका —बाथा बध बाचा बंधै, जोड़ी बिछड़ै जीव।
नैणा बंध इसड़ा ढुळै, समदर छोडी सीव ।।

वाचक —मेहो महला पूगियो, मन रहियो वन माय।
जोवण जुलम जणावियो, छीजै तन री छांय ।।

वाचिका —जद जद पुरवाई बहै, हुवै पुरबली बात।
मन रो घोड़ो जा थमै, झड़ लागी बरसात ।।

वाचक —दिस दिस ही ऊजळ दिसै, जद बीजळ झपकाय।
झिरमिर झिरमिर जे झरै, आंसूड़ा अघताय ।।

ऊजळी —कोल वचन कितरा किया, आयो नीं मन मीत।
अजमावै है ऊजळी, परदेसी री प्रीत ।।
धोरै चढ देखै धरा, राह राजवी रोज।
फीकी सी फिरती फिरै, खोदै मंडिया खोज ।।

ऊजली —आव जेठवा आव।
तन मन सारो थारो है रे, कीकर कर्‌यो दुराव ।।
तू कैवै तो फूलां हारा, मन हुद करू बणाव।
तूं कैवै तो चीर काळजो देवूं थनै दिखाय ।।
तन रो ताप घणू तापै है, तूं ना घणू तपाव।
छोटी सी जिनगांणी है रै, ज्यादा नहीं खटाव ।।
म्हांनै कीकर भूल्यो भोळा, अेकर दे दरसाव।

जेठवो —पीड़ा प्रीत पिछांण, पीडा सा पाछो फिरै।
प्रीत रीत परवाण, आस्यूं अेकर ऊजळी ।।
लोक लाज नै लोप, भूल राज रा भाव नै।
तन पै झेलुं तोप, आस्यूं अेकर ऊजळी ।।
तूं म्हारै तन जीव, सांसा रो सिणगार तूं।
नेह नगर री नीव, आस्यूं अेकर ऊजळी ।।

वाचक —लिख भेजें रानदेसड़ा, सदा उजळी नांव।
चक चक सारै चोखळें, समझे सारो गांव।
राजा सुणी राणी सुणी, सुणली सारा लोग।
राज कंवर रै होयगो, रूप रास रो रोग।।

राजा —सुण, राजरीत, प्रीत रीत नहीं पालणी
चित नीं चढाणो मीत, गीत है छदांम रो।
निजरां सूं बंधणो ना हिवड़ै सूं हारणो
बिधणो है अेकवार छत्री को बाण रो।।
परजा पर राज कर, राज री रूखाल कर
राज री संभाळ कर, राज है भो राम रो।।
समझै नही रे तू, समझै नहीं रे तूं
समझै नहीं रे क्यूं सार थारै काम रो।।

राणी —बेटा थारै ब्याव री, म्हानैं कोड घणूं ह।
फूलां तोली ल्याव सूं जोणैं जणं-जणूं ह।।
जाणैं जणं ह-जणूं ह, ठाठ सूं जान चढ़ैला।
रथ बैल्यां मे होड, गजब रा ढोल बजैला।।
छोरी सूं मन छोड़, निभसी नेह निठाव रो।
मावड़ रै मन मोद, बेटा थारै ब्याव रो।

राजा —राजपूत अर चारणी, बीर बैंण री जोड़।
ब्याव कदै नीं हो सकै, इसड़ो नातो तोड़।।
मोसा देसी मान सौ, पापी कहसी लोग।
नीत अनीत कहावसी, बधसी सगळै रोग।।
धन दै चाहे मोकळो, देय भलांई राज।।
रजपूती तूं राखलै, राख बाप री लाज।।

समवेत — जेठवो मन रै मांय बळै।
लोक लाज अर राज काज में किण विध प्रीत पळै।।
कदै धरम री धुजा धुजावै, कदैंक भरम छळै।।
मन तो रैग्यो काची माटी भय री बूंद गळै।
जेठवो मन रै माय जळै।

जेठवो —लिखदी सारी बात, नही मैं परण सकूंला।
थारी म्हारी जात, संगपण कदै न हो सकै।।

तूं ले आधो राज, भाण बणी राजस करी ।
करलै बीच समाज, ब्याव जात रै साथ में ।।

समवेत —पढ़ियो परवाणो ऊजळी, धर चक्कर खावै—
पढियो परवांणो ।।
जलम होयग्यो जहर मोतड़ी क्यूं नीं आवै—
पढियो परवाणो ।।
अणजाणयां सूं प्रीत करी तो जान गमाणी होसी ।
काया लाग्यो दाग, भाग में लिखियोड़ी कुण धोसी ।।
पढियो परवाणो ।

ऊजळी —जेठवा जुलम कर्यो रे, अधूरो सपनो तोड़्यो
जेठवा जुलम कर्यो रे ।
वधती तोड़ी वेल और तूं मनड़ो मोड़्यो
जेठवा जुलम कर्यो रे ।
जै बचना में झूठो हो तो सांच कही क्यूं कोनी ?
मरदां री वांणी ही कूडी, हुवै जणा अण होनी ।
जेठवा जुलम कर्यो रे ।

ऊजळी —थारै नैंणा थाह, नेह ही नेह निरखियो ।
अब तूं मत अपताय, जळ जाऊंली जेठवा ।।
नारी रो नर नाह, नाथ रैयां ही सांतरो ।
पुरुसां कर परवाह, लजा मती रै जेठवा ।।
बाळ पणै रा बोल, भूलै अर बिसराय दे ।
जोवण री रमझोळ, झेलूं किण बिध जेठवा ।।
जलमें अेकर जीव, अेकर परण वरण हुवे ।
प्रीत पियाली पीव जीयूं किण विध जेठवा ।।
अपणाऊं अपभात, जात मुलादे जेठवा ।
जात पात री बात, निवळा ही तो नित करै ।।
राग भलांई राज, धन नीं चावूं रे धणी ।
आज्या अेकर आज, धण रैस्यूं आ थारली ।।
राज पाट अर जात, जावै थिर नीं रह सकै ।
जोवण री ना जात, गयो गयो तो वो गयो ।।
वात मानलै आत, वात नै मत विसराई ।
नहीं चाहिजै न्यात. जलम ही जहर जेठवा ।।

वाचिका —लिखता ही था खुद लिखी, तिल्लां मे नी तेल।
चाल वठै ही चारणी, मिलै मीत रौ मेळ ॥
वाचक —भूख मिटी तिरसा मिटी, नैणा नांही नीद।
आकळ वाकळ ऊजळी, चिरळावै चौंधीज ॥
वाचक —भूखी तिरसी ऊजळी, गढ़ कोटां री चेळ।
वैठी बंगी बावळी, जेठा थारी जेळ ॥
ऊजळी —अेकर दरस दिखाय, इतरौ कांईं आतरौ।
भीड़ मती भुलाय, अभी द्वारै ऊजळी ॥
जीवण रौ नी जोग, अेकलड़ी नी जी सकूं।
भाग लिख्यौ नी भोग, ओमळ होसी ऊजळी ॥
अेकर मुखडो देख नैं, समझा समदर सार।
जीवण राखी जेठवा, ऊजळ जासी पार ॥
तन सौंप्यौ तकदीर सूं, मन सौंप्यौ मनवार।
प्रेमी बणग्यौ पारधी, अब क्यूं करां अंवार ॥
वाचक —झाक झरोखै जेठवौ, कह्यौ ऊजळी भाण।
राज रकम तूं लेयलै, पाछी भूल पिछाण ॥
ऊजली —काया थारी काचळी, राखी बांधै नाय।
कंत कहीज्यौ जेठवा, बहिन कहावै नाय।
राख राज धन धाम तूं, राख भलाईं राय।
जावै थारी ऊजळी, समै राखसी साख ॥
वाचिका —इतरी कह कै उजळी, समदर सौंपी देह।
लहरा लाज बचायली, नुगरौ होग्यौ नेह ॥

रूंख अर आदमी

☐ भगवती लाल व्यास

रूंख बडो क्यूं है ?
सब रितवां रा सेल-घमोड़ा झेल
यो माथो ऊंचो कियां खड़ो क्यूं है ?
रूंख री ई जात है, न्यात है
नाव है, कुळ है, गोत है
फेर ई संसार मे यो छडो क्यूं है ?
यो सवाल म्हैं खुद नै केई वार
पूछ्यो है—
'आदमी छोटो क्यूं है
अर रूंख बड़ो क्यूं है ?'
जात-न्यात कुळ अर गोत
आदमी रै ई होवै
बाप-दादा रो बरप्यो अेक
रूड़ो रूपाळो नांव लिया
आदमी सारी ऊमर रोवै
रूंख री तरै यो स्यात कदेई
म्हो नूंतै अणबोल्या, अणजाण
गेलारयां नै आपरै घरै
लोग कैवै के आदमी री जड़
सुरग मे व्हिया करै

पण रूंख री जड़ तौ
जमीं में ई ऊंडी, अर घणी ऊंडी होवै
जमी मे जड़ री वे'तार
अर जमी पे रूंख रौ संसार
रूंख कदैई सुरगवासी होवा री
कलपना न्ही करै
कणी मर्योड़ै रूंख माथै
सोक सभावां न्ही मंडै
अर नी कोई स्मारक बणै ।

रूंख खड़ौ है मस्तमौलै
जोगी ज्यूं फकीर ज्यूं
लोहै री लकीर ज्यूं
लोग रूंख रै कानी बैठ'र
कतरी ई तरै री बातां करै
रूंख सब सुणै
पण पड़तर न्हीं देवै
इण रौ यो अरथ नी के
रूंख रै भासा नी होवै
पण रूंख भासण न्ही देवै
जितरी छायां उण कनै है
रात-दिन बाटतौ रैवै
कोई भाठौ मारै तौ
थांणै मे रपट ई नीं लिखावै रूंख
गुट न्ही बणावै रूंख
यो निरगुट-निरगुण
अपणै आप मे माची ई
पुण्याई रौ घड़ो है
रूंख आदमी सूं
कितरो बडो है ?



खास जरूरत

☐ अन्नाराम सुदामा

कार्ड बोर्ड रै टुकड़ां में फिट हुयोड़ो,
भूलै हो सामनै,
मानचित्र भारत रो ।
बाळक केई,
टुकड़ा काढता फिट करता
सीखै समझै हा,
पण बात बात में उळझ पड़्या;
टळ टोळी सूं दो
खींच टुकड़ो अेक अेक मानचित्र सूं
राता कर नैण,
रीस मे निकळ पड़्या ।
बोल्या,
"औ डब्बी में राखो सगळो थारो
रचस्यां म्हे
अेक अेक टुकड़ै सूं
मानचित्र नुंवो न्यारो
थारै सूं घणो फूटरो—
घणो भलेरो ।"
पछै गुरु न ठा जियां ई
गूंज्या सुर. 'घूमो पाछा'.

श्रास्या भागती ठैरी
मुड़्या,
हेलैं सागैं पग रूस्योडा ।
गुरू बुचकार्‌या समझाया
"बाळका,
श्रेक श्रेक टुकडौ काढ
जिया निकळ्या थे,
ठीक विया ईं
थारा श्रै सगळा साथी
रूस रूस
टुकडौ टुकड़ौ
काढ चित्र मूं दुर पडसी
तौ लाडै बाडै मानचित्र में
दीखसी खालेड घणखरी
लारै जुंवा रैसी,
श्रर श्रेकला थे टुर्‌या किया,
श्रौ मानचित्र सगळा री पूंजी—
सगळा रौ साथी ।
बाळक ईं तौ हा
बिकळाक चित्र नैं देख
बात समझग्या,
दोनूं टुकडा
फिट किया चित्र में चुपचाप जिया ईं
मानचित्र पाछौ मुळक्यौ,
चमक उठी बत्तीसी
सगळैं चैरां पर संतोस बिखरग्यौ ।
श्राज वैं बाळक बणग्या बाप,
तौ मन में नुंईं श्रासा जागी,
कैं जुड़ जुड़ टुकड़ा श्रेक प्राण में
श्राभा धरा कोर पर
मानचित्र री श्रौर चमकसी
पण लागैं, कात्यां हुवैं कपास

सराई खोचड़ी दांता चढ़सी ।
आज पद पइसे रा पडै गड़ा,
डाफर चालै भाई भतीजावादी
तौ रूस रूस जणौ जणौ
बांध बांध डोळां पर गधारी पाटी
खीच धिगाणै प्रान्तां रा टुकडा
भूल पूर्णता रौ पाठ पुराणौ
उथळै जुगां पुरांणी सागण गळती,
पण कादै पर किलौ रचण री
आ आंधी ममता
सत्ता री सरतां मे दाव मानखौ
मानचित्र रौ उणियारौ
कुण जाणै कियां राखसी ?
हुसी औ मानचित्र जे
टुकड़ा टुकडा में खंडित
तौ मोटी चिंता
धरती पर साबत कुण बचसी ?
समाधान है
कै भूली भटकी पीढ़ी नैं दिस देवण
चाईजै
न काचळी बदळू,
न अणगिण मौसमी कमटीड़ा,
जरूरत है
कै उठै, आजाद चित्र री पूर्णता सूं प्रेरित,
भाई चारै रै नुंवै छितिज पर
कोई मरणदाणी गुरू आभा ।



मेळ-मिलाप

☐ धनंजय वरमा

कसूरवार सरीसौ—
जमीन मे निजर गडायां !
बिजळी रौ अेक खम्बौ,
गै'री चिन्ता में घुळन लागर्यौ हौ।
नीचै कोरपाण धरती—
बी पर, भूख री भरती—
सास टूटवा, मरती-मरती।
गूंदळी सा, लीर-लीर पूरिया ओढ्या,
पाळै भाड़ै,
पाळ बाधणै री सोचै !
चिथड़ा मे चुंथेडो, टूंट बंध्यौ—
'डंडुकळौ' सौ अेक हाथ,
सुन्न बापरती काया नै, गरमास पूगाण वास्तै,
चाणचकै, गोजियै पाती चुब्बी मारै !
अेक अधबुभेड़ी बीड़ी,
नीतर के ऊपर आ जावै।
ठंड री ठिरती ठारी स्यूं,
गरीबी हाळी धियारी स्यूं,
रूं-रूं फरणावै, धिग्गी बंध जावै।

दंताळी जिसा चौड़ा-चौड़ा दांत,
"खुण-खुणियँ" ज्यूं खुणक उठँ ।
मन मारके, श्रेक तूळी सिलगावँ,
तूळी सिलगँ, श्रर पून रै फलरके सागँ—
सीक पर सिमटेड़ी, भीणी-भीणी,
वादळ बरणी, हळकी भूरी डोरी,
ऊंची-ऊंची ऊपर नै ऊठँ,
श्रर जड़ा-मूळ सूं खू जावँ ।
श्राखरी बंचेड़ी तूळी नँ, वढ़ँ जावतँ स्यूं,
श्रांगळियां री श्रालणी वणा के, सिलगावँ ।
सिलगतां ईं,
छोटी-मोटी श्रांगळियां रै बीच—
टसकती बीड़ी री मुंह, तमतमा ऊठँ !
सास सागँ सहारेड़ी,
श्रुकसतो, उळभतो, गै'री धुंश्रो,
कीं नाक सूं छणकँ,
की कंठा मे उतरके,
समूची काया नै भकभोरँ ।
लँ-लँ खरड़-खरड़ खांसी,
जीतँ जी नै फांसी !
श्रांता में श्रटकायेडी—
छोटे-पकँ री गटकायेडी—
बूंटियँ री चिकणास,
खखार वण, पिघळेड़ै मोम ज्यूं गिर जावँ ।
पतळँ लांबँ तार री—
सैरती सी लाळ,
कीं हेटँ, वाकी समूची पूरियां पर भूलके रहजावँ ।
पड़ी है, कुण ध्यान देवँ,
श्रंधेरे में की नै सूभँ है ?
थानणँ में ईं श्रधगेलँ नै,
सुख-दुख री कुण बूभँ है ?
वीं के वास्तँ दुनियां कोनी.

दुनियां वास्तै वौ कोनी !
जीं दिन मर जासी वी दिन—
श्री ग्रळसीडै नै,
कै तो कोई बाळ देसी,
कै कोई गाड देसी ।
क्यूं कै, कचरै नै कुदरत ई खपा सकै है !
ग्रर, श्रो ई जगती रौ,
सब सूं मोटो 'मेळ-मिलाप' है ।



तसवीर

□ स्याम सुंदर भारती

निरखौ
परखौ
नैं ओळखौ
किण री है आ तसवीर
व्है सकै—
के अै नैण किणीं दिन
मिरगली रै नैणां री गळाई मोवणा
घणा अचपळा
इमरत रा प्याला हा
पण आज तौ—
दो ठिडा है : माळा है
व्है सकै—
के अै हाथ किणी दिन
पोयणा वरगा रूपाळा
मुगमल जिसा मुलायम रैया व्है
पण आज तौ—
आंयठण है : छाळा है
व्है सकै—
के अै पग किणी दिन
मायड़ री गोदी

फूलां री सेजा ही
पण आज तो—
उरभाणा है : पाळा है
व्है सकै—
के ओ पेट किणी दिन
लाम्बी डकारा लेवतो
धापियोड़ो घणो रैयो व्है
पण आज तो—
आळैं में आळा है
तो—
आवो
देखो
निरखो
परखो
नै ओळखो
के किण री है आ तसवीर
अर सोचो—
कियां विगड़ी आ तसवीर
कुण बिगाडी आ तसवीर
नै समझो—
के जठा तक छाती रै पुड़ियां हेटै
भट्टी धुकै है
थां लाय लगा सको
होर नै—
अेक चिणगारी घणी व्है;



फेर किता दिन

☐ स्याम सुंदर भारती

झूंठो झांसो फेर किता दिन
रूळपट रासो फेर किता दिन

म्हेल हवा रा नैं वातां रौ
चट चौमासो फेर किता दिन

भोळी भाळी जनता नैं ओ
मीठो घासो फेर किता दिन

किणवेळा की हो जावण रो
मन में सांसो फेर किता दिन

भूख गरीबी अर विपदा रो
इण घर वासो फेर किता दिन

सगळा नैं देता रैवोला
कूड़ दिलासो फेर किता दिन

इण आगणियै राजनीत रो
खेल तमासो फेर किता दिन

☐

आपां मिनख हां

☐ रघुनन्दन द्विवेदी

म्हैं अर थूं
चाय रा कप कोनी
कै—

मेज माथै सूं पड़ा
अर टूट जावां,
आपां मिनख हां

जटां तक
नसां मे उफणतौ खून है
हाथां मे बळ है
अर मन में—
अथाग
अणमाप विसवास रौ
बळतौ दीवौ है,
आपां पड़ांला
गुड़ांला
मरांला
टूटांला

प'ण मिटाला कोनी
इण अन्याव रै
वायरै री झपट सूं

इण ग्रोछी
ग्रनीत ग्रर कपट सूं,
आपां लड़ांला
ग्रर घड़ांलां
ग्रेक नुवैं माणस रौ दीवौ
जिकौ—
झूंपड़ियां में
नुंवौ उजास भरैला
ग्रर ग्रनीत रौ ग्रंधारौ
इण धरती सूं
ग्रळगौ करैला।

भूख अर वांदरी

☐ मगर चन्द्र दवे

आ भूख····!
कित्ती निठुर है आ
इण मिनखादेही रै कंकाळ मांय
कठैई न कठैई है····!
पण कठै····?
निजर आवै····?
पण हां,
आ है जरूर····
मकावट····

नीतर—
औ आदम रो बेटो
कूड़ बोलतो····?
चोरी करतो····?
डाका डाळतो····?
आपरा कायदा, मानतावां रै माथै
धार आळी कटारी फेरण सारू
ताकड़ो वैवतो····?

आ भूख····!
याद आयो—
आपां नैं वांदरी.बणाय

गळा में लोकण री सांकळ न्हांख
(लोकण री साकळ····!)

बेसक····
नींतर कठैई बंदरिया
पेट भरियां पछै भागनीं जाय
क्यूं के
हाल तो मदारी भूखो है····
उणरा छोरा-छापरा ई भूखा है····!

मदारी सांकळ खींच'र कैवै—
"इण बाई रै पगै लाग
मां'जी रा पग दाब
बाबूजी नै सलांम कर
बा' साब नै जैरामजी री····"

मदारी बांदरी नै पूछै—
"थूं सलाम क्यूं करै····?"
बांदरी जमी ऊपर आडी पड़'र
खुदरो पतळो पेट बतावै—
"इण रै खातर····!"

मदारी उणनैं कैवै—
"तो मांग बाई सा'ब कना सूं
दियौ भंदाता
भूखी बांदरी नै
लुक्को-सुक्को····"

बांदरी उणियारै माथै
गरीबी दरसाय हाथ पसारै
कोई दियालु····माई री लाल
दो-च्यार रोटी रा टुकड़ा
फैंक देवै
बांदरी वां टुकड़ां नै उठा'र
भूंडै रै मांय न्हांखै—

इण पापी पेट न भरण सारू
के इण गूं पैला ई
मदारी बिजळी रै उनमांन
झपट'र खोस लेवै टुकड़ा
घर न्हांख देवै झोळी में
(कारण—हाल तो मदारी भूखो है
उणरा छोरा-छापरा ई भूखा है
पण बांदरी री भूख""?)

फेर पाछो दूजो घर""
"बाई सा'ब रै पगै लाग
सा'ब नै सलांम कर
बा'साब नै जैरामजी री""



सपनां री तिरस बुझ्यां पैलाई

☐ इन्दर प्राउवा

सपनां री तिरस बुझ्यां पैला ई
नींदड़ली री सांस निसरगी !

दो मुळकांण उधारी देता,
सांसड़ली गुम्मेज करै ही
जीवण मारग प्रीत बांटता
गैली कितरी जेज करै ही

मालण हार गूंथती रहगी
अर फूलां री बास निसरगी !

नहीं लजाई हियै-बजारां
प्रीतडली रो मोल बतातां
सोनै-चांदी रै बाटां सूं
जीवण-मोती तोल करातां

मन रो मोल अंकीजण पैली
तन री घर सूं ल्हास निसरगी !

हियै-तीरथां किता जातरू
बिन चिरणामत पाछा ढूळिया
प्रीत-पतासा मन रै मिंदर
माटी रै मटकां में गळिया

मिन्दर रा पट खुलियां पैली
दरसण री सै प्यास निसरगी !

तन-पूजण मन-समभावण में
गैली घणी उंवार करै ही
हेत-प्रीत रा गीत सुणण री
तू मोड़ी मनवार करै हो

बिध-बिध गीत रचावण आळी
हियै मांयली फांस निसरगी !



हार मत हिम्मत रे

☐ लक्ष्मण सिंघ रसवत

जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत रे
बिलै पळ्योडा जीव, जिणां री कीमत रे

रात अंधारी घोर, गिगन गरणावै
बीजळ चिमकै जोर, मनां डर आवै
कळायण घोवैला दिन-रात, मानवी डर मत रे
जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत रे

सूरज तेवर तपै, जीव बिलखावै
तन रा पोचा, तावड़िये तिड़ जावै
तपसी मांणस मोल, तापसी तिरपत रे
जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत रे

आंधी धूळ-बधूळ, मुलक नी मावै
आंख मीच मत मिनख मांन मर जावै
पलटै भूम अजूम छोड मत सतपथ रे
जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत रे

सीयाळै री रात सोगनां खावै
पण परभाती घुंवर धरा पर लावै
अणगिण मोती मोल मानखा गिण मत रे
जीवण री हर राख, हार मत हिम्मत रे

समदर छोळा-छोळ घणो डरपावै
पिरथी परळै पलट पांवणी आवै
छोड पुराणी पाळ, पाप रा परवत रे
जीवण री हर गाल, हार मत हिम्मत रे ।

चौघड़िया

[1]

जिंदगी आवण-जावण है
हेत हित हँस बतळावण है
बेल पर फाळ फळ्यां पाछै—
जिंदगी छिण मुरझावण है ।

[2]

मौत री सांझ धुंवै घुट ज्याय
घालती बाळद ज्यूं लुट ज्याय
चाक चौपाळ सांस री आस—
मौत निरमांण देय मिट ज्याय ।

[3]

आस रै पांख नहीं उड जाय कठै
नैण मे नेह घणो रळकाय कठै
गिरवर गाढी रात सरवर पलकां मे—
गैण मे नैण, रैण किण भांत कटै



जिनगांणी

☐ कल्याण सिंघ राजावत

समरथ व्हे समझां तौ ऊमर ई ऊमर है।
नाचां तौ जिनगाणी घूमर ई घूमर है।
काटां तौ सस्तर है
सी'ल्यां तौ अस्तर है
पी'ल्यां तौ समदर है
करल्यां तौ कमतर है
इणरा रूप अणूता है
अजहूं अणकूंता है
ओढां तौ जिनगांणी चूनर ई चूनर है ।।
आभै री पांणी है
धरती री धाणी है
किण री तौ जांणी है
किण री अणजांणी है
सुरता सार अदीठी है
भळती भाळ अंगीठी है
थाकां तौ जिनगांणी डूंगर ई डूंगर है ।।
जोबन रा भाला है
मद भरिया प्याला है
समझा तौ इमरत है
अणसमझ्यां हाला है

इण रा नैण नसीला है
इण रा वैण रसीला है
निरखां तौ जिनगांणी मूमल ई मूमल है
पायल झणकारां है
गीतां गणकारां है
काजळ री कोरां है
मैंदी रतनारां है
आ तौ काण-कनोरा है
आ तौ बांन-बनोरा है
पै'रां तौ जिनगांणी झूमर ई झूमर है
नाचां तौ जिनगांणी घूमर ई घूमर है ।



मावटौ होग्यौ

☐ सिव मृदुल

झड़े है फूल बागां मां, हर्‌यौ है रूंख परबत को ।
कदे गरमी कदे बरखा, अजब है खेल कुदरत को ।।
जठा सूं रात मेंह अमरत, सरद का चांद सूं बरस्यौ ।
लगी चौपाल पै धूणी, तप्या बूढा हियौ हरस्यौ ।।

रजाई मेंह घुस्या सगळा, सबां कै भावटौ होग्यौ ।
अस्यौ तौ सी पड़ै पोटां, अस्या मेंह मावटौ होग्यौ ।।

जमी लागै मुळकती सी, जठा सूं रेलण्या होई ।
धरा को रूप नत निखरै, जठा सूं साख नै बोई ।।
हर्‌या है खेत फसलां सूं, करै मोट्यार रखवाळी ।
रखै है लार खेतां पै, कनै नत कामळी काळी ।।

चली है सासरै जमनी, जंवाई हांवटौ होग्यौ ।
अस्यौ तौ सी पड़ै पोटा, अस्या मेंह मावटौ होग्यौ ।।

कठै तौ ढोल को ढमको, कठीनै तान बाजा की ।
बंदोरा बींदण्या खावै, बंदोरी बींद-राजा की ।।
कठीनै गीत मेंह बनड़ी, बना अर भायरौ गूंजै ।
बरातां चढ़ गयी तोरण, पगां नै दूध धो, पूजै ।।

धणा कै पड़ गया फेरा, धणा कै न्यावटौ होग्यौ ।
अस्यौ तौ सी पड़ै पोटां, अस्या मेंह मावटौ होग्यौ ।।

पड़सै आज पंतग मेंह, सड़ा मोट्यार लागीणां ।
सजी सी गोरड़्यां जीमें, जणां का घूंघटा झीणां ।।
हुवैला चूर सब चकव्यां, हिया मेंह है हरख ऊंडो ।
जळेबी सूं घणो मीठो, हुयो है चांद सो मूंडो ।।

पड़ै सब टूट लाडू पं, घणां को गावटी होग्यो ।
भस्यो तो सी पड़ै पोटां, भस्या मेंह मावटी होग्यो ।।

पूछ म्हनैं मत हे सखी

मुळकै कंचन कामणी, ओढ्या हर्यो दकूल ।
जांणै धरती ऊपरै, खिल्यों कंवळ रो फूल ।।

पीळा गेंदा बाग मेंह, पीळी सिरसूं खेत ।
मेंहदी पीळा हाथ है, पीळो तन-मन हेत ।।

देख कटी कटि ओज उर, अतरी मत ओभाव ।
गळसी रळसी थो बरफ, कर कर भारी पांव ।।

सळ क्यूं साड़ी मेंह घणा, बिखर्या सा क्यूं बाळ ।
पूछ म्हनैं मत हे सखी, कहसी राता गाल ।।



कीं तौ बोल—म्हारा वीरा

☐ वासु आचार्य

क्यूं लागै नीं ठा
कीं तनै हुवै, तौ बता

आजकालै आएं
भखावटै भखावटै
सूरज फूंतका-फूंतका हुयो ऊगै
अर सिंझ्या री सिंझ्या
लीर्‌यां-लीर्‌यां हुय'र डूबै
काळजै हईड़ तो उपड़ै
पण अरथ कीं निसरै ?

फेर बै रा वै
सिरण लाग रैया
अकास में गीध
फेर वां रै लाम्बै परां सूं
मैंतीजसी कोई सोड्न्दी ?
फेर हाथ, पग, सीनौ
अर हुलियौ बैंतीज सी ?

की तो फूट—म्हारा भायला
दन्ताळी-सूर पाछी क्यूं
फाड़न लाग रैया है जमीन

घर क्यूं
काळिन्दर फणधारी
थांब्यां सूं खेतां में
पसारो कर रैयो है ?
कीं तनै ठा हुवै तो बता

कै थारै घर म्हारै
मार्गं घर सारै
कीं हुयग्यो-है—की, थाईजै

तू ई म्हारै दई
की तो भीत सूं भचीड़ा खा

की तो समझ
की तो समझा
कीं तो बोळ—म्हारा बीरा

क' फेर तू
उडावतो रैसी हाडा
क' फेर तू
गिणतो रैसी पाडा

या के थोर·········
या भळै फेर·········

□

म्हारै गाँव में

☐ भागीरथ सिंह भाग्य

छोटो सो है गांव, गुवाड़ी गळियां नैड़ी नैडी
टूटी फूंटी छान झूंपड़ी ना पोळी ना मेड़ी
पंचायत रा करै फैसला अमली और गंजेड़ी
सौ सौ चूसा खा'र बिलाई चढ़गी हर री पैड़ी

घाड़ेत्यां लूट ली दूकांन म्हारै गांव में
पंचा री काट ली जुबांन म्हारै गांव में

सुगनी काकी बात बणावै बोलै आडी-टेढ़ी
धींस्यो बाबो रोज परायै खेतां काटै पेडी
बूढी दादी री ले भाग्यो कुण रामार्‌यो गेडी
मझ सरद्यां में पधां उभाणा फाटी म्हारी ओढी

छैला चबावै है पांन म्हारै गांव में
बीड़्यां री खुलगी दूकांन म्हारै गांव मे

बात बतंगड़ बणता बणता अळियां गळियां फैली
काल रूपली री चूनर ही जयां जधां सूं मैली
मणियारां रै घर रै लारै है फूट्योड़ी हेली
कानूडै री वातां में भुळगी अणजांण अकेली

लुच्चां रै लाग री है तांन म्हारै गांव में
डोळ्यां रै चिपर्‌या है कांन म्हारै गांव मे

परस्यू रात गुवाड़ी में पाबूजी री फड़ रोपी
सारंगी पर नाच देख कर टोर बांधती गोपी
भोलै-छानै सैन करै है देकर आडी टोपी
अब तो खुस होग्या हां रुपियो लेग्या प्यारी भोपी

कर दियो रुपियै रो दांन म्हारै गांव में
राख लियो मैफिल रो मांन म्हारै गांव में

मनवारां में बोळी पीग्या करता थोड़ी-थोड़ी
नसो हुयो जद कुबदां सूझी कर ली छाती चोड़ी
ठाकर सा ठरकै सूं बोल्या पाछै मूंछ मरोड़ी
जुगली छोरी आज रावळै सूं घर जायै मोड़ी

ठाडै रो डोको है डांग म्हारै गांव में
हीरां री फाड़ लीनी लांग म्हारै गांव में

जुओ सोदो खेल करण री नसो अणतो लाग्यो
अम्बर मांही देख बादळी टंण सावती लाग्यो
दो की बीदी दो को चोको दो को दड़ो लगाग्यो
घर हाळी रो गैणो लत्तो बेच बाच कर खाग्यो

गिरवी जुवार्‌यां री रयांन म्हारै गांव में
लूट खोस खावै जुजमांन म्हारै गांव में।



दरद-दिसावर (दूहा)

□ भागीरथ सिह भाग्य

लोग न जांणै कायदा, ना जांणै अपणेस ।
रांम भला ई मौत दै, मत दीजै परदेस ॥

भांत भांत री बात है, बात बात दुभांत ।
परदेसां रा लोगड़ा, ज्यूं हाथी रा दांत ॥

सुख्ता लै मन पावणा, गांव प्रीत री पाळ ।
मिनख पणै रै नांव पर, सहर सुगली गाळ ॥

सहर डूंगरी दूर री, दीखै घणी सरूप ।
सहर बस्यां बेरो पड़ै, किण री कैड़ो रूप ॥

खाणो पीणो बैठणो, घड़ी नहीं विसरांम ।
वो जावै परदेस में, जिण री रूसै रांम ॥

अजब रीत परदेस री, अेक सांच सौ झूठ ।
हंस बतळावै सामनै, घात करै परपूठ ॥

लेग्या तौ हा गांव सूं, कंचन देही राज ।
पाछी ल्याया सहर सूं खांसी, कब्जी, खाज ॥

लोग चौवासी रासता, खुद बांका सिरदार ।
बाकड़ला परदेस में, बणग्या चौकीदार ॥

गळै मसीनां में सदा, गांवा री सै मौज ।
परदेसां में गांगलो, घर रौ राजा भोज ॥

कागलां री कांव मांही आज तक जिया
हींजड़ा रै गांव मांही आज तक जिया

माळिया री वात छोड़ झूंपड़ी कटै—
आकड़ा री छांव मांही आज तक जिया

ढोळिया पै गाळियां ही गाळियां मंडी
सूगला सा नांव मांही आज तक जिया

रोग ठावो लागग्या तो घाव सूं मरां
सुरचती सी पांव मांही आज तक जिया

जीत तो सै पीढ़ियां रै नांव मांड दी
हारता सा डाव मांही आज तक जिया।



आखर रौ उवाळ

☐ अरजुन 'अरविन्द'

धरती माथै पसर्‌योड़ी
हद काळी काळ ।

अंबर री मुळकंती
रूप नीं सुहावै,
भूख रा भाग लड़ै
चैन कियां आवै,

मौसम रा मूंडा में
भणमाती गाळ ।

चारूं मेर भून रा
बैवता सरणाटा,
प्रीत बावळी रा
बोल घणा खाटा,

धुप्प अंधियारी
कंपै है साळ ।

नैण रा डबडोळा
सुपनां रा भूत,
बैर्‌यां रा बोलणा
बोले है पूत,

रीत री समदर
कुण बांधै पाळ ?

पोथ्यां में सीख रा
उजाळा मुळकावै,
चांदी रा टूकां पै
सब नाचै, गावै,
रगत नै ततावै कितणू
थाखर री उबाळ ?



गज़ल

□ रामेस्वरदयाल श्रीमाळी

किण मद छकी रै मोह री मनवार है गज़ल ?
किण गोरड़ी रै रूप रो सिणगार है गजल ?

नट जावणी नैं नेह नैणा निरखतो रै'णो ।
आ आपरै जिसी ई गुनागार है गज़ल ।

हिमळास इसो, हेत औ, हामळ छिपी-छिपी ।
हँस-हँस हमेस मुकरणै री वार है गज़ल ।

औ रूप रो रतन जतन घणो अंवेरियो ।
पल अेक फकत दरस री दातार है गज़ल ।

हिय में उमंग-रंग बिखरियो ज्यूं हीगळू ।
जो आप आवो, तीज रो तैवार है गज़ल ।

दीख्या कदै न थे कदै अदीठ नी रह्या ।
इण दीठ थारै आपरै उणियार है गज़ल ॥

सुख री घड़ी सस्ती कठै

आपरै सिर ताज दीसै, मोयली मस्ती कठै ?
जको सपनां नैं सजा देवै, इसी बस्ती कठै ?

राज रै पासै सूं कै दौलत सूं दो मांगळ मिळै
पल पड़ै जितरी, इती सुख री घड़ी सस्ती कठै ?

आज कर लो बेदखल म्हांनै नै कालै देख लो
म्हांरी बेदखली कठै नै आपरी हस्ती कठै ?

टूट जावा म्हे भलै, नामून नम काढ़ां नहीं
तन भलै चींथीज जावै, हौंसला-पस्ती कठै ?

आंगणै जो आपरै आया, फकत इण कारणै
ओ सरीरो गस्त देवै, आतमा गस्ती कठै ?



किराया को मकान छ

वल्लभ महाजन

अजी ईं सरीर को कांईं छ
किराया को मकान छ
आज न तो काल, खाली करणो ईं छ ईंमं कांईं को गरब छ
काल ईं मकान मालिक को कागद आयो छो
ऊंन हिचकी मांळ मांडी छ
क मकान जो थांक पास छ ऊंईं खूब वरतजो
कोईं बात की कसर मत करजो, कोईं सूं मत डरजो
पण ईंन आपणो ई समझबा की गलती मत करजो
परायो जाण कोईं पूछै तो कहता रीजो—
कि अजी कांईं छ किराया को मकान छ
आज न तो काल खाली करणोईं छ....

और मकान मालिक न आगै मांडी छ
अगर थांन म्हारा मकान की
खूब सफाई संभाल राखी तो
अब की बार थांईं न ऊपरलो उजासदार चोबारो दूंगो
अर थांन मकान में गंदगी राखी तो
अबकी बार थांईं नीचलो अंधेरो भंडार दूंगो ।

ईं वास्तै थां सूं कहवै ■ महाजन
कहता रहो चौवीस कलाक भजन
अर ऊ सूं सदा डरता रो, ऊंईं सुमरता रो
अर कोई पूंछै तो कहता रौ कि
अजी कांईं छ किराया को मकान छ
आज न तो काल खाली करणोई छ....



देसड़लौ म्हारौ

□ ग्ररजुन सिंघ सेखावत

ग्राभौ जांणै
कबूतरी रंग
गोळ राठोड़ी सोगाळी
ग्राटाळौ पोतियौ बांध्यौ

देस म्हारौ
उदास-उदास
डरूं-फरूं ऊभौ
ठौड़-ठौड़ सूं
फाटी ग्रंगरखी
बादळयां री
लीरालीर
सांवळा डील माथै
ग्रटक री ही
लटक री ही
जाणै
बानरवाळ लटकती व्है
देवरा पै
जिण रै मांयकर भांकै ही
काळजौ मायड़-भोम रो
कठैई-कठैई

रंग-बिरंगी लाग्योड़ी कारियां
माळीपानां ज्यूं लागै ही
मूरत-सी सूरत रै
मायड़भोम रै
उफणतै हिवड़ै री
उबळतै ग्रंतस री
कळकळतै काळजै री पीड़ री
बाफ निसरै ही
जिएनै नै थै कैवता रैवो
ऊमस है, गरमी है
लू है
पेट में ग्रांटा देतौ
बात-बात में ग्रांटा खातौ
मार्ट रा घाटा सैतौ
देसड़लौ म्हारो ।



फकीरी

□ श्याम श्रीपत

अवल अलमस्ती रौ अवतार
सरस वेदां श्रुतियां रौ सार
आतमा रो असली आणंद
अनोखी अणहद री झणकार

मिटावै स्वारथ माया मोह
जगत री चितावा दे भाड़
फकीरी पोयण ज्यूं निरळेप
खड़ी भवसागर रै मझधार

अकारथ जिण रै आगळ अरथ
राजसी ठाठ भोग मद-पान
जगत नै समझै धूळ समान
फकीरी कवि कबीर रौ ध्यान

फकीरी मुगती री परसाद
रगां री रगताळू झणकार
आतमा रो असीम सूं मेळ
फकीरी 'मेड़तणी' रो प्यार

गरीबी धरती री अभिसाप
फकीरी सुरपुर री वरदांन
गरीबी आंसूड़ां री धार
फकीरी अंस-वंस री ग्यांन

फकीरी जोग अमीरी भोग
गरीबी रोग जगत री मार
फकीरी महा प्रलय रैं बीच
नाव भवसागर करणी पार।

□

फागणी दूहा

□ कुंदन सिंघ 'सजल'

कोयल बोलै बाग में कामण बोलै गेह ।
फागणियो बरसा रह्यौ घर घर आकर नेह ।।

जोबन गंधावण लग्यो, घर, आंगण, पथ, द्वार ।
छुवन मीत री देयगी, मन नै पंख हजार ।।

कठै उड र्‌यो रंग तो, कठै बाज र्‌या चंग ।
पीठ ठोक र्‌यो सब जगां, सबकी लड़्यो अनंग ।।

फागण किलक्यो गांव में, मुळक्या सब रा होठ ।
चावै कोनी मैं नयण, अब घूंघट री ओट ।।

खेतां, बागां, घाटियां में आमां री छांव ।
फागण आयो आयगी याद आपरो गांव ।।

अमराई री गंध मे, भीज्या दिन अर रात ।
बिन थारै मनयो रचै, फागण किण रै साथ ।।

बिछी दूब री बाग में सेज और थे पास ।
मुसकिल है अब मन, नयन, अधरां पर बिसवास ।।

पग बड़ावतो आवगो, फागण पपली द्वार ।
गेल-गेल मे बंध रही पीळी बंदनवार ।।

सौरभ धारै रूप री, बिखरी च्यारूं मेर ।
भंवरां ज्यूं यारी गळी, उडणै सम्पा विभोर ।।

पीळो तन, पीळी चुनर, पीळा पीळा गेम ।
कविता लिखवा नै 'सजळ', कर रूमा है संकेत ।।

बात

□ कमर मेवाड़ी

इण वगत नै बदळनो पड़सी
वै दिन लदग्या
जद लोग
हवाई घोड़ां माथै
      सवारी गांठता हा

कद तलक
मिमियावता रैवैला लोग
      बाळता रैवैला
आपणै सरीर री रगत
भर कद तलक
जोवता रैवैला मूण्डो
वां डकरैल गंडकां री

आ बात सगळां नै
अेक दिन समझणी पड़सी
के मुट्ठी भर लोग
हजारां-लाखां लोगां नै

कठा ताईं सूरज मणावता रैसा
इण वास्तै
फगत जरूरी है
इण बात नैं समझणी
कै बगत नैं किण तरै
बदळ्यो जाय सकै ।

□

विरासत

☐ करणीदान बारहठ

देस नै कांई दे र्या हो,
विरासत में, म्हारा माईत !
चोरी, डकैती, फरेब, झूठ
भ्रस्टाचार, पापाचार, चापलूसी, चमचागिरी ?
म्हे ईं गळे'ड़ी संस्क्रती रो
सोधन कठै तक कर लेस्यां म्हारा बीरा !
पतो नीं, ईं सत्यानासी रै बूंटै रा बीज
कुण फेंकग्यो म्हारी धरती पर;
कित्ती ई करल्यो बार-बार फाड़ करणैं पर
कस्सी कं खोदणैं पर
सुहागो लगाणैं पर ईं
औ बीज दिन दूणो बध रयो है
मर म्हारली चांवती फसल उगण कं रैगी ।

☐

जिनगी रास कियां आवे

☐ कैलास मनहर

सुपनां में ई' मौत ई दीसै, जिनगी रास कियां आवै
छाती में तो राध भरी है, नीका सांस कियां आवै

आवो खांसी दम ई उपड़ो
भाठा फोड़ां पेट भरां
कोई धणी न धोरी म्हारो
कींकर जीवां कियां मरां

बिजळी घणी दूर म्हारै सूं, घरां उजास किया आवै
सुपनां में ई' मौत ई दीसै जिनगी रास कियां आवै

फाट्योड़ा गाभां मे धापू
जोबन ढकती मांय लुकी
रामूड़ो भूखो ई सोयो
मा-बापां री कमर झुकी

टाबरपण में बूढ़ा होग्या अब हिवळास कियां आवै
सुपना मे ई' मौत ई दीसै जिनगी रास कियां आवै।

☐

कुण मांनै

□ फतहलाल गूजर

बात सांची है
पण कुण मांनै
जांण'र ई सब
आप-आपरी तांणै
समझदारी री सरटीफिकट
लटका'र फिरूं
कितरी ई दांण यूं जीवतो ई मरूं
ऊपर सूं आदर्स यो के मास्टर हो
बिना मतलब कोई नी गांठै
अफसर तो कांई
अंगूठा छाप पंच ई डांटै
आंधा कानून अर बोळा अफसर
पांगळी जनता अर गूंगा नोकर
थां बांच्यौ क नीं बांच्यो ?
बरस विकलांग है
औ छपियोड़ो
अखबारां रै पांनै पांनै
दफ्तर में फायलां फाटगी
रह्या-सह्या पानड़ा
उदायां चाटगी
बाबू बदळीज ग्या

साव री तरक्की व्हैगी
वकीलां रा घर बणग्या
म्हांरा खून-पसीना सूं
कमायोड़ा पइस्या सूं
थणा रा टावर भणग्या
कोरट रा कानून
नित नया
तीन बेरा, तेरा गया
सांचा रा झूंठा, अर झूंठा रा सांचा
गुण'र फंसग्यो घर आया पाछा
नतीजो निल
कोरट अर नया रा खरचा री
तीन हजार तेरह री बिल
घोर बणाय साहूकार नैं
चालान कीयो थांणै
न्याती अर गोती
जिल्द चढ्योड़ी पोथी
जाण्या हा आपणा
थै काटवा बैठा
ज्ञानी तिलचटा
ज्ञान चाटवा बैठा
बणारा प्रेमसागर रा
पाना फाटी ग्या
बांचै तो काई
अर नाचै तो कांई
आगणो बांको
राग नयो है
राई रो भाव रातयूं ई गयो है
मन नैं मारी बैठा हा
छांनै रा छानै
बात सांची, पण कुण मानै ।

मूँ बापड़ौ

□ मोड़ सिंघ बल्ला 'मृगेन्द्र'

मारी काँई औकात
के मूँ
आपनै केह सकूँ
के आप मौनै
ठग रिया हो
नस नस रो लोही
माकरा बरिणनै
बरिणक जी
पी र्‌या हो ।
आपरी कलम
खाता पाना पँ नी नै
मौंणी गरदन पँ
छुरी ज्यूँ चालै
मौंरी घरी-गिरस्थी रा
सगळा माथा
करज खाता रा मोळ्यौं में
फस्योड़ा लटक्योड़ा है
मूँ बापड़ो आसांमी
मां को पेट
आप सेठ
मूँ कोंई केह सकूँ आपनै

देस रौ करसौ हूं
हुकम रौ गुलांम
भराम्रो जठै हांमी
करूं—हां
कराम्रो तौ करूं—ना
भ्रापरी हां ना
मारी हां ना
भ्रापरा भला में
मारो भलौ
वोट पड़ै तौ
होट पड़ै तौ
पंचाती जाजम होवै
के तैसीलदार, हाकम होवै
मारै तौ मोटौ पेट
भ्राप सेठ
मूं काईं केह सकूं भ्रापनैं।



बादळी आज बरसती जा

□ पुखराज मुणोत

बादळी आज बरसती जा
खेतां री माटी रो कण कण
थासूं करै पुकार
बरस बादळी म्हांनै कर दै
माटी सूं रतनार

सोना रो संसार बणा
थूं आज सरसती जा
बादळी आज बरसती जा

गरज गरज नै अरे बावळी
क्यूं छाती नै फाडै
गरजै वा नी बरसै इणनै
ऊभी करसो ताड़ै

गरज तरज नै छोड़ बादळी
आज मुळकती जा
बादळी आज बरसती जा

सूख्या सरवर रूंख,
जानवर भूखा तिरखा पड़िया
लू-लपटां री झोर झपट मे
कितरा टावर गुड़िया

जीवण री थूं जोत जळा दे
आज हुळसती जा
बादळी आज बरसती जा।



दो कविताावां

☐ केसव "पथिक"

मौत

म्हूं
दिन मांय
भाठा फोड़ूं
अर,
रात मांय तारा गिणूं,
म्हनै
दिन री भूख
रात मांय ई सतावै,
पण—
आ पापी मौत
न तौ रात मांय आवै
न दिन मांय आवै ।

रिस्तौ

ईं
धरती मे
धन तौ घणौ
पण
पाणी री तोड़ौ है,
जणी सूं अठै
गरीबी अर अमीरी रौ
जुग-जुग सूं जोड़ो है ।

☐

माळी री हुंसीयारी

☐ गिरधारी सिंह राजावत

हिये रै
हरिया बाग में
गुणां री कंवळी कळियां
अर सोवणां पोधां रै सागै'ई
औगणां रा झाड़-झंखाड़ ई
अबस उगै ।
आ तो
माळी री हुंसियारी व्है'क
झाड़-झंखाड
अर घास-फूस नै
बधण री मौसर नी दे'र
पोधां नै
बड़ी जुगत सूं पाळ-पोस'र
मोटा करै ।
जीं सूं
बाग सोवणो'र
मन भावणो बण ज्यावै ।

☐

कारज

□ रमेस मयंक

आपां
सगळा साथीडा
अेक-दूजै रौ
उणियारौ देख'र
गुलाब री भांति खिला
मनड़ा री बातां करां
बातां ई बातां में
रात बीत जासी
परभात ई आसी
आओ
किणी भजन नै गाल्यां
आपां लारै-लारै चालां

फेर
दिन ऊगसी
चालणौ सूझसी
मारग तौ घणौ है
पण
हिम्मत कोनी हारणी है
ढबवा मे कोनी सार
चालण नै हुवौ त्यार
आओ

सूता मिनखां नै जगा ल्यां
आपां लारै–लारै चालां
चरकल्यां
चीं–चीं करती उड़ जावै
टाबर
मदरसा रै मारग मायै
निजरै आवै

मजूर
कारखाना में कांम संभाळै ला
करसांण खेत रूखाळै ला
जठै–जठै चालाला
नुंवां मारग बणैला
आपणी
हिम्मत रै पांण
देस आगै बधैला
आओ
नुवां–नुवां
सिरजण रा सपना सजाल्यां
आपां–लारै–लारै चालां

बीज
अकारथ कोनी जासी
मैणत री फसलां
तिरंगा रो मान बधासी
इण रा
जस न
जुगां–जुगां तांई
सगळा मिनख गासी
आओ
सुकारथ सूं
मिनखा जूण रो मोल चुकाल्यां
आपां लारै–लारै चालां

□

हिवड़ै रा गीत

□ दीपचन्द सुथार

टूटगी म्हारै
गीतां री कड़ियां
जी नै म्हैं/घणै हरख सूं
छींया–तावड़ै रै दासै मायँ
पल पल रै धागै सूं
पिरोई ही।
डब्बू ज्यूं फूल रिया है
हेत रांखणिया/पण म्हारी–
पगां हेठै सूं
खिसक जमी रयी है।
सुण रियो हूं—
च्यार दिनां री जिनगांणी है
फेर/क्यूं भूंडी बैवार करै ?
फूलां मांय मैक भरी है
मेंदी माय सिणगार भरियो है
कारण सगळा जांणै
मौको पड़ै/जद—
दूजां नै समझावै
खुद नी अपणावै।
बिचार आवै—
क्यूं धोरां मायँ म्हैल चुणावै ?

क्यूं बिरथा में थूक उछाळै ?
कीकर बातां सूं समभाऊं
मोल समैं री बतळाऊं।
मैणत कदैयी बिरथा नीं जावै
दिन दूणी—
सरसै/मैंकै
डांडी बण जावै
भूल्या-भटक्यां री
हिमत बंध जावै
म्हैं तो/हिवड़ै रा गीत सुणाऊं/
थे जीवण रो/सिणगार करो।



हेलौ

☐ सांवत राम 'कासणिया'

मैलां में रैवणिया वेली,
नीचै झांक रै ।
मखमलिया गिदरां रौ जीवण,
इण सूं माफ रै ।

तपै तावड़ै, रात्यूं न्हाटै,
खोद दडांनै, खाळा पाटै,
चुवै पसीनौ, रेतौ चाटै,
ढोरां जैड़ौ जीवण काटै,
राखै कांण रै

फाटा गाभा, गोडां ताणी,
नहीं मिळै पीवणनै पाणी,
टूटी टपरी सिरकी तांणी,
रुठ्यौ राम, राज नी जाणी,
दोरौ पेट रै

थे लूटौ हौ रात्यूं वांनै,
पण मैं थांनै मायत मांनै,
देवै अंगूठौ खाली पांनै,
तौई भरोसौ कोनी थांनै,
लेवौ साख रै

☐

बाळगीत

□ राम निरंजन 'ठिमाऊ'

वीर भोम रै बाळकां नै मायड़ करै पुकार
तड़कै रै भारत रा बेटां थे हो सिरजणहार

म्हांरी बडको राणाजी हो कदै न पीठ दिखाई
बांरी धमड्यो हड्यै घास री हंस-हंस रोटी खाई
बोलो बांरी जै जैकार
वीर भोम रै बाळकां नै मायड़ करै पुकार

वीर भोम री इज्जत खातर बळगी रजपूताण्यां
छाती चौड़ी करनै गावां बांरै जस री बाण्यां
वै ही वीर प्रसूता नार
वीर भोम रै बाळकां नै मायड़ करै पुकार

भामासा हो मिनख ळसीणो धनड़ो सेना में बंटवायो
जलमभोम री सेवा करनै पायो कितरो नांव रामायो
मां सब री सीलां रो सार
वीर-भोम रै बाळकां नै मायड़ करै पुकार
तड़कै रै भारत रा बेटां थे हो सिरजणहार

□

कागा

□ जगदीस चन्द्र सरमा

कागा बोलै कांव-कांव,
रोटी खावै गांव-गांव,
पांणी पीवै ठांव-ठांव ।

उडता जावै झूम-झूम,
ऊंचाई नै चूम-चूम,
पाछा आवै घूम-घूम ।

लाडू जीमै चूर-चूर,
गणता जावै बूर-बूर,
देखै सबनै घूर-घूर ।

□

मोती-मणिया ✓

□ महावीर जोसी

वौ ई सांचौ मानवी, वौ ई सांचौ मर्द ।
पर पीड़ा नैं बांटलै, हँस नैं झेलै दर्द ॥

सैंध लगावै रात में, दिन रा पैरादार ।
बै घर नै कुण सांमलै, मुखिया बंटाधार ॥

हंसा नैं वासौ नहीं, करै कागला सौर ।
के होसी वै देस री, यण्या रूखाळा चोर ॥

बोली बोलै ओपरी, पैर बिराणूं भेस ।
कदै न ऊंचौ हो सकै, वा मिनखां री देस ॥

करतब सूं मूं मोड़ कर, मांगै जो अधिकार ।
वां मिनखा रै देस री, कदै न व्है उद्धार ॥

चोळौ धार्‌यां सूं कदै, बणै न कागा हंस ।
दूध परोसौ नाग नैं, पण मारैगौ दंस ॥

हाकिम हुवै न बावळौ, चाकर नीं हुंसियार ।
जोबन कदै न सूंगलौ, जरठा रद सिणगार ॥

सांच कहौ झूठी कहौ, न्याव-नाड़ नैं मोस ।
तुलसी बाबौ कै गयौ, ठाडै को नीं दोस ॥

□

लेखकां रा ठिकाणा

अमोलकचंद जांगिड़	: प्र. अ., रा. उ. प्रा. वि., बिसाऊ, झुंझनू
अरजुन सिंघ सेखावत	: प्र. अ., रा. उ. प्रा. वि., फालना, पाली
अरजुन 'अरविंद'	: काली पल्टन रोड़, टोंक
अन्नाराम सुदामा	: मु. पो. उदयरामसर, बीकानेर
डूंगर आउवा	: मु. पो. आउवा, पाली
ईस्वर सिंघ कुळहरि	: प्र. अ., रा. मा. वि., ढांढण, सीकर
उदयवीर सरमा	: प्र. अ., रा. मा. वि., गांगियासर, झुंझनू
कमला सरमा	: प्रयाग कुटीर, नई लाइन, गंगासहर, बीकानेर
कल्याण सिंघ राजावत	: 53, सिल्प कॉलोनी झोटवाड़ा, जयपुर
कुंदन सिंघ 'सजल'	: अध्यापक, रा. मा. वि., रायपुर, पाटन, सीकर
कमर मेवाड़ी	: चांदपोळ, कांकरोली, उदयपुर
करणीदान बारहठ	: मु. पो. फेफाना, गंगानगर
कैलास मनहर	: स्वामी मौहल्लो, मनोहरपुर, जयपुर
केसव पथिक	: कचहरी, कपासन, चित्तौड़गढ़
गिरधारी सिंघ राजावत	: मु. पो. कोलिया, नागौर
चन्द्रदान चारण	: नवयुग ग्रन्थ कुटीर के पीछे, कोटगेट, बीकानेर
जनकराज पारीक	: प्रधानाध्यापक, ज्ञानज्योति उच्च माध्यमिक विद्यालय, श्री करनपुर, गंगानगर
जगदीस चंद्र सरमा	: प्र. अ., रा. मा. वि., पद्मता, उदयपुर
दीपचंद सुंथार	: रा. उ. प्रा. वि. न. 1, मेड़ता सिटी, नागौर
धनंजय वरमा	: नगरपालिका के सामने, बीकानेर
डॉ. नरसिंघ राजपुरोहित	: मु. पो. खांडप, बाड़मेर

पुखराज मुणोत	: रा. मा. वि., तखतगढ़, पाली
फतहलाल गूजर	: जाटगली, कांकरोली, उदयपुर
मगरचंद्र दवे	: रा. मा. वि., हरजी, जालोर
मोर्डसिंघ बल्ला 'भृगेन्द्र'	: रा. मा. वि., थड़ा वाया धमोतर, चित्तौड़गढ़
मुरलीधर सरमा 'विमल'	: प्रधा. रा. मा. वि., नरसिंहपुरा—माभूवास, गंगानगर
मूलदान देपावत	: सादुल उ. मा. वि., बीकानेर
महावीर जोसी	: रा. उ. प्रा. वि., मोही, झुंझनू
भगवतीलाल व्यास	: लोकमान्य तिलक टी. टी. कॉलेज, डबोक, उदयपुर
भीखालाल व्यास	: रा. उ. मा. वि., सिवाना, बाड़मेर
भागीरथसिंघ भाग्य	: मु. पो. बगड़, झुंझनू
दिलीप सिंघ चौहाण	: उ. मा. वि., साकरोदा-गिर्वा, उदयपुर
रमेस मयंक	: रा॰ मा. वि., बस्सी, चित्तौड़गढ़
रघुनन्दन त्रिवेदी	: शारीरिक शिक्षा महाविद्यालय, जोधपुर
रामनिवास सोनी	: काली जी का चौक, लाडणू, नागौर
रामेस्वरदयाल श्रीमाली	: प्र. अ., रा. मा. वि, जवाली, पाली
रामनिरंजन सरमा 'ठिमाऊ'	: साबू मा. वि, पिलाणी, झुंझनू
रूप सिंघ राठौड़	: मु़ो. पो. बास घासीराम, वाया—अलसीसर, झुंझनू
लक्ष्मण सिंघ रसवंत	: अध्यापक, रा. उ. प्रा. वि., मैरूंदा, नागौर
वासु आचार्य	: वाहेती चौक, बीकानेर
वल्लभ महाजन	: रा. शि. प्र. वि., नान्तामहल, कोटा
स्याम श्रीपत	. प्र. अ., रा. उ. मा. वि., समदड़ी, बाड़मेर
स्यामसुन्दर भारती	: अध्यापक, फतहसागर, जोधपुर
सवाई सिंघ सेखावत	: उ. मा. वि, उदयपुरवाटी, झुंझनू
सिवराज छंगाणी	: सादुल पुस्करणा हायर सैकण्डरी स्कूल, बीकानेर
सिव मृदुल	: अध्यापक, रा. उ. मा. वि., चित्तौड़गढ
सांवर दइया	: जेल रोड़, बीकानेर
सांवतराम कासणिया	: अध्यापक, रा. उ. प्रा. विद्यालय नं. 1, मेड़ता सिटी, नागौर
त्रिलोक गोयल	: अग्रसेन नगर, अजमेर

□

शिक्षक दिवस प्रकाशन

[सम्पूर्ण सूची]

1967 : 1. प्रस्तुति (कविता), 2. प्रस्थिति (कहानी), 3. परिक्षेप (विविधा), 4. सालिक ए गोहर (उर्दू), 5. दार की दावत (उर्दू)

1968 : 6. कैसे भूलूं (संस्मरण), 7. सन्निवेश (विविधा), 8. बागवां (उर्दू)

1969 : 9 प्रस्तुति-2 (कविता), 10. बिम्ब-बिम्ब चांदनी (गीत), 11. प्रस्थिति-2 (कहानी), 12. अमर चूनड़ी (राजस्थानी कहानी), 13. यदि गांधी शिक्षक होते (निबन्ध), 14. गांधी-दर्शन और शिक्षा 15. सन्निवेश-दो (विविधा)

1970 : 16. सूखा गांव (गीत), 17. खिड़की (कहानी), 18. कैसे भूलूं-दो (संस्मरण), 19. सन्निवेश-तीन (विविधा)

1971 : 20. प्रस्तुति–3 (कविता), 21. प्रस्थिति–3 (कहानी), 22. सन्निवेश–4 (विविधा)

1972 : 23. प्रस्तुति–4 (कविता), 24. प्रस्थिति–4 (कहानी), 25. सन्निवेश–5 (विविधा), 26. माळा (राजस्थानी)

1673 : 27 धूप के पंखेरू (कविता), 28. खिलखिलाता गुलमोहर (कहानी), 29. रेजगारी का रोजगार (एकांकी), 30. अस्तित्व की खोज (विविधा), 31. जूनी बेली : नुवीं बेली (राजस्थानी विविधा)

1974 : 32. रोशनी बाँट दो (कविता) सं० रामदेव आचार्य, 33. अपने आस-पास (कहानी), सं० मणि मधुकर, 34, रङ्ग रङ्ग बहुरङ्ग (एकांकी) सं० डॉ. गजानन्द. 35. आंधी अर आस्था व भगवान महावीर (दो राजस्थानी उपन्यास) सं. यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र' 36. बारतड़ी (राज. विविधा) सं. वेद व्यास

1975 : 37. अपने से बाहर अपने में (कविता) सं. मंगल सक्सेना, 38. एक और अन्तरिक्ष (कहानी) सं. डॉ. नवलकिशोर 39. संभाळ

(राजस्थानी कहानी) सं. विजयदान देथा, 40. स्वर्ग-भ्रष्ट (उपन्यास) ले. भगवती प्रसाद व्यास, सं. डॉ. रामदरश मिश्र, 41. विविधा सं. डॉ. राजेन्द्र शर्मा

1976 : 42. इस बार (कविता) सं. नन्द चतुर्वेदी, 43. संकल्प स्वरों के (कविता) सं. हरीश भादानी, 44. बरगद की छाया (कहानी) सं. डॉ. विश्वम्भरनाथ उपाध्याय 45. चेहरों के बीच (कहानी व नाटक) सं. योगेन्द्र किसलय, 46. माध्यम (विविधा) सं. विश्वनाथ सचदेव

1977 : 47. सृजन के आयाम (निबन्ध) सं. डॉ. देवी प्रसाद गुप्त, 48. क्यों (कहानी व लघु उपन्यास) सं. श्रवण कुमार, 49. चेते रा चितराम (राजस्थानी विविधा) सं. डॉ. नारायण सिंह भाटी 50. समय के संदर्भ (कविता) सं. जुगमन्दिर तायल, 51. रङ्ग वितान (नाटक) सं. सुधा राजहंस।

1978 : 52. अंधेरे के नाम सन्धि पत्र नहीं (कहानी संकलन) सं. हिमांशु जोशी, 53. लखाण (राजस्थानी विविधा) सं. रावत सारस्वत, 54. रचेगा संगीत (कविता संकलन) सं. नन्दकिशोर आचार्य, 55: दो गाँव (उपन्यास) ले. मुकारब खान आजाद, सं. डॉ. आदर्श सक्सेना, 56. अभिव्यक्ति की तलाश (निबन्ध) सं. डॉ. रामगोपाल गोयल

1979 : 57. एक कदम आगे (कहानी संकलन) सं. ममता कालिया, 58. लगभग जीवन (कविता संकलन) सं. लीलाधर जगूड़ी, 59. जीवन यात्रा का कोलाज/सं. ? (हिन्दी विविधा) सं. डॉ. जगदीश जोशी, 60. कोरणी कलम री (राजस्थानी विविधा) सं. अन्नाराम सुदामा, 61. यह किताब बच्चों की (बाल साहित्य) सं. डॉ. हरिकृष्ण देवसरे

1980 : 62. पानी की लकीर (कविता संकलन) सं. अमृता प्रीतम, 63. प्रयास (कहानी संकलन) स. शिवानी, 64. मंजूषा (हिन्दी विविधा) सं. डॉ. राकेश जैन, 65. अंतस रा आखर (राजस्थानी विविधा) सं. डॉ. नृसिंह राजपुरोहित, 66. खिलते रहें गुलाब (बाल साहित्य) सं. जयप्रकाश भारती

1981 : 67. अपने से परे (कहानी संकलन) सं. मन्नू भंडारी, 68 अंधेरों का हिसाब (कविता संकलन) सं. सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 69. वन्देमातरम् (हिन्दी विविधा) सं. डॉ. विवेकी राय, 70. एक दुनिया बच्चों की (बाल साहित्य) स. पुष्पा भारती, 71. सिरजण (राजस्थानी विविधा) सं. तेज सिंह जोधा।

□

शिक्षक दिवस प्रकाशन 1981

समीक्षकों की नजर में

राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत राज्य के सृजनशील शिक्षक साहित्यकारों की चार कृतियां 1980 वर्ष की सार्थक उपलब्धियां है। —नवभारत टाइम्स

संग्रह में सभी कविताएँ, कविता की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, यद्यपि कुछ कविताओं को पढ़कर कविता जैसा कुछ नहीं लगता किन्तु कलात्मक प्रयास को नकारा भी नहीं जा सकता। —नवभारत टाइम्स

'प्रयास' कहानी लेखकों का उत्तम प्रयास है तथा शिवानी का सम्पादन वक्तव्य नव लेखकों को गुरु-प्रेरणा का प्रयास है। —नवभारत टाइम्स

'मंजूषा' में संकलित अधिकांश रचनाएँ एक ओर शिक्षकों की जीवन-पीड़ा तथा घुटन प्रस्तुत करती है तो दूसरी ओर सामाजिक मूल्यों में उनकी निष्ठा और शिक्षार्थियों के गिरते स्तर के प्रति चिन्ता तथा जागरूक उत्तर-दायित्व उभारती हैं। —नवभारत टाइम्स

संकलन में एक तरफ तो ऐसी रचनाएं हैं जिनसे बच्चों को चरित्र निर्माण की प्रेरणा मिलेगी तो दूसरी तरफ ऐसी रचनाएँ भी है जिनसे उनका स्वस्थ मनोरंजन भी होगा। —समाज कल्याण, दिल्ली

रचनाओं की विषय वस्तु परम्परागत होते हुए भी बालकों के मानसिक विकास मे सहायक हो सकती है। सभी रचनाओं में विशेषकर कहानियों मे अनुभव की उष्णता विद्यमान है। संकलन निश्चय ही नन्हे-मुन्ने पाठकों के लिए उपयोगी है। —समाज कल्याण, दिल्ली

संग्रह की अधिकतर कविताएँ जिन्दगी के फोटो हैं। इनमे किसी प्रकार के छद्म आदर्श की प्रस्तावना नही है। —समाज कल्याण, दिल्ली

इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ एक ऐसे आदमी की छटपटाहट को व्यक्त करने का प्रयास है जो निरन्तर अपरिचित एवं अमानवीय होते जा रहे परिवेश से पूर्णतया संपृक्त है। इस संपृक्ति के कारण ही राजस्थान के ये सृजनशील अध्यापक अपने आसपास के परिचित सन्दर्भ को सर्जनात्मक आयाम प्रदान कर पाये हैं। —समाज कल्याण, दिल्ली

जिस तरह संग्रह की रचनाओं की संवेदना जिन्दगी से निष्पन्न है, उसी तरह इनकी संरचना भी। कविताओं की संरचना में कोई जटिलता नही है। लगभग सभी कविताओं में एक अनगढ़ता मौजूद है। यह अनगढ़ता ही इन कविताओं को विशिष्ट बनाती है। —समाज कल्याण, दिल्ली

राजस्थान के शिक्षा विभाग ने विगत कुछ वर्षों से शिक्षक दिवस पर राज्य के शिक्षक साहित्यकारों की रचनाएँ पुस्तक रूप में छापने की एक स्वस्थ परम्परा प्रारम्भ की है। इस योजना से अनेक सृजनशील साहित्यकारों को साहित्यक क्षेत्र में अपना स्थान बनाने के लिए भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला है। —दैनिक हिन्दुस्तान

'पानी की लकीर' कुल मिला कर एक अच्छा संकलन है और उसमें सम्मिलित कवियों की क्षमता का परिचायक है। —दैनिक हिन्दुस्तान

'अंतस रा आखर' में आरम्भ से अन्त तक राजस्थानी की ही छटा मिलती है। —दैनिक हिन्दुस्तान

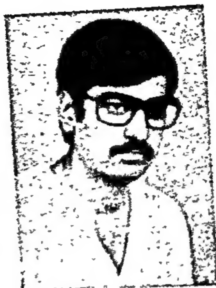
आज भी समाज मे अध्यापक से ही आदर्श जीवन की अपेक्षा की जाती है, अतः इन कहानियों में से अधिकांश का स्वर आदर्श और सुधारवादी रहा है तो इसे अस्वाभाविक नही माना जा सकता। —प्रकर, दिस., 80

जयप्रकाश भारती ने अध्यापकों की इस अनमोल भेंट को सम्पादित कर बच्चों के सामने प्रस्तुत किया है, सम्पादक का कहना है कि जब-जब बच्चे इसे पढ़ेंगे मनोरंजन होने के साथ उनको कहीं कोई रोशनी की लकीर भी दिखाई देगी। —दैनिक हिन्दुस्तान

सरकारी महकमों ने इतना निराश किया है कि जब हम राजस्थान के शिक्षा विभाग के प्रकाशनो पर नजर डालते हैं तो एक बारगी आश्चर्य में ही डूब जाते है। —दैनिक राजस्थान पत्रिका

संकलन की अधिकांश कविताएँ जैसा कि कहा—जीवन की विसंगतियों, दैनिक जीवन की आपाधापी और उधेड़बुनो को व्यक्त करती हैं। इनमें ज्यादातर प्रलाप लगती हैं, कविता कम। —इतवारी पत्रिका





तेजसिंघ जोधा

७ जुलाई १९५० को नागौर जिले के रुण-झोसर गांव में जन्म।

समकालीन राजस्थानी कविता के महत्वपूर्ण कवि। सन् ७१ में 'राजस्थानी-एक' का सम्पादन, जो राजस्थानी कविता की मूल धारा में परिवर्तन का कारण बनी।

हिन्दी की लब्ध प्रतिष्ठ साहित्यिक पत्रिकाओं यथा-'आलोचना' और 'लहर' आदि में इनकी राजस्थानी कविताओं का प्रकाशन और चर्चा।

'परम्परा' शोध पत्रिका के काव्य एवं काव्य-आलोचना विशेषांक 'हेमाणी' का सम्पादन। 'दीठ' एवं 'जागतीजोत' के सम्पादक भी रहे। वर्तमान में 'माणक' मासिक का संपादन, जो प्रसार संख्या की दृष्टि से राजस्थानी की पहली बड़ी पत्रिका है।

रोजगार के सिलसिले में प्राथमिक विद्यालय के अध्यापन, फौज की नौकरी और 'राजस्थान पत्रिका' और 'दैनिक जलते दीप' के सम्पादकीय विभागों में भटक लेने के बाद पिछले कुछ वर्षों से मोहता महाविद्यालय सादुलपुर (चूरू) में हिन्दी के प्राध्यापक हैं।